

NOT FOR SALE

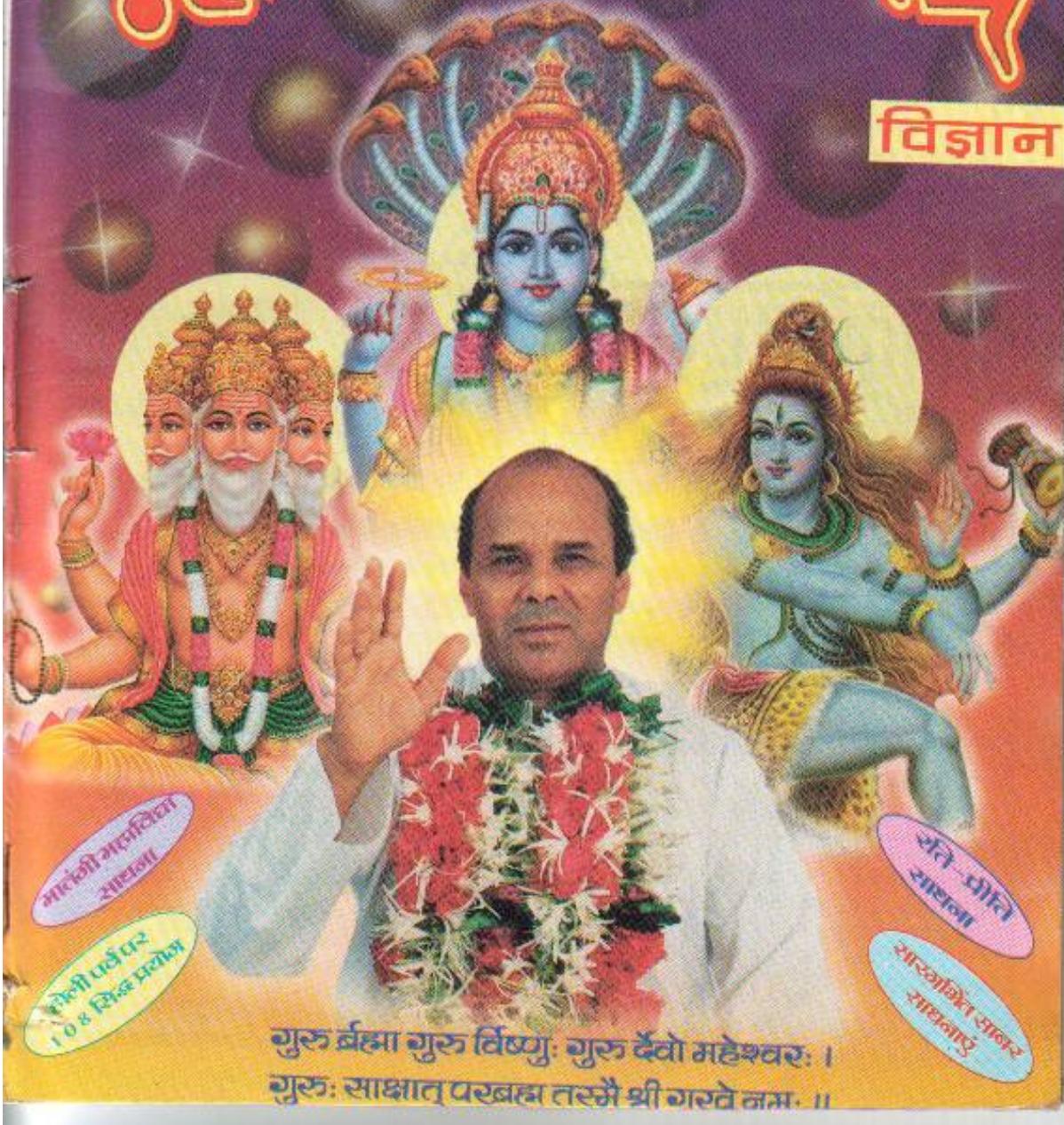
गुरु शिष्य देवता वाले चक्रवर्ति सिद्धि विद्येषांक

लेनदेनी : 99

मूल्य : 18/-

गुरु-तंत्र-यज्ञ

विज्ञान





COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server!]

ज्ञान-प्रकाश



सदगुरुदेव

संभवामि युगे युगे

सदगुरुदेवः तपोनिष्ठ

सदगुरुदेवः मुनि

सदगुरुदेवः आपि

सदगुरुदेवः दाशनिक

सदगुरुदेवः योगी

सदगुरुदेवः कविशेष्ठ

सदगुरुदेवः युग्मनिर्माता

सदगुरुदेवः उपवेष्टा

गुरुदेवः मानवान्वितचित्तक

सदगुरुदेवः नीतिकार

वर्ष 19 अंक 1
जनवरी 1999 पृष्ठ 84



स्त्रीम

पारिभाषिक शब्दावलि 20

साधक साक्षी 47

पाठकों के पत्र 50

याराडिभिर ने कहा 61

मैं समय हूँ 62

नश्वरों की वाणी 70

इस मास विल्ली 79

शिखा धारण की परम्परा 21

एक दृष्टि में 84

साधना

छोली पर्व पर १०८ प्रयोग 7

मातंगी साधना 18

स्वास्थ्य सरिता 27

नवरात्रि 30

महागणपति साधना 35

साधना सफलता 45

रति-प्रीति साधना 54

सावर साधनाएं 72

Unique Holi Rituals 64

Hanuman Sadhana 65

Bheirav Sadhana 66

Totality bestower 67

Perfect Health 68

दीक्षा

त्रिनेत्र जागरण दीक्षा 24

तथ्य

Telepathy 69

उपन्यासिका

कथणी बदणी जोग न होई 58

रिपोर्टज

अविरल यात्रा जारी है 81



स्त्रपक्ष

सिद्धाश्रम, 308 गोलट एक्सेप्ट, गोलामुख दिल्ली-110034, फोन: 011-7182248, टेली फैक्स: 011-7196700
ग्रन्ति-संवेदन, डॉ श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कल्याणी, जोधपुर-342001 (राज.) फोन: 0291-432200, टेली फैक्स: 0291-432011
WWW address - <http://mantrauntryantivigyan.indianet.org> E-mail address - myv21@hotmail.com

प्रधान सम्पादक

श्री जनर्दन किशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक
एव संसोचक

श्री पौलाश्चाच्छ्रद्ध श्रीमाली

सम्पादक मण्डल

डॉ. श्वेतामर द्वामी, डॉ. रम देवदेव शास्त्री, श्री गुरु मेषक श्रीवाल्लभ, श्री वसन्त पाटिल, डॉ. लक्ष्मी जाधव, श्री प्रबाल जाधव, श्री वर्षभद्र जाधव, श्री गोपन जेन्स, श्री एन. ब्रह्म, श्री एश

वित्तीय सलाहकार

श्री अरविंद श्रीमाली

वर्किंग सेक्शन

श्रीमाली कलक नाइप
डॉ. वर्षभद्र जाधव,
डॉ. विद्यापति रामार

प्रकाशक एवं संचालित

श्री रंगताश्चाच्छ्रद्ध श्रीमाली

दाता

श्री राम गिन्द्रा

10/2, DLF, इलंस्ट्रेयल

एम्प्ला, गोलीनगर, नई दिल्ली

ने मन्त्रित तथा

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

साइकोट कलामी, जोधपुर

से प्रकाशित।

मूल्य (भारत में)

एक प्रति : 18/-

याविक : 195/-

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मन्त्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्बन्धक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुर्तर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्म समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य जिल याप, तो उसे संबोध नहीं। पत्रिका के लेखक पुनर्जन्म प्राण्यु-संत होते हैं। अतः उनके चरों के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना समझ नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में जाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, गुरुक या सम्बन्धक जिम्मेदार होगे। किसी भी सम्बन्धक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के जाद-विवाद में जोश्युपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी आच कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से संगवाने पर हम अपनी तरफ से ज्ञानांगिक और सही सामग्री अधिक मंत्र भेजते हैं, पर जिन भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अधिक प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेदारी नहीं होगी। पाठक अपने विवास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से भेजवें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान तें १५/- है, पर यदि किसी लिंग एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अक अपकी जात हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अधिक दो वर्ष, तीन वर्ष या चार्चार्यांश सदस्यता को पूर्ण रूप से, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होती। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेदारी साधक की स्वयं की होती तथा साधक कोई भी ऐसी उपस्थिति, जप या गत्र योग न करे, जो वैज्ञानिक सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार भास छोड़ते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की याग पर इस अंक में पत्रिका के लिखते लेखों का भी योग का तो समावेश किया जाये है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सके। साधक या लेखक अपने ज्ञानांगिक अनुभवों के आधार पर जो गत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हो) बताते हैं, वे ही वे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यक्ति है। आवरण पूर्ण पर या अन्दर जो भी जोटी उक्तिवित होते हैं, इस सम्बन्ध में सही विम्मेदारी जोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अधिक आर्टिस्ट की होती। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त पास कर सके, मह तो धीरी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण अधिक और विवास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होती। गुरुदेव या पत्रिका परिचार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी बहन नहीं करें।

प्रार्थना

ब्रह्मा देवपति: शिव: कालपति: लिखित: विभाजनं पति:
प्राणो देहपति: सदाश्रमपति: श्री लच्छिदानन्द वः ।
अम्भेधः सरितां पति: जलपति विष्णुश्रव सहस्रः पति:
सर्वे ते पतवः जयं च वर्णं कुर्वन्तु त्वा मङ्गलम् ॥

ब्रह्मा जी सभी देवों के अधिपति हैं, समस्त प्राणियों के स्वामी हैं, गुरुदेव निखिल समस्त ऐश्वर्यों के अधिपति हैं, प्राण शरीर के प्रेरक अधिपति हैं। भगवान् सच्चिदानन्द जी समस्त सिद्धाश्रम के स्वामी हैं, सामर सभी नदियों के जल के स्वामी हैं, भगवान् विष्णु लक्ष्मी के पति हैं। इस नव वर्ष के पावन वेळा में ये सभी अधिपति हम शिष्यों और साधकों के मंगल के लिए अभिप्रेरित हों।

मंत्र शक्ति

भगवान् राम के पूर्वज सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के जीवन का एक प्रमाण है—एक बार लंका निरेश रावण, राजा हरिश्चन्द्र की तपश वयों से प्रभावित होकर उनके दर्शन करने आया।

राजमहल के द्वार पर पहुंचकर रावण ने द्वारपाल को अपने आने का प्रयोग जताया और कहा—“मैंने राजा हरिश्चन्द्र की तपस्या और मंत्र साधना के विषय में कपी प्रशंसा सुनी है, मैं उनसे कुछ सीखने की कामना लेकर आया हूँ।”

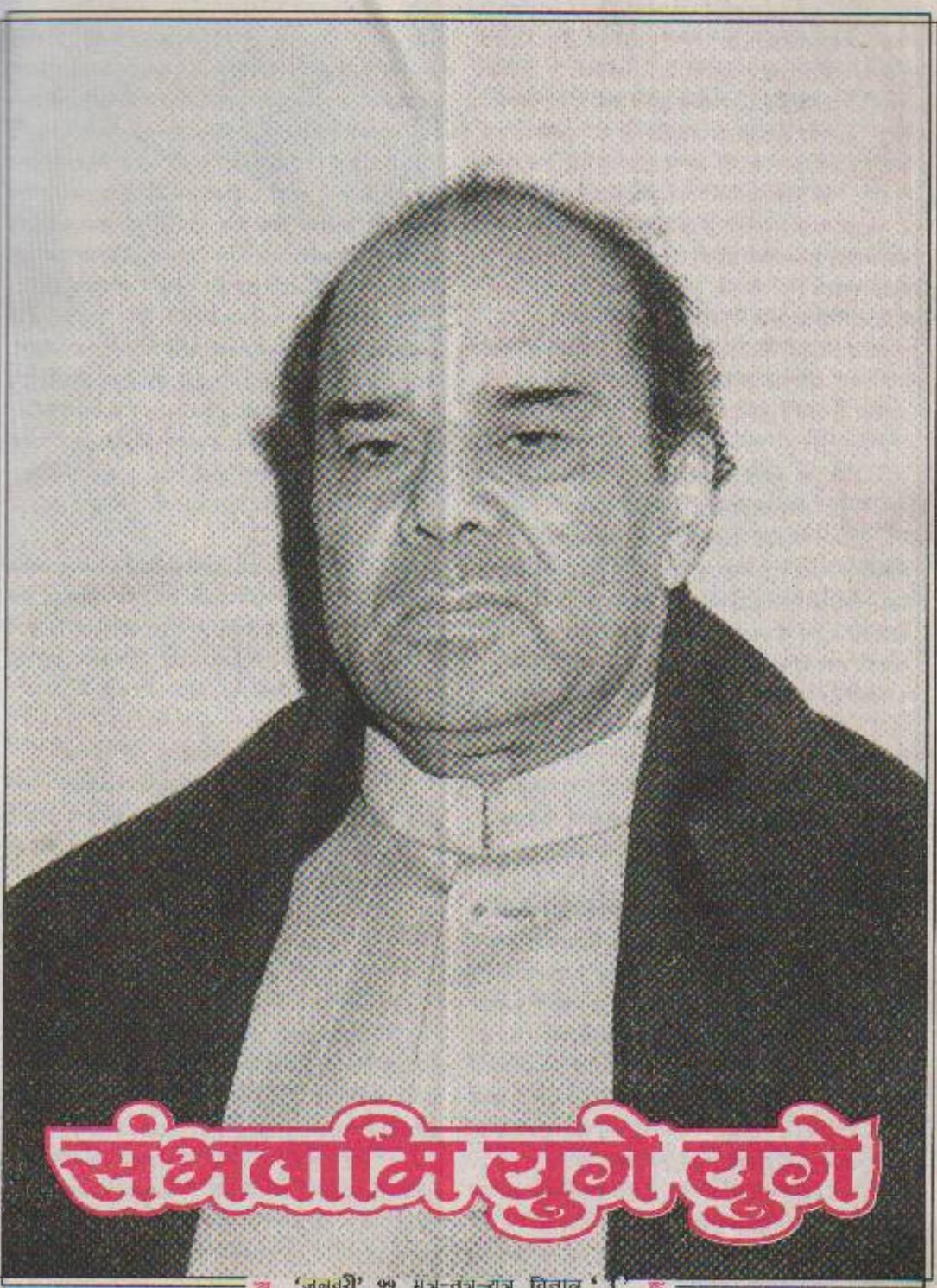
द्वारपाल ने रावण को उत्तर दिया—“हे भद्र पुरुष! आप निश्चय ही हमारे राजा से मिल सकेंगे, किन्तु अभी प्रतीक्षा करनी होगी, क्योंकि अभी वे अपनी साधना कक्ष में साधना, उपासना आदि कर रहे हैं।”

कुछ समय बाद द्वारपाल रावण को साथ लेकर राजा के पास गया। रावण ने द्वारपाल प्रणाम किया और राजा हरिश्चन्द्र से अपने मन की आत कही, कि वह उनसे साधनात्मक ज्ञान लाभ हेतु आया है।

बातालिप चल ही रहा था, कि एक अंक राजा हरिश्चन्द्र का हाथ तेजी से एक और धूमा। पास रखे एक पात्र से उन्होंने अक्षत के कुछ दाने उठाए और होठों से कुछ अस्पष्ट सा बुद्धुवाले हुए बड़ी तीव्रता से एक दिशा में फेंक दिए। रावण एक दम से हतप्रभ रह गया, उसने पूछा—“राजा! यह आपको क्या हो गया था?”

राजा हरिश्चन्द्र बोले—“वहाँ से १४० योजन दूर पूर्व दिशा में एक हिंसक व्याघ्र ने एक गाय पर हमला कर दिया था, और अब वह गाय सुरक्षित है।” रावण को बड़ा अचरण हुआ, वह चिना क्षण गवाए इस बात को स्वयं जाकर देख लेना चाहता था। चलते चलते रावण जब उस स्थल तक पहुंचा, तो देखा कि रक्तरंजित एक व्याघ्र भूमि पर पड़ा है। व्याघ्र की अक्षत के बीच दाने तीर की भाँति लगे थे, जिससे वह धायन हुआ था। राजा हरिश्चन्द्र की मंत्र शक्ति का प्रमाण रावण के सामने था।

आज भी मंत्रों में वही शक्ति है, वही तेजस्विता है, जो राजा हरिश्चन्द्र के समय थी। आवश्यकता है, तो गन: शक्ति को एकदम करने की, पूर्ण दृढ़ता के साथ मंत्रों का हृदय से उच्चारण करने की।



सीधावामि युग्मी युग्मी

‘जनरेश’ ११ मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान ‘३’

ज्ञानियों के लिए सदैव यह विषय
विवरणीय रहा है, कि परमात्मा का स्वरूप
क्या है? परमात्मा हश्या रूप हैं या अद्द्यु
रूप हैं, पुरुष स्वरूप हैं या स्त्री स्वरूप
हैं, सशरीर हैं या अशरीर हैं? आवाजात्मक
हैं अथवा दैहिक स्पर्श हैं? द्वैत है या उद्वैत?
परमात्मा ब्रह्म स्वरूप हैं अथवा ब्रह्म एवं माया दो
स्वरूप हैं? इन सभी प्रश्नों पर ज्ञानियों-ग्रन्थियों के
उपरोक्त-उपरोक्त विचार के अनुसार व्याख्या
की, लेकिन सबने एक स्वर से यह
स्वीकार किया, कि इस विशद ब्रह्माण्डीय
सत्ता का धारक परम पिता परमात्मा
अवश्य है। वर्णी आदि शक्ति स्वरूप हैं।

ज

न-मायना विश्वास, अज्ञा के आधार पर बनती है, और यह विश्वास और अज्ञा इन्हीं अद्वृत होती है, कि कोई विद्वान् परमात्मा के सम्बन्ध में कोई बात अलग रूप से बढ़ने को तीयार भी हो जाए, तो जन मानस मानसों के लिए तीयार नहीं होता है। विचारक अपनी बात कहने रहे, लेकिन कठिन-कठिन जन मायना के हवय में जो बात बैठ जाती है, वही तो ईश्वरीय सत्ता का स्पष्ट परिचायक है। जहाँ मायना और विश्वास के आधार पर कार्य सम्पन्न होते हैं, वहाँ तर्क का स्थान ही कहाँ है?

निश्चय ही परमात्मा एक है, विशेष प्रयोजन के लिए उन्हें विशेष स्वरूप से पदार्पण करना ही पड़ता है। इमरे शास्त्रों में परमात्मा के, भगवान के दशावतारों का विवरण आया है, ये अवतार हैं – कृष्णवतार, मस्याक्तार, वाराण अवतार, वामवावतार, नृसिंहवतार, परशुराम अवतार, गमवतार, कृष्णवतार, बुद्धवतार। अवतारों की यह श्रृंखला निरंतर चलती ही जा रही है।

पुरुष सूक्त में परमात्मा के दिव्य स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा है – ‘सद्यशीर्षा पुरुषः सहस्राद्धा: सहस्रपादः’ अर्थात् ‘सहस्रस्तिक एवं सहस्र पैर से युक्त हैं। वह तो ब्रह्म का सहस्र स्वरूप है, पूर्ण स्वरूप है और काल खण्ड की गति के अनुसार प्रभु को विभिन्न रूपों में इस धरा पर आना ही पड़ता है। यह प्रकटीकरण पूर्ण रूप से भी हो सकता है, खण्ड रूप से भी हो सकता है। निश्चय ही कठिन-मुनि, देवी-देवता परम सत्ता के खण्ड स्वरूप ही तो है। ये स्वरूप हैं – वैश्य, बन्धुवा, मद्याविद्याप, इन्द्र, वरुण, अग्नि, कुबेर, लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती।

अवतारों के इसी क्रम की आगे बढ़ती श्रृंखला की एक कथा का विवरण ‘कल्पकुशण’ के लोक के १ से २२ तक आया है। नैमित्याराय में समस्त अवतारों की कथा लोला, वातानाप

महर्षि सूक्त और शीतकावि व्यष्टियों में चल रही थी और कठिनश्रृंखला जी से शीतक मुनि प्रका कहते हैं, कि बुद्धवतार के बाद कलियुग नब पराक्रांत में होगा, तब भगवान किम्ब शक्ति स्वरूप में जन्म लेगे? उसका विवरण देते हुए सुत जी बोले – ‘ऐ मुमीश्वरो! ब्रह्माजी ने अपनी पाठ से धोर मनोन पातक को उत्पन्न किया, जिसका नाम रखा गया – ‘अधर्म’। अधर्म जब बड़ा हुआ, तब उसका मिथ्या से विवाह कर दिया गया। दोनों के संयोग से मद्याकोधी पुत्र ‘वस्म’ तथा ‘माया’ नाम की कन्या जन्मी। फिर दण्ड व माया के संयोग से ‘लोध’ नामक पुत्र और ‘विकृति’ नामक कन्या हुई। दोनों ने ‘लोध’ को जन्म दिया। लोध में हिंसा व धन दोनों के संयोग से काली देवताले महामयंकर ‘कलि’ का जन्म हुआ। कलान, चंचल, मस्यानक, दुर्विद्युत शरीर, धूत, मद्य, स्वर्ण और वेश्या में निवास करने वाले इस कलि की बाहिन व भंतानों के स्वरूप में दुरुक्ति, मस्यानक, मृत्यु, निरय, यातना का जन्म हुआ, जिसके हजारों अधर्मों पुत्र भी आधि-व्याधि, ब्रुहापा, दुख, शोक, पतन, गोग-विलास आदि में निवास कर यज्ञ, तप, दान, स्वाध्याय, उपासना आदि का नाश करने लगे।’

और कलियुग में ऐसा ही होने लगा – लोध, दण्ड, माया, मलिनता, व्याधि, भोग, पतन इत्यादि स्थितियां उत्पन्न हुई और धीरे धीरे इन स्थितियों ने संसार को इतना ढक दिया, कि आम आदमी ईश्वरीय सत्ता पर संप्रदेश करने लगा। सम्भवतया महाभारत के समय कृष्ण ने इस स्थिति को समझा और कहा –

वदा वदा हि वर्मन्य उत्तराक्षिर्भवति भरत,
 अस्त्वृत्यान्मध्यमध्यस्य तदात्मानं लुभाम्यहम् ।

अर्थात् जब जब संसार में अनोन्ति, अत्याचार, अधर्म पूर्ण रूप से व्याप्त हो जाया, तब ईश्वरीय सत्ता किसी न किसी रूप में प्रादुर्भाव लेगी। इसी मायना को विचार में रखते हुए रामचरित मानस में गोस्वामी तुनसीदासनी ने लिखा है –

जब जब होहि वर्म की हावि,
 वाठहि असुर महा जमिमानी ।
 तव-तव प्रभु धरि मलुक सरीरा,
 हरहि क प्रतिवि सज्जन धीरा ॥

प्रयोक युग और काल में परमात्मा की अविच्छिन्नता किसी युग धर्म के अनुसार अवतारित होता है। जब ब्रह्म युग में परिवार की मर्यादाओं की हानि हो रही थी, यज्ञ, तप मलिन हो रहे थे, तब परमात्मा ने भगवान श्रीराम के नृप में अवतरण किया।

और अवतरण भी कैसा, जिसमें प्रभु ने राज गृह में जन्म लेकर मध्यादा स्थापित करने के लिए पूरे आर्यवंत का ध्वमण किया। वगवास रूप में यह उग्रगत तो उनका एक लीला स्वरूप था, मूल मायना यह थी, कि पूरे आर्यवंत को अपोष्या से लेका तक एक

किया जा
 ज्योति प्र
 जाति भेद
 उनके पि
 अपनी प
 मानस मे
 प्रवृत्तियो
 नहीं, उस
 नड़-मूल
 श्रीराम ने
 विश्वास

वे सद्दरा
 मनुष्य व
 का प्रती
 सम्भव
 को मिट
 सब कुछ
 अपासन
 निराला
 श्रीकृष्ण



किया जाए। हर स्थान पर पुनः वेद वाणी का गुजन हो और पुनः यज्ञोति प्रज्वलित हो। अपने इस स्वरूप में श्रीराम ने कहाँ भी कोई नाति भेद, रथान भेद नहीं किया, बानर मील आदिवासी चमों तो उनके प्रिय वे . . . और उनका पूरा विवरण राष्ट्र विचरण ही था। अपनी पली के साथ पद यात्रा कर एक भाक्तात्मक एहसास जन मानस में उत्पन्न किया, फिर उन्होंने नवको साथ में लेकर आसुरी प्रवृत्तियों के प्रतीक रावण का सम्पूर्ण नाश किया। केवल रावण ही नहीं, उसके साथ जो भी आसुरीय प्रवृत्तियों के, व्यक्ति, वे उन सबका नड़ मूल से हो नाश कर पूरे भूमण्डल पर शुल्क धर्म स्थापित किया। श्रीराम ने भी विश्वामित्र से अस्व-श्वरूप विद्या सीखी और ब्रह्मार्थ विशिष्ट से जान प्राप्त किया और वह भी गृहकुल में रहकर।

प्रभु जब भी इस प्रकार की क्रिया करते हैं, तो वे संसार को वे संदेश देना चाहते हैं, कि जीवन का क्या आदर्श होना चाहिए और मनुष्य जन्म लेकर अपने जीवन में परगात्मा की अविच्छिन्न शक्ति का प्रतीक बनकर संसार में सदकार्य कर सकता है। असम्भव को सम्भाव कर सकता है, एक एक कर अपने मार्ग में आने वाली बाधाओं को मिटा सकता है। उसके जीवन में भी प्रेम, करुणा, मोट, गृहस्थ, सब कुछ होगा, इन सब स्थितियों के साथ वह सात्विकता की ओर अप्रभाव हो सकता है, पूर्णत्व की ओर अप्रभाव हो सकता है।

श्रीकृष्ण का जीवन चूंगात और जीवन स्वरूप अत्यंत ही निराला रहा है। जड़ों राम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए, वहीं भगवान श्रीकृष्ण योगेश्वर कहलाए। श्रीकृष्ण ने भी मां के गर्भ से जन्म

लिया। एक बालक की तरह अपनी बाल लीलाएं सम्पन्न कीं, देवकी के गर्भ से जन्म लेकर धशोदा के घर उनका बाल्यकाल व्यतीत हुआ। अपने बाल्यकाल में निरंतर लीलाएं करते हुए आसुरी प्रवृत्तियों का नाश करने के लिए प्रवृत्त रहना — कौलिया मर्दन, पृथग वध इत्यादि कार्य तो उन्होंने बाल्यकाल में ही सम्पन्न कर दिए और जहाँ द्वापर युग में लोगों के जीवन में शुश्कता और द्रेष की अधिकता हो गई थी, वहाँ उन्होंने भ्रेम को एक नई अभिव्यक्ति दी।

उनकी राशनीला, नियमें पूरा भू-मण्डल कृष्णमय होकर उनके साथ नुत्य संगीत कर रहा था, यह भ्रेम की सर्वोत्कृष्ट अभिव्यक्ति ही तो थी, लेकिन इसके साथ ही साथ हवारों योजन दूर सान्दीपन आश्रम में जाकर शिशा भी गृहण की।

जीवतारी पुरुष को क्या आवश्यकता थी, कि वे शिक्षा आदि ग्रहण करते, जीवन के सामान्य नियमों का पालन करते?

लेकिन उन्हें समाज के नामने आदर्श स्थापित करना था और उनके इस प्रेम स्वरूप के साथ ही श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व का नीतिज्ञ स्वरूप, युनिमार्ता स्वरूप भी प्रकट होता है — महाभारत के युद्ध के समय। ठीक वही स्थिति जो राम के समय थी, जब रावण रूपी आसुरी प्रवृत्तियाँ बढ़ गई थीं और किर द्वापर में कोरव रूपी आसुरी प्रवृत्तियाँ बढ़ गई थीं और पूरे भू-मण्डल पर अधिकार कर लिया था। तब श्रीकृष्ण ने अपने विशद् स्वरूप के माध्यम से अर्जुन को जान वस्त्वव्यापा, कि सर्वज्ञ बल महत्वर्था नहीं है। महत्वार्थ है धर्म की स्थापना, जाह इसके लिए जीवन का बलिदान ही क्यों न करना पड़े। यदि सत्य और धर्म तुम्हारे साथ हैं, तो आसुरी प्रवृत्तियाँ कमी भी विजय प्राप्त नहीं कर सकती हैं। महाभारत का युद्ध इतिहास परिवर्तन का युद्ध था। पुनः आर्यवर्त में धर्म की चेतना जागृत हुई, सामाजिक जीवन को नष्ट कर देने वाली — विलासिता, जुआ, मर्यादा, नारी अपमान की प्रवृत्तियाँ नष्ट हुईं।

पूरे जीवन कृष्ण ने किसी भी प्रकार की सामाजिक आचार संहिता का उल्लंघन नहीं किया, गृहस्थ जीवन भी धारण किया और जब देखा कि गोकुल, मथुरा, हरिहनपुर में मेरा कार्य पूर्ण हो गया है, तो सुदूर द्वारका में राज्य स्थापन कर वहाँ धर्म स्थापना की, निससे अखण्ड आर्यवर्त का निर्माण हो सके।

काल का चक्र निरन्तर चलता ही रहा और वही आर्यवर्त छोटे-छोटे राज्यों में बढ़ गया। प्रथेक राज्य में देख, हजारों प्रकार के धर्म सिद्धान्त, हजारों प्रकार की पूजाएं, नास्तिकता-आस्तिकता का संधर्ष — तब प्रभु ने बुद्ध के रूप में जन्म लिया और उनकी जीवन यात्रा सिद्धार्थ रूप में जन्म लेकर बोधीसत्य प्राप्त कर अन्ततः तथागत स्वरूप प्राप्त कर लेने तक की एक विशद् यात्रा थी, जिसमें उन्होंने दीन सिद्धान्त जनमानस में स्थापित किए — बुद्ध शरण गच्छार्थी, संघ शरण गच्छार्थी, धर्म शरण गच्छार्थी

अर्थात् खण्ड-खण्डमें बटकर रहने की बजाय संघ बनाना आवश्यक है, संघ बनाकर धर्म पालन आवश्यक है और धर्म का पालन शुद्ध सान्तिक बुद्धि, जो कि बुद्धत्व उत्पन्न करती है, उसके द्वारा ही सम्भव है। उस समय की मांग जनमानस में त्याग, करुणा, प्रेम, साहचर्य उत्पन्न करना था और अनिय परिवार में जन्म लेकर बुद्ध ने शिक्षा के बाहर धारण कर शिक्षा पात्र हाथ में लेकर पूरे आर्यवर्त में और उससे भी बाहर सुपूर्ण देखो (शार्दूलेण, चौन, जापान, सुमाता, इण्डोनेशिया, नेपाल) में धर्म स्थापना की। उन्होंने स्वयं कभी कोई सम्पाद पद धारण नहीं किया, लेकिन सारे सम्पाद उनके ही हो अधीन थे। वे तो जन-जन के सम्पाद थे और वहीं ही, अपने चेतना द्वारा, अपने इश्वरीय स्वरूप का विस्तार इस प्रकार किया, कि पुनः एकता, साहचर्य और धर्म स्थापित हो गया।

इन तीनों महायताओं में पूर्ण

शिक्षा नजर आती है, ऐसा इमलिए हुआ कि युग धर्म के अनुसार भगवान अलग-अलग स्वरूपों में प्रकट होते हैं। जहाँ जिस प्रकार के कार्य की आवश्यकता होती है, भगवान युगपुरुष के रूप में, युग-दूष्टा के रूप में अवतारित होते हैं और जिस उद्देश्य के लिए अवतरण लेते हैं, उस कार्य को पूरा करने के पश्चात् पुनः बहमण्ड में अपने विशद स्वरूप में स्थित हो जाते हैं।

बुद्ध अपने माता-पिता व भित्रों के लिए सिद्धार्थ थे, तो वहीं शिष्यों के लिए बुद्ध थे, तथागत थे। स्वरूप एक ही था, लेकिन अलग-अलग व्यक्तियों ने उनके स्वरूप को अलग-अलग रूप में देखा।

श्रीकृष्ण मां धर्षोदा के लिए कन्दैया थे, तो गोपियों के लिए प्रियतम थे और अनुन के लिए योगेश्वर थे।

यह तो दृष्टा पर निर्भर करता है, कि वह अपने आग्रहों को किस रूप में देखता है। और इन अवतारों का क्रम बहला हुआ इस युग में पुनः सम्भव हुआ 'ॐ नारायण वत् श्रीमानी जी' के स्वयं। फूल्य सद्गुरुदेव अपने पश्चिम के लिए पिता, प्राई आदि स्वरूप में गिय बने, तो वहीं उनके शिष्यों ने उहूं सदगुरुदेव, प्रभु, इष्ट, मंत्रज, तंत्रज, ज्योतिषविद तथा अन्य रूपों में आत्मसात किया है।

ब्रह्मवैचर्त पुराण में व्यास मुनि ने स्पष्ट लिखा है, कि भगवान के अवतारी स्वरूप में वह गुण अवश्य ही परिवर्तित होंगे और इन्हीं दस गुणों के आधार पर संसार उन्हें पहियानेगा।

तपोनिषद्: मृतिश्च भालवातो लितक्षणः ।

ऋग्यथर्त्वमावलः बोली चोपविदां वरः ॥

१० 'जनवरी' 99 मन्त्र-तंत्र-चंड विज्ञान '६'

वर्तमिकः कवित्तेष्ठः उपर्देष्टा ज्ञातिकृत्यथ ।

वुजकत्तिमहता च लितिवः लितिवेश्वरः ॥

एभिर्दशज्ञयः प्रीतः सत्वद्वर्मपरायणः ।

अवतारं वृद्धोत्तेव जग्यते गुरुणा गुरुः ॥

सद्गुरुदेवपूज्यमाद हौं नारायणहृत श्रीमानी जी, संन्यासी स्वरूप निखिलेश्वरानन्द जी के जीवन का विवेचन आज यहि महाविद्या व्यास द्वारा उक्त दस गुणों के आधार पर किया जाए, तो निश्चय ही सद्गुरुदेव अवतारी पुरुष है, जिन्होंने अपने सांसारिक जीवन का प्रारम्भ एक सुप्रसंगुरुता आधार परिवार में किया—सुदूर पिछड़े गेमिस्तानी गंग था। जब इनका जन्म हुआ, तो माता-पिता को प्रेरणा हुई, कि इस नेत्रचो बालक का नाम रखा जाए—‘नारायण’।

यह नारायण नाम धारण करना और उस नारायण तत्व का निरन्तर विस्तार केवल युगपुरुष नारायण दत श्रीमानी के लिए ही स्थापित था, जिन्होंने अपने अल्पकालीन भीतिक जीवन में शिक्षा कर उच्चतम अस्याम ग्रहण कर पाया। एवं ही आर्यत् लाक्ष्मे की उपाधि प्राप्त की।

बाल्यकाल से ही ज्योतिष, मन्त्र-तंत्र, यज्ञ, आयुर्वेद का ज्ञान धारण किया और यह ज्ञान धारण कर भगवान राम, श्रीकृष्ण की धार्ति पूरे आर्यवर्त का भ्रमण किया और उसे चेतना दी—धर्म शुद्धरूप से आज भी स्थापित हो सकता है, अतः युग धर्म के मनुष्यार्थ धर्म को धारण करो। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में अपने कार्यों के द्वारा आलोचना-प्रत्यालोचना और कंटकाकीर्ण मार्ग को पार करते हुए स्वयं के व्यक्तित्व द्वारा प्रभु के स्वरूप को स्पष्ट किया।

महाविद्या के द्वारा बताए गए लक्षणों के अनुसार यहि पूज्यश्री के जीवन कार्यों तथा उनके व्यक्तित्व का भवलोकन किया जाए, तो यह स्वतः स्पष्ट हो जाता है, कि पूज्यपाद गुरुदेव ओह साधारण व्यक्ति नहीं, पूर्ण अवतारी पुरुष है।

आज हमारे प्रभु सद्गुरुदेव ब्रह्मण्ड में विराट सत्ता स्वरूप विराजमान है, उन्होंने अपने जीवन में लीलापुरुष के रूप में जो क्रियाएं सम्पन्न कीं, वे क्रियाएं ही तो उनके परम स्वरूप को स्पष्ट करती हैं। एक-एक स्वरूप पर एक-एक ग्रन्थ लिखा जा सकता है, एक-एक महाकाव्य लिखा जा सकता है।

लीलापुरुष के व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम लिखा है, पर यह

इस युग का सौभाग्य है, कि बद्गुरुदेव वसुन्धरा पर भानव रूप में सक्तरित हुए। और इनना ही निवेदन कर सकते हैं—

गुरुः ब्रह्मा युक्तिष्ठुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षत् परम्यरूपस्त्वम् श्री गुरवे तपः ॥

जो अ

E

प्रे
ओ वस्तु
ऐसा अव
उच्च को
होलिका
मुहूर्ट होत
जप कर
आपेक्षा स
एक माट
दों कहें
हो जाता
आचार्य
पूर्व ही स
होली क
इसी क्रम



जो अति तीक्ष्ण तीव्र एवं शीघ्रता से लाभ प्रदान करते हैं।

होली पर्व पर 108

तांत्रोक्त प्रयोग

पूरे वर्ष भर में होलिका वहन का मुहूर्त और वस्तुतः होलिका वहन की पूरी रक्षि एक ऐसा अवसर होता है, जिसकी प्रतीक्षा उच्च से उच्च कोटि के तांत्रिकों को भी रहती है। होलिका की इस रक्षि तंत्र का एक ऐसा सिद्ध मुहूर्त होता है, जिसमें यदि एक माला भी गंत्र जप कर लिया जाता है, तो वह अन्य दिनों की अपेक्षा सहस्र गुण प्रभावकारी होता है। अर्थात् एक माला हजार माला के बराबर होती है, या यों कहें कि माला एक माला में ही एक लक्ष जप हो जाता है। यही कारण है, कि तंत्र के सिद्ध आचार्य भी अपनी चल रही साधनाएं होली के पूर्व ही समाप्त कर लेते हैं, जिससे कि वे उस होली की रक्षि का पूर्ण सुधुप्रयोग कर सकें। इसी क्रम में प्रस्तुत हैं ये तांत्रोक्त प्रयोग ...

हो ली के अवसर पर किए जाने वाले ये प्रयोग रूपयं पूज्यपाद सद्गुरुदेव ने एक अवसर पर प्रदान किए थे, जिनके तीव्र व अचूक प्रभाव को अनेकों साधकों ने अनुभव किया है और कार्यालय में अपने अनुभवों को प्रेषित भी किया है। साधकों के लाभार्थ प्रस्तुत हैं ये प्रयोग, जिनमें विशेष तंत्रिमित्र प्राणप्रतिष्ठित सामग्रियों का होना अनिवार्य है। होली की रात्रि का मुहूर्त और सामग्रियों की विशेष प्राण ऊर्जा के समाध साधक की साधना काल में आ रही बुटियां गौण हो जाती हैं, एवं सफलता संबंधित रहती है।

प्रबुद्ध साधक ऐसे अवसर को कभी अपने हाथ से जाने नहीं देते। आपकी विविध मनोकामनाओं की पूर्ति व जीवन में आए अहवनों के निवारण हेतु ये प्रयोग आपको आश्चर्यचकित कर देने के लिए पर्याप्त हैं—



जो समाज से दबता है उसे समाज दबाता है, यदि तुम्हारे हृदय में तेज, तड़फ और गिलने की चाहत है, तो तुम्हें ब्रह्म से साधात्मक तक की मंजिल पार करने से कोई नहीं गोक सकता, होनी चाहिये तुम्हारे पैरों में ताकत, आंखों में चिंगारी और हृदय में बनावत।

— पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ नारायण वत्त श्रीमाली जी

आकर्षित धन प्राप्ति

सामग्री - ब्रह्मा

1. होली की रात में दस बजे किसी बानोट पर अपने साथने पांच छोटी-छोटी काले तिल की ढेयियां बनायें। बीच वाली ढेही पर क्रत्वा को स्थापित करें और उसे देखते हुए निम्न मंत्र का 10 मिनट तक जप करें—

// उ॒ँ हौं श्री धनं देहि उ॒ँ फट् //

Om Hreem Shreem Dhanam Om Phat

ऐसा करने पर आकर्षित धन की प्राप्ति संभव होती है। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् सभी सामग्री को शिव मंदिर में चढ़ा दें।

2. यदि व्यापार नहीं बढ़ रहा हो, तो क्रत्वा को दुकान में स्थापित कर देने से वह अच्छा चलने लगता है। यदि आपके व्यापार पर कोई तंत्र प्रयोग हो, तो वह भी समाप्त हो जाता है और घर में व्यापार के तंत्र दोष भी समाप्त हो जाते हैं।

3. घर की तिजोरी में क्रत्वा स्थापित करने पर, यदि कोई बन्ध प्रयोग किया या कराया गया होता है, तो वह भी समाप्त हो जाता है।

4. निम्न मंत्र को किसी कागज अथवा भोजपत्र पर कुरुम गे लिखकर एक क्रत्वा को उस पर स्थापित करें और इसी मंत्र का 21 बार जप करें, फिर उसी कागज में कत्वा को लपेट कर अगले दिन जल में प्रवाहित करें। इससे धन प्राप्ति का योग बनता है।

मंत्र

// उ॒ँ हौं वि॒भव लक्ष्मी आ॒ज्ञा॒त्वा॒ श्री॑ उ॒ँ नमः //

Om Hreem Vibhav Lakshmee Anguchha Shreem Om Namah
साधना सामग्री - 60/-

साधना में पूर्णसिद्धि साकलता प्राप्ति

साधना सामग्री - श्रिया

यदि साधक साधना कर रहा हो और उसे साधना में शिद्धि नहीं मिल रही हो अथवा एक ही साधना को कई बार करने पर भी साकलता नहीं मिल रही हो, तो यह प्रयोग अवश्य ही करें—

6. यदि आप दस महाविद्याओं में से किसी एक महाविद्या की साधना कर रहे हैं या करना चाहते हैं, तो अपने पूजा स्थान पर ताम्रपात्र में श्रिया को स्थापित कर उसके साथने अपनी कामना



तुग सामाजिक वज्रगाऊं की बात करते हो, तो सगाज कब किसी को बढ़ने देता है, कौउं कंग द्वृष्ट कब धाहेना कि उत्तमें से कोई हुंस हो जाये, कीचड़ की गंदनी कब चाहेनी कि उसमें कोई कमल खिल जाये। गुलामी में सांस लेने वाले कब चाहेने कि कोई ताजी हुवा की सुवास से मुनाफित, जस्त और आजदित हो जाये।

— पूज्यपाद सद्गुरु नदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

सुव्यवस्थित क्रम से किया जवा कार्य साफल होता ही है, और क्रम बदल तरीके से कार्य करने की प्रभति ही तंत्र है। यही भावना है होली के 108 तांगों प्रत्येको जो देवे के पीछे।

का उच्चारण कर 35 बार साधना साफल्य मंत्र को बोले, फिर श्रिया को होलिकानि में डाल दें।

6. यदि आपसरा या यदियां साधना करना चाहते हैं, तो श्रिया पर गुलाब का डब लगा दें, फिर 51 बार साधना साफल्य मंत्र का उच्चारण कर श्रिया को होलिकानि में अर्पित कर दें।

7. यदि आप छनुमान साधना कर रहे हैं और उसमें साकलता नहीं मिल रही है तो श्रिया को रिंदूर से रंग दें, फिर इसके साथने 35 बार साधना साफल्य मंत्र का उच्चारण करें। बाद में श्रिया को अभि में समर्पित कर दें।

मंत्र

// उ॒ँ हौं श्री गतौं साधना साफल्यं उ॒ँ नमः //

Om Hreem Shreem Glaum Sudhamas Saafalyam Om Namah
साधना सामग्री पैकेट — 40/-

सम्मोहन प्राप्ति हेतु

सामग्री - ब्रीडा

सम्मोहन बहुत आवश्यक है प्रत्येक मनुष्य के लिए, क्योंकि यह एक ऐसी सुगम प्रचति है, जिसके माध्यम से दुर्घट अतीत होते कार्य भी सहजता से सम्पन्न किये जा सकते हैं। सम्मोहन का प्रयोग अपने आप पर अथवा किसी दूसरे व्यक्ति पर भी किया जा सकता है। इन प्रयोगों को यदि होलिका दहन की रात्रि को सम्पन्न किया जाए, तो सम्मोहन में साकलता मिलती है—

8. ब्रीडा को गले में धारण करने से मनवाहे प्रेमी या प्रेमिका की प्राप्ति होती है।

9. ब्रीडा को स्थापित कर निम्न मंत्र का 21 बार जप कर अभिन में डाल दें, तो प्रेमी स्वतः ही उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। हर क्षण उमग, जोश और आनन्द उसके चेहरे से झनकता दुआ दिखाई देता है।

11. ब्रीडा को होली के दिन कागज पर रख कर शत्रु का नाम लिखकर उसे लाल कपड़े में स्थापित कर निम्न मंत्र का 51

बार उच्चारण
निश्चित करन
मंत्र

12
सौन्दर्यवान्
दीव निः

सामग्री —

‘स्नबक’ क
करें और पि
रोग धीरे-
मंत्र

बार मंत्र ज
बड़ी-बड़ी

रोगी के ग
मंत्र का 10

हो, तो वह
धारण कर

उसे काले
से इस ग

शीघ्र।
सामग्री

बार उच्चारण कर उसे नदी में विसर्जित कर दिया जाए वह व्यक्ति निश्चित रूप से समोहित होता है।

मंत्र

// उँ हीं सम वश्यं कुरु कुरु फट् //

Om Hreem Mam Vashyam Kuru Kuru Phat

साधना सामग्री पैकेट - 40/-

12. होली के दिन बीड़ा को धारण करने से व्यक्तित्व पूर्ण नौनवर्धन, आकर्षक होता है।

रोग निवारण के लिए

सामग्री - स्तबक

13. यदि किसी की आंखों को रोशनी मंद पड़ गई हो, तो 'स्तबक' को स्थापित कर उसके समक्ष 21 बार निम्न मंत्र का जप करें और फिर उसे रोगी को गले में पहना दें। इसके धारण करने से रोग धीरे धीरे समाप्त हो जायेगा।

मंत्र

// उँ हुलु हुलु हुलु हुलु उँ है फट् //

Om Chulu Chulu Hule Hule Om Phat

14. स्तबक को होली पर्व पर स्थापित कर, निम्न 108 बार मंत्र जप कर 15 दिन बाद रोगी के ऊपर से घुमाकर केक देने से बड़ी-बड़ी बीमारियों को दूर किया जा सकता है।

15. यदि किसी को प्रायः सिर वर्द बना रहता हो, तो उस रोगी के गले में स्तबक को होली की रात्रि को पङ्गिना कर निम्न मंत्र का 101 बार जप करने से उसकी रिश्ति में सुधार आता है।

16. यदि किसी भी व्यक्ति की कमर में पुराना दर्द रहता हो, तो वह भी स्तबक को स्थापित कर 61 बार मंत्र जप कर इसे धारण करने से दर्द ठीक हो जाता है।

17. घर में यदि छोटे बच्चे को डराने स्वर्ज आते हों, तो उसे काले थागे में स्तबक को पिरोकर धारण करने से उसके मन में इस भय को हमेशा के लिये दूर किया जा सकता है।

साधना सामग्री पैकेट - 51/-

शीघ्र विवाह के लिए

सामग्री - भद्रबाहु

18. भद्रबाहु को किसी दूध से भरे पात्र में रखें तथा निम्न

में तुम्हें बताता हूं कि गुरु क्या है। गुरु तो एक सुनंध कन ज्ञानका है, जिसे पूरे शरीर में रचा पचा सकते हैं और अपूर्व गाढ़कता से उन्नत हो सकते हैं, परस्ती से ऊपर उठकर जीवन के वास्तविक इवरूप को पहचान सकते हैं।

— पूज्यपाद सद्गुरु देव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी



मंत्र का उच्चारण करते हुए निसका विवाह सम्पन्न होना है, उसके सिर पर पांच बार धुमाये। बाद में द्वैलिकानि की परिकल्पा कर भद्रबाहु को अग्नि में समर्पित कर दें अथवा जल में प्रवाहित करें।

// उँ हां हां हूं कार्ला सिद्धिं उँ है नमः //

Om Hreem Hreem Hreem Kaaryaa Siddhim Om Namah

19. भद्रबाहु लोकर उपरोक्त मंत्र का ।। बार उच्चारण कर अपने घर से दूर उत्तर दिशा की ओर अपनी मनोकामना बोलकर पेक दें।

20. यदि किसी के विवाह में बार-बार आइचने पैदा हो रही हो, तो भद्रबाहु को धारण करने पर उन बाधाओं से मुक्ति मिल जाती है। होली की रात्रि को धारण करने से विवाह शीघ्र होता है।

साधना सामग्री पैकेट - 50/-

गृहस्थ सुख प्राप्ति के लिए

सामग्री - खड़बिड़ा

21. पूर्ण गृहस्थ सुख के लिए होली की रात में खड़बिड़ा को अपने घर के पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

22. यदि पत्नी को अपने अनुकूल बनाना हो, तो खड़बिड़ा को गले में धारण करें।

23. यदि पति-पत्नी के बिचारों में पूर्ण तादान्त्रय बनाये रखना चाहते हों, तो उसके लिए भी यह लाभदायक सिद्ध होती है। इसको स्थापित कर उसका पूजन कर इसके समझ निम्न मंत्र का जप ।। बार करें और फिर इसे द्वैलिकानि में ढाल दें, निससे कि दोनों के लिए लाभदायक सिद्ध होती है।

// उँ हीं सम समीहित साधव्य साधव्य स्वाहा //

Om Hreem Mam Sameehitam Saadhyam Saadhyam Swaha

24. पुरुषों के लिए खड़बिड़ा साक्षात् कामदेव का उपहार है। इसको धारण करने से रग-रग में यौवन लहराने लगता है।

25. खड़बिड़ा के सामने ।। बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करें, फिर उस पर दूध और खीर मिलाकर चढ़ाये। यह किंवा पांच बार करें। दूध-खीर किसी जानवर को खिला दें और खड़बिड़ा को नदी में विसर्जित करें। ऐसा करने से गृह-कलह समाप्त होकर पूर्ण गृहस्थ सुख की प्राप्ति होती है।

26. खड़बिड़ा को किसी थाली में गुलाब की पंखुड़ियों पर स्थापित करें। पति और पत्नी दोनों ही उपरोक्त मंत्र का 21 बार

किसी कारणवश यदि साधक हन प्रयोगों
को होली के दिन सम्पदा न कर सके, तो भी होली से
चैत्र नवरात्रि प्रारम्भ तक के समय को 'चैतन्य कल'
माना गया है। यदि साधक 'हौं' बीज का 101 बार
उच्चारण कर प्रयोग प्रारम्भ करे, तो होली से नवरात्रि
के बीच भी हन प्रयोगों को सम्पदा कर सकता है।

उच्चारण करे, फिर पहले से जाकर रखी दो पृष्ठ माला और मैं
एक-एक पृष्ठ माला एक दूसरे को पहना दें। खड़बिड़ा को जल में
विचर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 50/-

व्यापार वृद्धि हेतु

सामग्री - नागर्जुन

27. किसी व्यापारिक उन्नति के लिए नागर्जुन को होली
की शर्त में दुकान या फैक्टरी में गाड़ देना चाहिए। इससे आपके
व्यापार में वृद्धि होगी और धन का आगमन होगा।

28. ऐश्वर्य प्राप्ति एवं आव में वृद्धि के लिए नागर्जुन को
धर के पूजा स्थान में होली की रात को स्थापित करना हो चाहिए।

29. व्यापार और नौकरी में पदोन्नति के लिए भी नागर्जुन
को धारण कर लेना चाहिए।

30. नागर्जुन को अपने सिर से स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र
का 11 बार उच्चारण करे। गुटिका को अपनी जेब में रखकर
व्यापार से सम्बन्धित मुद्रामय के निर्णय के लिए जायें, फिरता
आपके पक्ष में ही होगा। मार्ग में या किसी नदी, नहर या एकान्त
स्थल पर गुटिका डाल दें।

// उ॒ हौं श्रीं एं व्यापार वर्दुर्जं स्तुदुर्ये उ॑ //

Om Hreem Shreem Ayeem Vyapar Vardhanam Siddhaye Om

31. अपनी दुकान के किसी एकांत कोने में बैठकर नागर्जुन
को अपने हाथ में लेकर, उसको अपलक देखते हुए उपरोक्त मंत्र
का 51 बार उच्चारण करे। तिजोरी में पांच दिन तक गुटिका को
रखें और अगले दिन नदी में प्रवाहित कर दें। निरन्तर वृद्धि के
लिए मंत्र को नियमित रूप से नित्य 11 बार जपना आवश्यक है।

साधना सामग्री पैकेट - 60/-

श्रीघ भाग्योदय के लिए

सामग्री - रुबम

32. होलिका दहन से तीन दिन पूर्व रुबम को अपने पूजा
कक्ष में स्थापित करें तथा नित्य प्रातः 6 से 8 बजे के बीच 51 बार
निम्न मंत्र का उच्चारण करें तथा एक सफेद कूल छढ़ा दें, होलिका
दहन वाले दिन प्रातः इसी प्रकार मंत्र जप करें तथा शाम को
होलिकामिन में रुबम को पृष्ठों के साथ डाल दें। आपके पूरे परिवार
के दुर्मिय की समाप्ति होगी तथा भाग्योदय होगा।

// उ॒ हौं हौं भाग्योदयं लिलिक्षसेश्वराय नमः //

Om Hreem Bhaggyodnyam Nikhilashwaray Namah

33. रुबम के सामने तेल का दीपक जलाकर 21 बार
उपरोक्त मंत्र जप करे। फिर दीपक एवं रुबम को होलिकामिन में
डाल दें। मान्य की उत्तरि में उत्पन्न अवरोध समाप्त होता है।

साधना सामग्री पैकेट - 40/-

पूर्ण यीवन प्राप्ति हेतु

सामग्री - आनुपूर्वी

34. आजकल कुछ ऐसे युवा देखने को मिलते हैं, जिनका
होलिका तो पूर्ण गिरिया दिखता है, लेकिन शक्ति के नाम पर मुक्तिका
ने 5 प्रतिशत शक्ति ही उनके अपर होती है। पूर्ण यीवन शक्ति युक्त
बनने के लिए आनुपूर्वी को बायें हाथ की मुट्ठी में बंद कर लें तथा
दोनों पंजों पर रख दें हो कर निम्न मंत्र का 21 बार मंत्र जप करें तथा
आनुपूर्वी से पूरे शरीर को स्पर्श करें। तत्पश्नात् जिस नगह होलिका
दहन हुआ हो, उस स्थान पर आनुपूर्वी को रख आएं।

मंत्र

// उ॒ हौं नमः पुष्पधन्वन्य यौवनं देहि उ॑ //

Om Namah Pushpdhanvany Youvanam Dehi Om

35. कुछ ऐसी भी युवतियां देखने में आई हैं, जिनकी अवस्था
20-30 वर्ष से अधिक नहीं हुई है, लेकिन उनमें यीवन का कोई लक्षण
दृष्टिगत नहीं होता है। उन्हें चाहिए कि आनुपूर्वी को अपने दाढ़िने पैर
के नीचे दबा कर स्फूर्तिये के समय खड़ी हो जाये तथा अपने दोनों
हाथ आकाश की ओर उठाकर उपरोक्त मंत्र का 31 बार उच्चारण
करें, तत्पश्नात् आनुपूर्वी को तोड़ कर जल में प्रवाहित कर दें। उनके
मन से होनता दूर हो जाए तथा पूर्ण यीवन प्राप्ति संभव होगी।

साधना सामग्री पैकेट - 60/-

तुम जानना चाहते हो, नुस किसे कहते हैं तो सूनो नुस एक प्रेम है एक
श्रहा पूर्ण रूप से लम्भ होने की क्रिया है, एक सामर्पण है जो तुम देखकर दीर्घ
सकते हो नुस पूर्ण रूप से उन्मुक्त और तिसर्जित हो जाने की क्रिया है, पूरी
तरह से दूबकर एकाकर हो जाने की क्रिया है।

- पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी

लोकटी में
सामग्री - सा.
36. वे
लेट कर जलने
में पूर्ण सामूहिक
प्रक्रिया अस्ति
31 बार में जो चू
में अर्पित कर दे

0.
37. 1.
मंत्र जपने हुए प
सुबह नदी में वि
है, तो बाधा क

सीन्दर्य।
सामग्री - नि

38.
होने के कारण
विचित्रा को उ
उसके सूप, ल

39.
सीन्दर्य दब ग
है। चहरे पर।

40.
है। इसके प्रम
41.

को धारण क
सम्मोहन आ

माता-पि
सामग्री - २

42.

लौकटी में सर्वोच्चता प्रमोशन प्राप्ति

सामग्री - सामुद्धा

36. होली से पांच दिन पहले सामुद्धा को लाल कपड़े में लपेट कर अपने आफिस में स्थापित करें। नित्य कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व सामुद्धा का दर्शन कर ॥ बार मंत्रोच्चारण करें। जिस दिन जायकर आफिस बन्द हो, उसे घर लेकर आ जायें और घर में लाकर 51 बार मंत्रोच्चारण करें। होली की रात्रि में सामुद्धा को होलिकामि ने अपींत कर दें। शीघ्र प्रमोशन की स्थिति निर्भित होगी।

// उ३५ आं हों ईर्ष्यै उ३५ फट //

Om Aam Hraan Kshveem Om Phat

37. होलिका दहन से एक रात पूर्व सामुद्धा का उपरोक्त मंत्र जपते हुए पंचोपचार द्वारा संक्षिप्त पूजन करें। तथा दूसरे दिन सुबह नदी में विसर्जित कर दें। किन्हीं कारणों से प्रमोशन रुक रहा है, तो बाधा का निवारण होकर प्रमोशन हो जायेगा।

साधना सामग्री पैकेट - 80/-

सीन्दर्य प्राप्ति के लिए

सामग्री - विचित्रा

38. सीन्दर्य का अभाव होने के कारण या उसमें कटाव न होने के कारण कई बार स्थियां खिल रहती हैं। होली की रात्रि में विचित्रा को धारण करने से उसके सीन्दर्य में वृद्धि होती है तथा उसके रूप, लावण्य में निखार आ जाता है।

39. चेहरे पर सूखापन व छाइयां, मूहांसे आदि के कारण सीन्दर्य दब गया हो, तो भी विचित्रा को धारण कर लेना ही पर्याप्त है। चेहरे पर एक अलग ही आकर्षण आ जाता है।

40. विचित्रा शरीर के सीन्दर्य-वर्द्धन का अचूक उपाय है। इसके प्रभाव से न्याया सुन्दर व आकर्षक बन जाती है।

41. यदि कोई स्त्री अथवा पुरुष होली की रात विचित्रा को धारण कर लेता है, तो उसके व्यक्तित्व में एक अजीब सा सम्मोहन आ जाता है।

साधना सामग्री पैकेट - 50/-

माता-पिता की सेवा लाभ

सामग्री - तारक बीज

42. यह प्रयोग स्वर्गवासी पितरों के लिए किया जाना



एक गकार होले की छिया ही तुम्हें ईश्वर तक पहुंचा सकती है,
तुम्हारे अहं को नलाकर उस विश्वाता में निमन्जन कर सकती है, जिसे तुम
बछा, परबछा और सर्वोच्च सता कहते हो।

- पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ जारायण दत्त श्रीमाली जी

है। एक तारक बीज को लेकर उसे गुलाब पूष्य पर स्थापित करें। अपने स्वर्गवासी पिता का नाम से संबूध लेकर उनके माला व नदगति की प्रार्थना करें। तत्पर वान् निम्न मंत्र का 20 मिनट तक जप करें। इस प्रयोग से उन्हें मुक्ति मिलती है, और आपका विशेष आशीर्वाद मिलता है, जिसके अभाव में कई बार सफलता आपके हाथ लगते लगते रह जाती है।

// उ३५ नमो नारायणाय शिवचक्रे मालिनी स्वाहा //

Om Namo Narayanyay Shivachakre Maalinee Swaha

43. अपनी माँ की आत्मा की शान्ति के लिए एक तारक बीज प्राप्त कर लें और एक कपड़े पर कंकुम से उपरोक्त मंत्र अंकित कर लें। फिर तारक बीज को उसके ऊपर स्थापित कर उपरोक्त मंत्र का 35 मिनट तक मंत्र जप करें। प्रयोग समाप्ति के बाद उसी कपड़े में तारक बीज को लपेट कर होलिकामि में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 50/-

मनोवाििष्ठत वामना पूर्णि

सामग्री - बजरंग विश्रां

44. होली के दिन एक पात्र में तेल लें, और बजरंग विश्रां को तेल में डुबाकर अपने सामने रखें और 15 मिनट तक निम्न मंत्र का उच्चारण करें, फिर उसी तेल से हनुमान मंदिर में दीपक जलायें और बजरंग विश्रां को वहाँ चढ़ा कर मन ही मन अपनी कामना बोलें। यह प्रयोग छोटी-छोटी इच्छाओं को शीघ्र पूरा करता है।

// उ३५ ऐं सर्वतोर्मदाय निश्चित्वेश्वराय मनोवािित देहि

उ३५ फट //

Om Ayeem Sarvatobhadray Nikhileshwary

Manovaanchhitam Dehi Om Phat

45. बजरंग विश्रां के सामने पांच थोके तथा पांच तेल के दीपक जलाएं। और मन ही मन 35 मिनट तक उपरोक्त मंत्र का जप करें। फिर बजरंग विश्रां को नदी अथवा तालाब में विसर्जित कर अपनी मनोकामना बोलें। इस प्रयोग से असन्मय सी लगने वाली कामना के भी पूर्ण होने की संभावना बनती है।

साधना सामग्री पैकेट - 60/-

शनु बाधा निवारण

सामग्री - सक

46. होली की रात्रि में सक को एक पानी से गर्ने लोटे में

जौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

की

वार्षिक सदस्यता आपको छढ़ावक यंत्र

Special
English
Supplement
each month

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिनन्दन अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं को हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पार्वेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार।

यदि यह कहा जाए, कि आज के आधुनिक नगरों में मनुष्य जो जीवन भी रहा है, उसमें भय और उत्तर पूरी तरह से प्रभावी है, तो कोई गलत नहीं होगा। जीवन जितना निश्चिल नहीं हुआ है, उससे भी कहीं अधिक जीवन असुरक्षित हो जाया है। किस समय क्या घट जाए कुछ कठुन नहीं जा सकता। आरी ट्रैफिक वाली सड़कों पर जाते यात्री हों, कारखानों की बड़ी-बड़ी मशीनों पर कार्य करने वाले कर्मचारी हों, रसोई में काम करने वाली वृहिणी हो, बिजली का कार्य करने वाले बिस्ती हों, सभी का जीवन खिलकुल असुरक्षित सा हो जाया है।

यह से बाहर जाया व्यक्ति जब तक यह वापस नहीं जा जाता, तब तक यह में सभी को धिनां छानी रहती है। इस यंत्र के प्रभाव से आपको इस धिना का समाधान मिल सकता है, अकाल मृत्यु के द्योग को जियांगित किया जा सकता है, असुरक्षित से लगते जीवन को दैवी ऊर्जा का कवच दिया जा सकता है। यह यंत्र छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष सभी के लिए समान रूप से लाभकारी है।

Subscribe to the spiritual magazine in Hindi (with special pages in English), Mantra-Tantra-Yantra Vigyan for a year and get a mantra-energised JEEVAN RAKSHA YANTRA, which shall save you from tensions, accidents, danger from fire and electricity, and untimely death. On Sunday from 5:25 to 5:35 a.m. touch the Yantra on all parts of your body chanting 'Om Lam Ksheem Lam Om' After that string the Yantra in a black thread and wear it around your neck.

यह तुल्य उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपले। केन्द्रीय पत्रिका, रिटेलर या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका के सदस्य नहीं हैं, तो आप दुख भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं ४ उपर अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

Fill up and send post card no. 4 to us at: —

वार्षिक सदस्यता शुल्क — 195/- डाक रुक्ति अंतिमिति 30 / Annual Subscription 195/- + 30/- postage

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)

सम्पर्क : Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India.

Phone : 0291-432209 TeleFax-0291-432010

ज्ञान तक १
के १०८
ताजगिर्या
प्रतिशत २

स्वेच्छा नियं
को किसी वृक्ष
बाधा समाप्त

०८
४७
टोने-टोटको
४८
दिशा में केक
४९
नाम लिखने
करें, तो दीने
५०
३५ मिनट त
होलिकामिनि
५१
उपरोक्त मंत्र
में जहां होलि
किसी बड़ी

भूत-प्रे
सामग्री —
५
वह यह प्रयं
कर व्यक्ति
वेष्टण पर उ
सम्बन्धित



Om Shanti Shaantiprude Jwaliace Mam Tantra
Baadham Nivaranay Shantim Kuru Kuru Swaha

60. घर की चौब्बट के पास गड़का लोककर एक जगुना
को गाड़ दें, फिर उपर मिट्ठी से ढक देने से घर में किसी भी प्रकार
का मूढ़ प्रयोग यदि किया गया हो, तो वह असर नहीं करेगा।

61. छोटे बच्चों की प्राप्ति, नजर लग जाती है। इसे दूर
करने के लिए जगुना की बालक के रिशर पर 7 बार धुमाकर विदेश
विशा की ओर केक दें।

साधना सामग्री पैकेट - 60/-

विदेश भ्रमण के लिए

सामग्री - सिद्धि फल

62. सिद्धिफल पर निम्न मंत्र बोलते हुए अक्षत को 21
बार चढ़ायें तथा होली की ही रात में सिद्धिफल को घर से दूर
किसी निर्जन स्थान में फेंक आएं या मिट्ठी में डबा दें। ऐसा करने से
विदेश यात्रा से सम्बन्धित आ रही अड़चने समाप्त होगा तथा
शीघ्र ही विदेश ध्रुण का योग बनेगा।

// ॐ क्षीरी क्षीरी स्तुः हुं हुं फट //

Om Ksheem Ksheem Lab Hum Hum Phat

63. सिद्धिफल को होली से पूर्व वाले सोमवार के दिन¹
लाल कपड़े में स्थापित करें। उसके समक्ष धी का दीपक नलाकर
निम्न मंत्र का नित्य 51 बार जप करें। होली की रात्रि में सिद्धिफल
को कुछ दधिण के साथ किसी शिव मंदिर में भेट चढ़ा दें।

64. होली के एक सन्नाह पूर्व में नित्य सूर्योदय के समय
अक्षत, धी और सरलों से 51 बार उपरोक्त मंत्र बोलते हुए आहुति
देने वाले व्यक्ति को विदेश भ्रमण का योग अति शीघ्र प्राप्त होता है।
पहले दिन सिद्धिफल को अपने पूजा स्थान में स्थापित करें तथा
अंतिम दिन आहुति देते समय सिद्धिफल को धी अन्नि में समर्पित
करना आवश्यक है।

साधना सामग्री पैकेट - 21/-

राज्य भ्रय सामाजिके लिए

सामग्री - अबोला

65. होली की रात में अबोला को किसी ताम्र पात्र में रखें
तथा 5 दीपक लगायें। उनको प्रज्ञलित कर 10-10 मिनट तक
क्रमशः प्रत्येक दीपक को देखते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

प्रयोग समाप्ति पर पांचों दीपक और अबोला को नदी में विसर्जित
कर दें, ऐसा करने से राज्य भ्रय समाप्त हो जाता है।

// ॐ नमो रुद्राय राज्य भ्रयं विद्रावय ॐ फट //

Om Namo Rudraya Raajya Bhayam Vidraavay Om Phat

66. राज्य भ्रय हो या किसी महत्वपूर्ण कार्य में अटकाव,
एक अबोला लेकर उसके बजन के बालबर राई के साथ किसी
तिराहे पर रख दें और खुद असर देख लें।

साधना सामग्री पैकेट - 150/-

नवीन भवन की प्राप्ति

सामग्री - बेतुना

67. बेतुना प्राप्त कर होली की रात्रि में रक्ताभ माला
(नीचावर : 150/-) से 21 माला मंत्र जप करें। फिर घर के बाहर
किसी स्थान पर जमीन में एक गहरा गहरा बना कर बेतुना व माला
को डबा दें, शीघ्र भवन की प्राप्ति का योग निर्मित होगा।

// ॐ करसि महाकालि उँठे ठः ठः स्वाहा //

Om Karasi Mahakali Om Tibah Tibah Swaha

68. प्रतिष्ठान, फैक्ट्री अथवा भकान का निर्माण कराते
समय एक बेतुना नींव में स्थापित करने से श्री एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि
होती है।

69. बेतुना के ऊपर अपनी इच्छा केशर से लिख कर रख
दें और 108 बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करें। तत्प्रचात बेतुना
को घर से दूर किसी पीपल अथवा बरगद के वृक्ष की जड़ में रख दें,
भवन सम्बन्धित आपकी जो भी इच्छा होनी वह शीघ्र पूरी होगी।

साधना सामग्री - 180/-

भूत भविष्य दर्शन

सामग्री - कैवल्यमणि

70. कैवल्यमणि को होली की रात धारण करने ये व्यक्ति
किसी का भी भूत, भविष्य वर्तमान बना सकता है। इसमें गुरु एवं
सामग्री की चैतन्यता पर अङ्ग व विश्वास विशेष रूप से मायने
रखती है। 25 दिन बाद इसे नदी में प्रवाहित कर दें।

71. होली की रात, इसके सामने बैठने से ही चित्त शांत
और विचार शुद्ध होने लग जाता है तथा बाटक करने पर आज्ञा
चक्र पर भूत भविष्य भवन्धी दृश्य विख्यने लगते हैं।



इत्यतालाब में खिले प्राकृतिक कमल की भाँति में आपने शिष्यों
के मन में कमल विकसित कर रहा है। ऐसे कमल जिनमें जीवन की
धड़कन हो, पवित्रता हो, दिव्यता और वैतना हो।

- पूज्यपाद सद्गुरु रघेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

बहुत कम
प्रत्येक का
वाटे में का
सकता है

72.
व्यक्ति का शरीर
का जाता हो ज
हो, तो उसे दि

विद्या प्रा
सामग्री -

73.
मन पढ़ाई में
धारण करते हो

74.
और संकेतों
हो जाता है।

75.
को उंगली य

76.
पुत्र सुख
सामग्री -

77.
उसी कागज
के साथ उसे
कपड़े में बा
समझ साम
आपका पुत्र



कई बार जो कार्टॉ वड़ी वड़ी टाईबनाएं नहीं कर पाती हैं, वह छोटे-छोटे दिखने वाले प्रत्योग कर जाते हैं।

... और होली के दून तांबोचा प्रत्योगों के बाटे में कहा जाए तो टांडोप में दृतना ही कहा जा सकता है – देशन में छोटे लोग धार कर्म मनमीर।

72. केवल्यमणि को सोने या चांदी में धारण करने से व्यक्ति का शरीर बत्त के स्थान बढ़ हो जाता है। वह भूर्गम-ज्ञान का जाता हो जाता है, निसके फलस्वरूप कहों जमीन में धन गड़ा हो, तो उसे दिख सकता है।

साधना सामग्री पैकेट – 60/-

विद्या प्राप्ति के लिए

सामग्री – हंसमुक्तक

73. यदि बालक पढ़ाई में कमजोर हो, चंचल हो या उसका मन पढ़ाई में न लगता हो, तो उसके गले में हंसमुक्तक अवश्य ही धारण करना चाहिए।

74. हंसमुक्तक धारण करने वाले व्यक्ति में बुद्धि चारुय और संकेतों को समझने की क्षमता का अलौकिक ढंग से विकास हो जाता है।

75. पर्याक्ष में अच्छे नम्बर प्राप्त करने के लिए हंसमुक्तक को उंगली या गले में धारण कर लेना चाहिए।

76. नीकरी प्राप्ति के लिए इसे उंगली में पहिनना चाहिए।

साधना सामग्री पैकेट – 90/-

पुत्र सुख

सामग्री – सुखदा मुद्रिका

77. होली की रात में विली कागज पर निन्म मंत्र लिखकर, उसी कागज से सुखदा मुद्रिका को लेपेट दें तथा अपने पुत्र के चित्र के साथ उसे मीली द्वारा बांध दें। समस्त सामग्री को एक लाल कपड़े में बांध कर किसी गुप्त स्थान पर 11 दिन तक रखें। फिर समस्त सामग्री को नदी में विसर्जित करें। इस प्रयोग के प्रमाण से आपका पुत्र आपकी सुख-सुविधा का ध्यान रखेगा।



जीयो तो शोले बलकर जियो, चाहे तुम थोड़े समय के लिए ही सही,
पर अंगार की तरह चमक कर जियो, कि तुम्हारे प्रकाश में मानवता अपनी
आंखें खोल सकें।

– पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ जारायण दत्त श्रीमाली जी

॥ ॐ श्री शिवं पुत्रं सुखं देहि उ॒ नमः ॥

Om Shreem Shivam Putra Sukham Dehi Om Namah

78. सुखदा मुद्रिका को किसी पाव में स्थापित कर कुकुम, ब्रह्मास में संकेतना पूजन करें तथा उपरोक्त मंत्र का 101 बार उच्चारण करें। इसके बाद मुद्रिका को दाहिने हाथ की उंगली में धारण करें।

31. विन बाब उस मुद्रिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट – 60/-

अकाल मृत्यु एवं भद्रा निवारण के लिए

सामग्री – ब्रात्य

79. होली के पांच दिन पहले एक बाजार पर लाल कपड़ा बिछाकर उस पर ब्रात्य को स्थापित करें, इसके बाद इसके चारों ओर चावल से गोल घेंगा बना दें और निन्म मंत्र का उच्चारण करते हुए पांच लाल पूष्प चढ़ायें, फिर 31 बार मंत्रोच्चारण करें। ऐसा पांच दिन तक करें। आखरी दिन गत्रि में चावल तथा ब्रात्य को 5 बार मंत्रोच्चारण कर होलिकानि में डाल दें।

॥ ॐ क्लैं वीरे महावीरे सर्वं भयं स्तंभय स्तंभय हली ॐ फट् ॥

Om Kleem Veere Mahaveere Sarva Bhayam Stambhay Hleem Om Phat

80. होलिका दहन के समय ब्रात्य को अपने बायें हाथ में रखें, फिर दस मिनट तक उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करें। फिर ब्रात्य को अंगने में अपित कर दें। चोट लगने से यदि अकाल मृत्यु की सम्भावना हो, तो उसका निवारण होता है।

81. ब्रात्य का होली की रात्रि में घर में स्थापन करने से यदि कोई व्यक्ति अस्वस्थी हो, तो तन्दुरुस्न होने लग जाता है। जिसके घर में इसका स्थापन हो, उसके घर में कोई भय नहीं व्यापता है।

82. ब्रात्य को बाएं बाजू पर बांध लेने से व्यक्ति को होने वाली दुर्घटनाओं का आभास पहले से हो जाता है।

83. ब्रात्य को यदि होली की रात्रि में उपरोक्त मंत्र को 5 बार होलिकानि के समक्ष जप करके धारण कर लिया जाता है, तो व्यक्ति की अकाल मृत्यु से रक्षा होती है।

84. होली की रात्रि में यदि घर में ब्रात्य का स्थापन कर दिया जाए, तो घर के सदस्यों की मायानक बीमारी आवास एवरीडेन्ट आदि से रक्षा होती है।

साधना सामग्री पैकेट – 51/-

निरंतर आय वृद्धि के लिए

सामग्री - अंकड़ी

85. होली की रात्रि में यदि अंकड़ी को घर में स्थापित कर उसका पूजन किया जाए, तो लक्ष्मी का उस घर में सदैव ही निवास रहता है।

86. अंकड़ी को होली के दिन अपने पूजा कक्ष में स्थापित कर उसके समान 51 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करने हुए हवन कुण्ड में धू भीर जी की आटुतियाँ दें। अंतिम आटुनि देने समय अंकड़ी को भी अग्नि में समर्पित कर दें। वह निरंतर आय की वृद्धि के लिए निश्च ग्राहण दें।

॥ ॐ श्री हौ स्वर्णधार्य करि महालक्ष्मी मम यहु अवतर

ॐ स्वाहा ॥

Om Shreem Hreem Dhaandhaanyaa Kari Mahalakshmee Mam Grihe Avatar Om Swaha

87. पैतृक सम्पादित प्राप्ति करने के लिए होली की रात्रि में लाल कपड़े में अंकड़ी को लैपेट कर अपना तितोरी (अथवा जहां धन-आभूषण आदि रखते हों) में स्थापित कर दें।

88. यदि कोई व्यक्ति अन वापस नहीं कर रहा हो, तो किसी कागज पर कुंकुम से उसका नाम लिख लें। उसमें अंकड़ी को लैपेट कर होती की रात्रि में किसी कुंप में विसर्जित कर देने वह धन प्राप्त हो जाता है।

89. होली की रात्रि में प्रयोग सम्पत्ति करने के पूर्व बेल के 21 पत्ती (बिल्वपत्र) पर कुंकुम लगाकर तैयार रखें। फिर उपरीक्ष मंत्र का उच्चारण करने हुए एक-एक कर २१ बिल्वपत्र अंकड़ी पर चढ़ायें। उसी दिन अंकड़ी व बिल्व पत्तों को घर से दूर जमीन में गड्ढा खोदकर मिट्ठी में दबा दें, निरंतर आय की वृद्धि होगी।

साधना सामग्री पैकेट - 60/-

तनाव मुक्ति के लिए

सामग्री - स्वनित

90. स्वनित को किसी तांबे के पात्र में गुलाब के पुष्प पर स्थापित करें, उसका पूजन करें, नवेद्य चढ़ायें तथा 51 बार निम्न मंत्र का नप कर नवेद्य और स्वनित को होलिकामिनि में समर्पित कर दें। अकारण व्याप तनाव की समाप्ति होती है।


मैंने कमल के दीज लोये हैं और कल ये कमल ठिकरित होकर चारों तरफ सुरगि लिखोरेंगे। इन फूलों से मानवता औरवानित होगी, हवनकी सुगन्ध से युद्ध व नफरत की आग खुझेगी, प्रेम व आनंद की श्रीतल बयार बहेगी, लोग प्रफुलित हो सकेंगे, उनके मृग्यमाये हुये चैहरों पर एक - पूज्यपाद सद्गुरु लदेव डॉ० जारायण वटा श्रीमाली जी

ज 'जबरी' 99 मध्य-तंत्र-वत्र विज्ञान '16' ॥

॥ ॐ शुक्ले महाशुक्ले हुं फट स्वाहा ॥

Om Shukle Mahashukle Hum Phat Swaha

91. यदि पत्नी से कलह या मानसिक तनाव हो और उस तनाव से मुक्ति पाना चाहते हों, तो होली की रात्रि की स्वनित भारण कर लेना चाहिए। इनसे गान्ति व्याप्त हो जाती है।

92. यदि पिता और पुत्र के बीच में तनाव की स्थिति समाप्त नहीं हो रही है, तो स्वनित को स्थापित कर उसके ऊपर एक-एक लींग चढ़ाते हुए उपरोक्त मंत्र का 11 बार उच्चारण करें। जप नग्नासि के बाद स्वनित व लींगों को नल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 35/-

झूल दर्शन प्राप्ति के लिए

सामग्री - सोगुणी

93. यदि आपके इष्ट गणवान शिव, ब्रह्मा, विष्णु जादि कोई देवगण हैं और नियमित रूप से आप इनकी आग्रहना करते हैं, लेकिन प्रत्यक्ष दर्शन तो दूर, बिम्बात्मक दर्शन गो नहीं हो पाते हैं, तो आप होली के दो दिन पहले अपने पूजा कक्ष में सोगुणी को अक्षत पर स्थापित कर उसके समान निम्न मंत्र का नप 21 बार करें तथा एक कमल पुष्प सोगुणी के ऊपर अपित करें। बाद में होली की रात्रि में इसे होलिकामिनि में विसर्जित कर दें। तत्पश्चात् नित्य श्रावा पूर्वक निम्न मंत्र का 7 बार उच्चारण करें। ऐसा करने से शोध ही आपको अपने इष्ट के दर्शन होंगे।

॥ ॐ नमो भगवते नारायणाय दर्शय उरजच्य ॐ नमः ॥

Om Namo Bhagwate Narayanyai Darshay Angachch Om Namah

94. होली के दिन सोगुणी को स्थापित कर इसका पूजन कर इसे धारण कर लें, तो आप जो भी साधना कर रहे हैं वह नली ही सिद्ध होगी और इष्ट के प्रत्यक्ष दर्शन होंगे।

साधना सामग्री पैकेट - 30/-

स्त्री दोगों की सामाप्ति हेतु

सामग्री - गंडिया

95. यदि स्त्री बंध्या हो अथवा गर्भाशय में दोष हो, तो होली की रात्रि में काले धागे से बांधकर गंडिया को शारण करने से लाभ मिलता है।

९६
उम्मका प्रमाण
९७
स्वेच्छ-विवाह

मुकदमे
सामग्री -

९८
मुकदमे की तरह स्वेच्छ-विवाह से
१०
जेब में स्वतंत्रता
११
व्यक्ति को चुना कर आधा वंश

शब्द के बर

उच्च श्रे
सामग्री -

विद्यालय
पहले बच्चन करें। बाद की ओर मु
// ॐ Om Vi
चाहत है,



मातंगी साधना

स

मर्मत जगत जिस शक्ति से चलित है, उसी शक्ति की दृश्य स्वरूप हैं ये दस महाविद्याएं, जिनके नीचे क्रम में भगवती मातंगी का नाम आता है। भगवान शिव के मातंग रूप में उनकी अद्विगिना होने के कारण ही उनकी संज्ञा मातंगी रूप में विस्तृत हुई।

जीवन में भगवती मातंगी की साधना प्राप्त होना ही सौभाग्य का प्रतीक माना गया है। विश्वामित्र ने तो यहाँ तक कहा है – ‘बाकी नी महाविद्याओं का भी समावेश मातंगी साधना में स्वतः ही हो गया है। चाहे इम बाकी नी साधनाएं न भी करें और केवल मातंगी साधना को ही सम्पन्न कर लें तो, तो भी अपने आप में पूर्णता प्राप्त हो सकती है।’ इसीलिए तो शास्त्रों में मातंगी साधना की प्रशंसा में कहा गया है –

मातंगी सेवनं पूर्णं, मातंगी पूर्णत्वं उच्चते

अथात् मातंगी एकमात्र श्रेष्ठतम साधना है और एकमात्र मातंगी ही पूर्णता दे सकती है।

मातंगी शब्द जीवन के प्रत्येक पक्ष को उजागर करने की किया का नाम है, जिसमें जीवन के दोनों ही पक्षों को पूर्णता मिलती है, परन्तु मातंगी साधना साधकों के मध्य विशेष रूप से जीवन के मीतिक पक्ष को सुधारने के लिए ही की जाती रहती है।

मातंगी साधना के लाभ

* भगवती मातंगी की मंत्र साधना में गृहस्थ सुख की प्राप्ति होती है। यदि पति-पत्नी के मध्य सम्बन्धों में नष्टता नहीं

लूप, रस, यौवन, विलास, उत्तेज, वृहस्थ सुख पुर्व श्रोत्र को प्रदान करने वाली इस महाविद्याओं में श्रेष्ठ भ्रजवती मातंगी की साधना करना जीवन के औतिक पक्ष को पूर्ण कर देता है। इस साधना को सम्पन्न करना तुक तीर से कई निश्चाने लघाने जैसा है ...

रह गई हो, तो इस साधना के माध्यम से सम्बन्ध मधुर हो जाते हैं। साधक को कुटुंब सुख, पुत्र, युवियों, पत्नी, स्वास्थ्य, पूर्णायु आदि सभी कुछ प्राप्त होता है, जिससे उसका गृहस्थ जीवन पूर्ण माना जा सकता है।

* यह साधना वरन्तु; रस एवं सीन्दर्घ की साधना है, इसको सम्पन्न करने से व्यक्ति के अन्दर गजब का सम्पोषण एवं सीन्दर्घ व्याप्त हो जाता है, जिसके प्रभाव से लोग उससे आकर्षित हुए बिना नहीं रह पाते।

* मातंगी साधना से साधक के जीवन में ऐश्वर्य की पूर्ण प्रधानता हो जाती है। स्वास्थ्य, आय, धन, भवन सुख, वाहन सुख, राज्य सुख, यात्राएं और विविध इच्छाओं की पूर्ति सब कुछ तो मातंगी अपने साधक को प्रदान कर देती है।

* मातंगी को भोग एवं विलास की देवी भी कहा गया है, इन; इस साधना से व्यक्ति के अन्दर जीवन पूनः अगड़ाई लेने लगता है और वृद्धावस्था दूर होने लगती है। यह कई साधकों का प्रत्यक्ष अनुभव रहा है, कि इस साधना को सम्पन्न करने के पश्चात चेहरे पर एक तेज आ गया है, और सफेद पढ़ गए बाल पुनः काले हो गए हैं।

* पुस्त्रों में जहाँ मातंगी साधना पूर्ण पौरुषता प्रदान कर व्यक्ति को निर्भय और योगवान बना देता है, तो वहीं चित्रियों को फृप, लावण्य, भीन्दर्घ पवं कोमलता से परिपूर्ण कर देती है।

* प्रायः देखा गया है, कि धन-धान्य में व्यक्ति परिपूर्ण



मैं तो तुम्हारा ही हूं, तुम्हारी धड़कनों का स्पन्दन हूं, तुम्हारे हृदय की ही तो सुवास हूं, तुम्हारे आंसूओं की ही भाषा हूं। फिर मूझे हूंडने की जरूरत ही कहाँ पड़ी है।

— प्रूज्यपाद सदगुरदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाटी जी

ले जाता है, कि न माध्यन के बन रहा है।
+
प्रायः साधक
बाधा जा रही
कर/ वधु की
+

तथा सब कुछ
के अन्दर मा



01.1.9

05.1.9

14.1.9

17.1.9

22.1.9

25.1.9

26.1.9

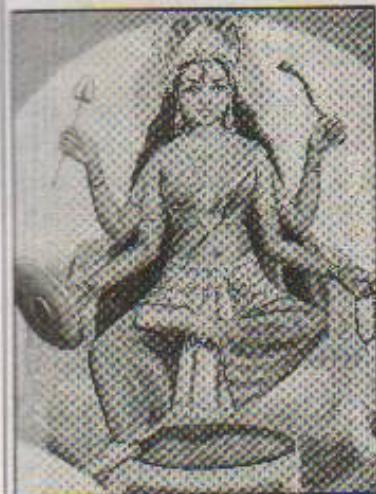
31.1.9

शनिवार

तो होता है, परन्तु उसके जीवन में इतना अधिक तनाव व्याप्त हो जाता है, कि सब कुछ होते हुए भी उसके पास कुछ नहीं होता। इस सम्बन्ध के बाद जीवन में उमंग और उल्लास का बातावरण सदैव बना रहता है।

• शोध विवाह हेतु भी मातंगी की साधना को करते हुए जाव, साधकों को देखा गया है। पुत्र अवश्य पुत्री के विवाह में यदि बाला आ रहा हो, तो वह शोध ही समाप्त हो जाती है तथा योग्य वर/वधु की प्राप्ति होती है।

• इस साधना के प्रभाव से साधक में अद्यत उत्साह नवा सब कुछ कर मुजरने की क्षमता स्वतः ही आ जाती है। व्यक्ति के अन्दर प्रयत्न को समाप्त करने की यह श्रेष्ठ साधना है। यह



समाप्त हो जाने के बाद फिर केसी भी विषम परिस्थिति हो, व्यक्ति उसमें विचलित नहीं होता है।

यदि इस साधना को पूर्ण अद्या एवं विश्वास के साथ सम्पन्न किया जाए, तो जिस उद्देश्य को लेकर

साधना सम्पन्न की जा रही है, उसमें निश्चित रूप से सफलता मिलती ही है।

साधना विद्यान

इस साधना को दिनांक 7.3.99 अवश्य किसी भी सोमवार को प्रायस्म किया जा सकता है। प्रातःकाल उठकर स्नान करने के पश्चात् दैनिक साधना विधि पुस्तक से शुरू पूजन सम्पन्न करें तथा इस साधना में सफलता के लिए प्रार्थना करें। तत्पश्चात् विशिष्टामिमुख ज्ञाकर वेठ जाएं। सर्वप्रवयम 'मातंगी यंत्र' को हाथ में लेकर जल से स्नान कराएं, तत्पश्चात् उसे पौछ कर किसी ताम्र पात्र में स्थापित करें। यंत्र का कुंकुम अद्यात से पूजन करें, तथा धूप-दीपक लगा दें। इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़कर भगवती मातंगी का ध्यान करें—
श्वामां शुद्धांशु भास्तां चिन्त्यनं कमलां स्तनस्तिहासनस्यां,
भक्ता भीष्म प्रदात्री सुरजिकरकरासेव्यक जांग्रियुगमस्।
नीताम्भरोजांशुकान्ति निश्चिर निकराशण्य डावाजिलस्यां,
पादश्च खड्ग चतुर्भिर्यकमस्त करेः चेटकञ्चरंकुशज्ज्वरं।
मातंगीमावहन्तो मधिमत्पत्तरदरं मोदित्तौ चिन्तवामि।

इसके बाद 'मातंगी माला' से निम्न दशाकार मंत्र की 11 माला मंत्र जप 16 दिन तक नित्य करें।

॥ उम हीं कली हुं मातंग्ये फट् स्वाहा ॥

Om Hreem Klim Hum Maatangyeel Phat Swaha

साधना समाप्ति के बाद साधक यंत्र व माला को नदी अवश्य तालाब में विसर्जित कर दें। इस साधना से निश्चय ही साधक को भगवती मातंगी की कृपा प्राप्त होती है और उपरोक्त लाभ प्राप्त होते हैं।

साधना सामग्री पैकट — 210/-

इस मास में होने वाली साधनाएं जो नवरात्र अंक में प्रकाशित हैं

01.1.99	भूवनेश्वरी साधना	हर देव में विजय प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठ साधना, जिसे सम्पन्न कर स्वयं भगवान राम ने लंका नरेश को पराजित किया था।
05.1.99	बगलामुखी साधना	व्यति के अन्दर सुन्न अर्थवा प्राण सूत्र को जगाने की साधना, जिससे साधक बशीकरण, सम्मोहन, स्तम्भन आदि कियाओं में भी दक्ष होता है।
14.1.99	सर्वोपासना (मकर संक्रान्ति) मूर्य की तेजस्विता को प्राप्त कर समाज में अपना वर्चस्व स्थापित करने की श्रेष्ठ साधना।	
17.1.99	धूमावती साधना	भून-प्रेत व तंत्र बाधाओं के पूर्ण निवारण हेतु उत्तम साधना।
22.1.99	अष्ट सरस्वती साधना	ज्ञान, विद्या, वाणी की शल, बुद्धि व मेधा प्राप्ति करने की साधना।
25.1.99	महाविद्या कमला साधना	समस्त दुर्ग, दारिक्रघ, रोग के क्षय प्रवृत्ति प्रीतिक उत्तरि की साधना।
26.1.99	महाकाली साधना	रोग मुक्ति, सर्वकार्य बाधा निवारण, ज्ञान व मोक्ष प्राप्ति की साधना।
31.1.99	तारा साधना	अद्वृत भन एवं ऐश्वर्य प्राप्ति की साधना।
शनिवार	अष्ट सरस्वती साधना	ज्ञान, विद्या, वाणी की शल, बुद्धि व मेधा प्राप्ति करने की साधना।

‘अ ‘जवरी’ 99 मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान ‘19’ ॥

पारिभाषिक शब्दावली

प्रायः: यह बेशा गता है, कि लोग आम बोल-चाल की भाषा में कुछ शब्दों का प्रयोग तो करते हैं, परन्तु उसका सही अर्थ उन्हें हात नहीं होता है। यही बात साधनात्मक किया विधियों से सम्बन्धित अनेकों शब्दों के साथ लागू होती है। यदि कोई जिज्ञासावश आपसे पूछ ले, कि 'अंगव्यास' क्या होता है, तो आपके पास स्पष्ट स्पष्ट से एक सरल परिभाषा होनी चाहिए, जिससे उस शब्द का अर्थ स्पष्ट हो सके। साधना हीत्र के परिप्रेक्ष्य में पारिभाषिक शब्दावलि का यह स्तरम् एक देसा ही प्रयास है।

पादः — पूजा या साधना में माहून देवता अथवा आपने आश्रित देवको चरण धोने के लिए जो जल दिया जाता है, उसे पाद कहते हैं। हमारी शास्त्रीय परम्परा के अनुसार इस प्रकार घर में आए हुए अतिथि को पैर धोने के लिए सम्मान के तौर पर जल देते हैं, उसी प्रकार देवताओं को भी पाद प्रक्षालन (पैर धोने) के लिए वो आचमनी जल पाद स्वस्त्रप दिया जाता है।

आर्थः — देवताओं को हस्त प्रक्षालन (हाथ धोने) हेतु जो जल दिया जाता है वह अर्थ कहलाता है। इसके लिए साधक दाहिने हाथ में जल लेकर उसमें कुंकुम व अक्षत मिलाकर देवता को समर्पित करें।

पुष्पांजलि — आरती के बाद दोनों हाथों में खुने पृष्ठ लेकर देवताओं का सम्मान के लिए तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए अंजुलि प्रस्तुत क्षुले पृष्ठ चढ़ाना पुष्पांजलि कहलाता है, जो पूजा पूर्णा की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है। 'गिरस प्रकार ये गिरले हुए पृष्ठ सुन्दर हैं और सभी को आनंदित कर रहे हैं, आपकी पूजा से प्रसन्न मेरा हृदय पृष्ठ आपको समर्पित है, उसे आप स्वीकार करें।' — पुष्पांजलि के पीछे साधक का अपने इष्ट के प्रति यह भाव होना चाहिए।

पूरुष्वरूपः — किसी भी मंत्र साधना में का एक लाख पञ्चीस हजार जप करना पूरुष्वरूप कहलाता है। उसके बाद जप मंत्र का दशांश हवन करना चाहिए, हवन का दशांश तर्पण तथा तर्पण का दशांश मार्जन करने की विशेष प्रशा है। यदि कोई हवन न करना चाहे तो साझे बारह हजार अतिरिक्त मंत्र जप करने से हवन करने की आवश्यकता नहीं होती।

संकल्पः — प्रतिज्ञा करना और उस प्रतिज्ञा के अनुसार आबद्ध होना संकल्प कहलाता है। किसी भी किया के लिए एक बार आबद्ध होने के बाद उस किया से हटना नहीं चाहिए अन्यथा साधनाओं में पूर्णता प्राप्त नहीं होती और दोष लगता है। संकल्प में जितने मंत्र जप के लिए प्रतिज्ञा की है, उनना करना पड़ता है, उसी तरह जप संबन्धी समय, देश, काल आदि भी संकल्प के अन्तर्गत आते हैं। इन सभी का पालन करना साधक के लिए साधना काल में उनिवार्य होता है।

आरती — अपने इष्ट के प्रति अत्यधिक प्रेम, जहाँ इष्ट और अपने में भेद की प्रतीति न हो, उस प्रीति की अन्तिम परिणति को आरती कहते हैं। जब तक अपने और इष्ट में भेद की प्रतीति है, तब तक सत्य रूप में आरती सम्मव नहीं होती है। हालांकि दोनों में प्रभेद का छोना सम्भव है, परन्तु अन्यन्त 'रति' (अनुरक्ति) होने पर भेद होने से पीर भेद की प्रतीति नहीं होती। उसी प्रेम के समर्पण भाव को व्यक्त करने के लिए 'आरती' एक प्रतीक है, जो दीपक के तुल्य और तेजोमय है। इसी भाव को व्यक्त करने हेतु, इष्ट की स्तुति करते हुए दीपक से आरती की जाती है।

विशेषः — इस परिका अथवा दून्य गुरुदेव के गन्धों में जिन शब्दों के अर्थ आपको समझने में कठिनाई होती है, उन्हें आप पोस्टकार्ड पर लिखली के बोते पर लिख भरें। इनका प्रकाशन पत्रिका के हस्ती स्तम्भ के अन्तर्गत किया जाएगा। कृपया पोस्टकार्ड पर निम्न पता लिखें—

'पारिभाषिक शब्दावली'

भिद्दाश्रम, ३०६ कोहाट एकलेव,
पांतगपुरा, नई दिल्ली - ३४।

द्वितीया धारा

सिरके नुच्छ होता है, निम्न जाता है, कि निम्न पर चोटी या चबूत्र ही रहा है जो पत्तियों में कि

Then
अपेक्षा काले रंग
आकर्षित करती
शिशों के बर्तनों
काला था। उन द
बाद Thermon
काले बर्तन का
यदि आप भैंस
धूप में उन्हें सूख
संकेद की अपे
को जाती है, तो
करने की विश्वा
में भी

की जाती है,
बुद्धि और ने
नीचे बुद्धि का
अध्य
होती
जाते, तो
परिणी

शिखा धारण व बिंधन भारतीय प्रृष्ठियों की उक्त युक्ति संबंधी परम्परा

शिखा धारण क्यों की जाती है?

सिर के ऊपरी भाग में ब्रह्मरन्ध्र स्थान पर बालों का एक नुच्छा होता है, जिसे सामान्यतः शिखा कहा जाता है। प्रायः देखने में आता है, कि साधना अनुष्ठानों में अनुरक्त रहने वाले साधक मिर पर चोटी या शिखा रखते हैं, आखिर कोई न कोई कारण तो ज्वरशय ही रहा होगा। इस प्रथा के पीछे इसी का विश्लेषण आगे को पढ़ियों में किया जा रहा है।

Thermal Physics के मिळान्टों के अनुसार सफेद की अपेक्षा काले रंग की वस्तु अधिक मात्रा में सूर्य की किरणों व ताप आकर्षित करती है। इस बात की जांच प्रयोगशाला में की गई। दो शीशे के बर्तनों को लिया गया, जिनमें से एक सफेद तथा दूसरा काला था। उन दोनों बर्तनों को सूर्य की धूप में रखा गया। ५ मिनट बाद Thermometer से तापमान नापा गया, तो यह पाया गया कि काले बर्तन का तापमान सफेद की अपेक्षा ५ डिग्री अधिक था। यदि आप सफेद और काले कपड़े के दो समान टुकड़े लीजिए और धूप में उन्हें सूखने के लिए रख दें, तो आप देखेंगे कि काला कपड़ा सफेद की अपेक्षा जल्दी सूख जाता है। इससे एक बात तो स्पष्ट हो जाती है, कि काली वस्तुओं में सूर्य-किरणों को आत्मसात करने की विशेष शक्ति होती है।

मेघ एवं बुद्धि के लिए जिस गायत्री मंत्र की उपासना की जाती है, वह सूर्य की ही उपासना होती है, क्योंकि सूर्य को बुद्धि और तेजस्विता का भण्डार माना गया है। शिखा के टीकी नीचे बुद्धि का केन्द्र होता है, शिखा अपने काले रंग के कारण सूर्य

से गेधा प्रकारिशी शक्ति का विशेष आकर्षण करके बुद्धि को ऊर्ध्वगमी और उत्तर बनाती है, इसी मिळान्ट को मानस में रखते हुए शिखा धारण करने का विधान प्रचलित हुआ।

शिखा के आकार का यदि अध्ययन किया जाए, तो यह एक तरह से सिर के ऊपरी भाग से लंगे Lightning Conductor की तरह है। Electrostatics के मिळान्टों के अनुसार नोकिली वस्तु समतल वस्तु की अपेक्षा अधिक विद्युत आवेश को आकर्षित करती है। इसी मिळान्ट के अनुरूप ऊँची इमारतों में धातु निर्मित रौँड या Lightning Conductor लगाए जाते हैं, जिसके द्वारा आकाश से गिरने वाली बिजली आकर्षित हो जाए। इस Lightning Conductor को गूमि से सम्पर्कित कर दिया जाता है, जिससे आकाश से बिजली गिर कर एटीने के माध्यम से शृणित हो जाती है और इमारत या आस-पास की आबादी को कोई क्षति नहीं पहुंचती है।

नोकिली वस्तुओं में विद्युत को आकर्षित करने का गुण अधिक होता है। इसी मिळान्ट को ध्यान में रखते हुए शिखा की बनावट उपयुक्त सी लगती है। सूर्य के किंचिणन एवं वानावरण में व्याप्त आवेश को शिखा अपने नुकोले होने के कारण सुगमता से आत्मसात कर नीचे ब्रह्मरन्ध्र स्थान तक पहुंचा देती है।

शिखा बनावट क्यों?

जब साधक साधनात्मक अनुष्ठान, मंत्र जपादि करता है या ध्यान में संलग्न होता है, तो एक अमृत तत्व का सूजन होता है, जो कि शिखा के नीचे स्थित सहस्रार में प्रविष्ट हो जाता है। इस

अध्यात्म के क्षेत्र में इह के प्रति समर्पण की बात आती है, वहां संशय-असंशय की स्थिति नहीं होती, वहां प्रश्न नहीं उठते हैं, लेकिन जब तक इन प्रश्नवाचक विद्वाँ के प्रत्युत्तर नहीं प्राप्त हो जाते, तब तक साधबात्मक क्रियाएं द्वयोसला ही लगती हैं और साधक का विश्वास अंधविश्वास में परिणीत हो जाता है। प्रश्नों का और जिज्ञासाओं का समाधान आवश्यक है, इसीलिए तो प्रस्तुत है प्रश्नों का उत्तर देता हुआ यह स्तम्भ . . .

अमृत तत्व का केन्द्र सूर्य है, जो कि समस्त तेजस्विता का भण्डार है। साधना काल में उत्पन्न यह अमृत तत्व सहजार से बाहर निकलने का प्रयत्न करता है, परन्तु शिखा में लगी गांठ के कारण बाहर नहीं निकल पाता है। शिखा के अगाव में वा शिखा में गांठ न लगी होने पर यह अमृत तत्व सूर्य से तो नहीं मिल पाता है, किन्तु अंतरिक्ष में बिलोन हो जाता है। इस प्रकार साधनादि किया में उत्पन्न यह ऊर्जा व्यर्थ चलनी जाती है। शिखा इस ऊर्जा को भीतर ही रोक देने के लिए बांधी जाती है।

विद्युत सिद्धान्त के मनुसार वर्तुलाकार, गोल या आबद्ध वर्तुओं पर विद्युत सहस्रा संक्रान्त नहीं होती, इसलिए भी शिखा को गोल गांठ देना उचित लगता है, जिससे उत्पन्न ऊर्जा या विद्युत आवेश बाहर बातावरण में निकल कर समाप्त न हो जाए। समाधि के नमय मंग्रह और तर्जनी के मेल से वर्तुल ब्रानाना, मुड़ी बांधना ये सब कियाएं भी इसी विद्युत प्रियोगान्तर आभासित हैं।

संक्षेप में शिखा का कार्य साधक के अन्दर की ऊर्जा को बाहर निःसृत होने से रोकना है एवं सूर्य एवं बातावरण में व्याप्त किरणों को, तेजस्विता को आकर्षित कर आन्तरिक सत्ता करना है। इस बृहि से शिखा धारण एवं साधना काल में उसका बंधन अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

शिखा : शारीरिक विद्वान का टूटिकोण

निम्न स्थान पर शिखा होती है, उसके नीचे Pituitary gland नामक एक ग्रन्थि होती है। इस ग्रन्थि से एक रस का साव होता रहता है, जो म्नायुओं द्वारा सम्पूर्ण शरीर में संचरित होकर शरीर को बलशाली बनाता है। शिखा द्वारा इन ग्रन्थियों को अपना कार्य करने में सहायता प्राप्त होती है। इससे मनुष्य दौर्धकाल तक स्वस्थ रहकर जीवन यापन करता है, और सकौ जान शक्ति भी उम्र के साथ मधुरण बनी रहती है।

बालों का समुद्रत होना का आतिमक विकास से किटना गहरा सम्बन्ध है!

संसार के अधिकांश सन्त, महान्मा, आध्यात्मिक पुरुष, एवं वैज्ञानिकों (वैज्ञानिक अनुसंधान भी एक ऐसी किया है, जिसमें व्यक्ति एक तरह की व्यानावरण में चला जाता है, उसे आन-पास की मुद्र नहीं रहती है, और ऐसी अवस्था में विज्ञान के सैकड़ों अविकाशक छुए हैं, चाहे वो न्यूलन हो या प्लॉटर्ट ऑस्टाइन) को यदि देखें, तो उनके बाल लम्बे और घने ही थे। वस्तुतः शिखा बांधकर लम्बे काल तक साधनारन या अनुसंधान रत रहने से जो शक्ति उत्पन्न होती है, वह क्षीण न होकर शरीर में ही विद्यमान रहती है।

शिखा के सम्बन्ध में पाठ्यात्मक विद्वानों द्वारा मंतव्य

— वेदों के प्रसिद्ध पाठ्यात्मक भाष्यकार Max Mueller ने शिखा की उपयोगिता के बारे में लिखा है, कि शिखा के द्वारा मानव मस्तिष्क सुगमता से शक्ति के प्रबाह को धारण कर सकता है।

— Sir Charles Lukes के अनुसार “शिखा का शयोर के उम्र अंग से अत्यंत घनिष्ठ सम्बन्ध है, जिससे जान बृद्धि और तमाम अंगों का संचालन होता है। जब से मैंने इस विज्ञान की खोज की है, तबसे मैं रख्यां चोटी रखता हूँ।”

— एक सुप्रसिद्ध विज्ञान वेता ने अपनी पुस्तक में लिखा है, कि किसी वस्तु पर चिन्तन करने से ओज शक्ति उसकी ओर दीइती है। यदि ईश्वर पर चिन्तन एकाग्र किया जाए, तो पुस्तक के ऊपर शिखा के रासने ओज, शक्ति प्रकट होती है। परमात्मा की शक्ति उसी पथ से अपने भीतर आया करती है।

— डॉ हाथ्यमन के शब्दों में— “मैंने भारत वर्ष में छक्कर भारतीय संस्कृति का अध्ययन किया है। यहाँ के निवासी बहुत काल से सिर पर चोटी रखते हैं, जिसका बर्णन वेदों में है। उनकी बृद्धि की विलक्षणता देखकर मैं अत्यन्त प्रभावित हूँ। पिर पर चोटी या बाल रखना लाभदायक है। मैं शुद्ध भी चोटी रखने का कायल हो गया हूँ।”

— भारतीय मतानुसार साधारण वश में जब हमारा शरीर रोम छिप्तों द्वारा ऊर्जा को बाहर फेंकता है, तो उच्ची समय सुषुमा केन्द्रों पर शिखा स्थान से तेज का स्राव होता है। उसी को रोकने के लिए शिखा बंधन का विधान है, जिससे वह तेज शरीर में ही रुक कर मन, मस्तिष्क व शरीर को अधिक उत्तम बना सके। सुप्रसिद्ध विद्वान Dr. L.E. Clark ने लिखा है— “जब मैं चीन गया, तो मैंने देखा कि वहाँ के लोग भी भारतीयों की भाविति आधे सिर पर ज्यादा बाल रखते हैं। मैंने जब से इस विज्ञान की खोज की है, तब से मुझे यह विश्वास हो गया है, कि भारतीय शास्त्रों का हार नियम विज्ञान से भरा पड़ा है। चोटी रखना हिन्दुओं का धर्म ही नहीं, सुषुमा के केन्द्रों की रक्षा के लिए विष-मूनियों की खोज का विलक्षण चमत्कार है।”

— इसी प्रकार मि. अर्ल थामन ने Alarm मैगजीन के १९२१ वार्षिकांक में लिखा है, कि सुषुमा की रक्षा भारतीय जहाँ चोटी लगा कर करने हैं, वहाँ अन्य देशों में इसकी रक्षा लम्बे बाल या हेट लगा कर करने हैं, किन्तु दोनों में चोटी रखना ज्याद श्रेष्ठ है।

साधनात्मक कियाओं को मात्र आसें बन्द कर नहीं अपितु इन कियाओं के महाव को समझते हुए यहि किया जाए, तो उस किया के प्रति अब्द अवृत्त ही उपज जाएगी, और शक्ति ही तो अधिक है समर्पिता का।



सद्गुरुदेवः तपोनिष्ठ स्पृष्ट

पंचानिं तापं हिमगर्भवासः
वनात्वनं संचरणं पदातिः ।
अनन्यसाध्यं गिरिगद्वरेषु
तपः प्रपेदे बिखिलः तपिष्ठः ॥१॥

आवार्ता – पंचानि ज्ञाधना हेतु जिन्होंने अग्निताप को ज्ञान किया, हिम (बर्फ) के बीच दैविक हठ कठिन साधनाएं करने वाले, हिंसक पशुओं से भरे एक वन से बूझदे वन में पैकल भ्रमण करने वाले, पर्वतों की अधेशी कंदकाओं में नितांत एकाकी भाव से कठोर साधनाएं सम्पज्ज करते हुए गुरुदेव नियितेश्वरानन्द जी ज्ञानात् तपहया की ही प्रतिमूर्ति है हैं ।

उनके तपोनिष्ठ व्यक्तिगत के बारे में संन्यासी आठमानन्द जी ने कहा है, कि एक बार मैं गोमुख से आगे बढ़ने वाले की ओर जा रहा था । तभी मेरी हाथि एक पर्वत शिखर पर गई, तो मुझे यह आभास हुआ, कि वहाँ कोई विशेष बात है, अतः मैं उट्सुकतावश उस ओर चल पड़ा । थोड़ा आगे जाने पर मैं यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया, कि शीत घृत में बर्फ की शिला पर लैठ कर भात्र एक व्याघ्र चर्म अंदोभाला पर थारण कर कोई संन्यासी बैठे हुए हैं । ऐसा लग रहा था, कि शीत घृत का उनके शरीर पर कोई प्रभाव ही नहीं हो रहा है । जबकि मैं स्वयं अपने आपको वस्त्रों से ढके हुए था, और उस क्षेत्र में कई बार आ जा चुका हूँ ।

– किन्तु यह संन्यासी किसी अन्य लोक से ही आए हुए लग रहे हैं । मैं यह सोच ही रहा था, कि अचानक हिमपात्र प्रारम्भ हो गया । मैंने आगकर पास की गुफा में शरण ली और सोचा, कि वह संन्यासी भी अब अपनी तपस्या छोड़कर उस गुफा में आएंगे ही, वर्तोंकि आसपास कोई दूसरी गुफा नहीं थी ।

– लैकिन आश्चर्यी हिमपात्र होता रहा और वह संन्यासी अंडिग रूप से अपनी तपस्या में लगे रहे । याएं भर के बाद ही संन्यासी के स्थान पर छोटा सा हिमखण्ड दिखने लगा ।

– मुझे इच्छा हुई, कि जाकर उस संन्यासी को किसी प्रकार उठाकर ले आऊँ, जिससे उनकी ऊँचाई रक्खा हो सके, किन्तु तीव्र हिमपात्र के कारण मैं ऐसा नहीं कर सका ।

प्रकृति भी उनकी परीका ही ले रही थी, तभी तो पूरे धौलीस धण्टों के बाव हिमपात्र रुका ।

मैंने बाहर लिकला कर उनको छुड़ने का प्रयास प्रारम्भ किया, जगह-जगह से बर्फ हठाना शुरू किया, तभी कुछ दूर पर एक आश्चर्यजनक घटना होती दिखी ।

एक हिमखण्ड पिघल-पिघल कर जल रूप में परिवर्तित हो रहा है, उस जल में यह किया आश्चर्यजनक ही तो है । थोड़ी देर बाव जब वह हिमखण्ड लगभग आद्या पिघल गया, तो मैं स्वयं ही प्रणिपात हो गया उन दिव्य संन्यासी के सम्मुख, वर्तोंकि वे अब भी अंडिग भाव से अपनी तपस्या में रहा दिखे । उनकी तपः रश्मियों से ही हिमखण्ड पिघला, यह तो स्पष्ट हो गया ।

जब मैंने दृष्टान के द्वारा अपने गुरुदेव से सम्पर्क स्थापित कर उन दिव्य तपोनिष्ठ संन्यासी के बारे में जानना चाहा, तो यह जानकर, कि हठ लिशपथ, अंडिगता, बनोबल और तप की साकार मूर्ति ये भगवत प्रज्ञपात्र स्वामी नियितेश्वरानन्द जी ही हैं, मैं स्वयं ही कृत-कृत्य हो गया ।

समाज में विविध प्रकार की आलोचना-प्रत्यालोचनाओं के द्वानावात मैं अंडिग रूप से नुस्काराते हुए अपने शिष्यों की विविध समस्याओं से आज भी रक्षा करते हैं, यह उनकी ही तपोनिष्ठता है ।

जीवन एक अबूझ पहली बाल जाता है जब शिनोश्र जागरण की क्षमा उसको सुलझाती है तब

य

दि किसी लोहे के टुकड़े की दो सामान रूप से शक्तिशाली चुम्बकों के बीच में रख दिया जाए, तो उसकी क्या स्थिति होती है? वह टुकड़ा दोनों चुम्बकों की आकर्षण तरঙ्गों से निरंतर कम्पित नो बना रहता है, लेकिन अपने ही स्थान पर नहीं भी बना रहता है। उसकी कोई गति नहीं हो पाती है और ठीक इसी तरह भूतकाल और मविष्यकाल के दो चुम्बकों के बीच फंसे किसी भी मनुष्य की कोई गति नहीं हो पाती है। वह अपने स्थान पर गतिहीन सा बना बस्त कम्पित रथ होता रह जाता है।

यद्यपि योग शास्त्र की पुष्टि में काल के भूत मविष्य एवं वर्तमान त्रिसे भेद विशेष अर्थ नहीं रखते हैं, क्योंकि मविष्य का आता हुआ प्रत्येक क्षण, क्षणांश में ही भूतकाल का अंग जो बन जाता है, अरह जो मुख्य बात है। वह वर्तमान के क्षणों की महसा को ही मुख्य धोषित करती है, किन्तु दूसरी ओर यह भी निरांत सत्य है, कि प्रत्येक मनुष्य अपने विशेष की स्मृतियों एवं भविष्य की आशंका से ब्रह्म सीरहता है। वह न केवल इस रूप में शृण्ण ही रहता है वरन् एक प्रकार से कहे तो ब्रह्म भी रहता है और उसका उस रूप में रहना किसी भी प्रयोजन को सिद्ध नहीं करता, क्योंकि जो घटनाएं विशेष में सम्पन्न हो गई, चुरुदायक या दुखदायक, उनमें न तो कोई संशोधन किया



जा सकता है और न ही उन्हें पुनः जीवित करके किसी आनंद की अनुभूति की ना सकती है साथ ही मविष्य के प्रति सुस्पष्ट दृष्टि द्वारा पास नहीं होती।

व्यक्ति के पास जब तक भविष्य को देखने की एक सुन्यष्ट दृष्टि नहीं होती, तब तक मविष्य में उसके द्वांकने की प्रत्येक क्रिया किसी अटकल से अधिक कुछ नहीं होती। यह बात पूरी तरह से सत्य है, कि प्रत्येक व्यक्ति अपने मविष्य में द्वांकने की क्रिया जाने-अनजाने रूप में करता ही रहता है, क्योंकि जो बीत गया हो, मनुष्य उससे तो समझौता कर सकता है, लेकिन भविष्य की आशंका से कभी मुक्त हो ही नहीं सकता। यह प्रत्येक मनुष्य की जन्मनात प्रकृति होती है। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जिसमें प्रकृति ने कोतूहल और जिजासा की प्रवृत्ति सबसे अधिक भरी है और फिर जहाँ मनुष्य का स्वयं के अस्तित्व से ही सम्बन्ध हो, वहाँ तो यह प्रवृत्ति कई गुना अधिक बढ़ जाएगी ही।

जिस तरह से प्रत्येक मनुष्य भूतकाल व भविष्य काल के दो अवृश्य चुम्बकों के बीच फंसा होता है, उसी तरह से वह अपने अन्तर्मन में आशा व आशंका के दो छोरों के बीच में भी झूलता रहता है। आशा के माध्यम से जहाँ वह अपने जीवन के



जो समाज से दबता है उसे समाज और दबाता है, जो समाज से अयभीत होता है, समाज उस पर अधिक जुल्म करता है।

— पूज्यपाद सद्गुरु देव डॉ० जारायण ददृ श्रीमाली जी

कुछ स्वनों को पूरा होता देखना चाहता है, तो कहीं आशंका के लाभम से वह अनुमान लगाने को बहु मो करता रहता है, कि कहीं उसके स्वनों को पूरा होने में कोई अद्वितीय तो नहीं आ जाएगी? ये नहीं कियाएं भविष्य के ग्रन्थ में ज्ञाने की क्रियाएं नहीं तो और क्या है? इनमें भी आशका का यह आशा से कहीं अधिक प्रबल होता है।

... मैं अमुक व्यवसाय कर लूं तो कैसा होगा? कहीं देखा तो नहीं होगा, कि उसे प्रारम्भ करने के लिए मैं जो कुण्ड लूंगा उसे भी गंवा बैठूँगा? क्या मैं जिसे पार्टनर बना रहा हूं वह धोखा तो नहीं दे जाएगा? मैं जिससे बिवाह करना चाहता हूं क्या उससे मेरी जीवन भर निभ पाएगी? क्या मैं अपनी पुत्री का बिवाह जिससे करना चाहता हूं वह उसे सुखी रख पाएगा? क्या मैं द्रासफर पर जहां जा रहा हूं वहां सबसे मेरा ताल मेल बन सकेगा? ... आशंकाओं के एक नहीं एक हजार उदाहरण हैं।

कुछ लोग तो आशंका के ताने-बाने में इनना अधिक रच-पच गए होते हैं, कि यदि उनको रात में दस बजे देन हो, तो वे शाम को पांच बजे ही निकल पड़ते हैं — कहीं रिक्शों का टायर पंकचर हो गया तो? कहीं रिक्शों वाले से किसाये पर बहस में समय खराब हो गया तो? कहीं शॉइंग में फंस गए तो? कहीं कुली न मिला तो? कहीं टिकट लेने में लाइन लम्बी हुई तो? कहीं ट्रेन, एलेट फॉर्म न-बर एक की जगह पांच पर आ गई तो? ... और कहीं ट्रेन अम्य से पहले आ गई तो?

शायद आशंकाओं का कहीं अंत नहीं हो सकता है और आशंका से ही भय को भी उत्पन्न होती है। एक अंधे पथ पर चलने में भय की उत्पन्न होना स्वाभाविक भी है और व्यक्ति को जब तक अपने भविष्य का सही-सही जान नहीं होता तब तक उसका चलना एक अंधे पथ पर चलना ही होता है, यदि एक अंधे मार्ग पर इधर उधर टकराते हुए, अपने आप को चायल करते हुए चलना ही जीवन की गति मान लिया जाए तो। विशालीन गति का

तृतीय नेत्र, थर्ड आई या वैज्ञानिकों के शब्दों में व्यक्ति की वह छठी इन्डिय जो स्थित होती है प्रत्येक मनुष्य में, लेकिन अधिकांश में निष्क्रीय, सुप्रभ व्यर्थ सी बनकर ... वैसे जाग्रत हो सकता है व्यक्ति का तीसरा नेत्र? वैसे साकेत हो सकती है उसकी छठी इन्डिय? उसे उसका अविष्य सुं स्पष्ट दिखाते हुए उसी दर्शन में कोई प्रतिबिम्ब झलक उत्पत्ता है ...

कोई अर्थ नहीं होता है, अपितु वह अम, धन, प्राणश्वेतना सभी का अपव्यय ही होता है। यह एक प्रकार का भटकाव ही होता है...

और इस भटकाव का विज्ञान के पास कोई उत्तर या समाधान नहीं है। विज्ञान या मनोविज्ञान तो अब जाकर इस निष्कर्ष पर पहुंचा है, कि व्यक्ति में एक छठी इन्डिय भी होती है, जिसे उसने थहर आई की संज्ञा दी है और जो

भारतीय शब्द नृतात्र नेत्र का ही सीधा सादा अनुवाद है।

कई हजार वर्षों से इन देश में भगवान शिव व कलिपय अन्य देवी-देवताओं के विषय में यह सहज भारणा रही है, कि वे जिनेव युक्त हैं, किन्तु जिस प्रकार से अन्य प्रतीकों का वास्तविक भाव, मनोर के कोनाहल में दब गया; उसी प्रकार त्रिनेत्र का भी वास्तविक भाव, मात्र के क्लावों में विचमृत हो गया। भारतीय चित्त में प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर का प्रतिरूप ही माना गया है अर्थात् जो विशेषताएं किसी देव में हैं, वही विशेषताएं किसी भी व्यक्ति में होती हैं। अंतर केवल जाग्रतवस्था से ही पड़ता है। प्राचीनकाल में जब साधना के प्रति व्यक्ति की सकारात्मक वृद्धि थी, गुरुपत का उसे वास्तविक बोध था तब उसे ये कुर्लभ नहीं अपितु सुलभ स्थितियां भी और त्रिनेत्र के जागरण की स्थिति भी उनमें से एक थी।

तृतीय नेत्र के विषय में यह एक सामान्य भारणा है, कि यह व्यक्ति के आज्ञा चक्र पर स्थित होता है तथा कृष्णलिङ्मी जागरण का काम आरम्भ होने पर जब आज्ञा चक्र के जागरण की स्थिति आती है, तब व्यक्ति अन्य लाभों के साथ साथ न केवल अपने भूत, भविष्य और वर्तमान को वरन् किसी अन्य व्यक्ति के भी भूत भविष्य वर्तमान को देखने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। निश्चिदं यह भारणा अपने आप में सन्य है, सीमित अर्थों में, क्योंकि यही त्रिनेत्र जागरण की स्थिति जब गुरु सम्पर्क में सम्पन्न होती है, तो इसके अर्थ अपनी प्रचलित भारणा से कुछ परिवर्तित हो जाते हैं या यु कहना अधिक उचित रहेगा, कि गुरु साहचर्य, गुरु कृपा के

**तुम झूठ बोले इस बात का गुझो अफसोस नहीं है अफसोस तो
इस बात का है कि मैं भविष्य में तुम्हारा विश्वास कैसे करूँगा।**

— पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ नारायण दंट श्रीमाली जी

फलस्वरूप त्रिनेत्र जागरण को यह स्थिति और भी अधिक व्यापक रूप शहनार कर लेती है। त्रिनेत्र जागरण की क्रिया जब गुरु कृष्ण के प्रकट रूप दीक्षा एवं शक्तिपात्र के माध्यम से सम्पत्त होती है तब यह आवश्यक नहीं रह जाता है, कि उसके पूर्व व्यक्ति की कुण्डलिनी शक्ति चैतन्य होकर मूलाधार से आज्ञा ब्रह्म तक की यात्रा सम्पन्न कर चुकी हो। अर्थात् त्रिनेत्र जागरण की क्रिया जब स्वयं गुरुदेव द्वारा अपने शिष्य में सम्पन्न कराई जाती है, तब वे कुण्डलिनी शक्ति के स्थान पर शिष्य के चित्त पर इस प्रकार से अपना आग्राह देते हैं, जिससे चित्त की ग्रहण क्षमता और अनुभव क्षमता में विस्तार हो सके।

मूँ भी गुरुदेव का सम्बन्ध अपने शिष्य के चित्त से ही सबसे अधिक होता है। त्रिनेत्र का अर्थ—माथे के बीचों बीच बने किसी काल्पनिक नेत्र से भी अधिक इस बात से होता है, कि शिष्य जो कुछ अपनी दो आँखों से देख रहा है उससे भी परे जाकर उसे अपनी निर्णायिक शक्ति से समझ-बूझे और यही विकसित निर्णायिक शक्ति ही वास्तव में शिष्य का तीसरा नेत्र बन जाती है। त्रिनेत्र जागरण दीक्षा का तात्पर्य शिष्य में इसी क्षमता का विकास कर देना होता है। त्रिनेत्र जागरण दीक्षा का तात्पर्य यह नहीं होता है, कि अब शिष्य भगवान् शिव की तरह किसी को भग्न करने में समर्थ हो गया, वरन् यह होता है, कि उसे विविध आभास होने प्राप्त हो जाते हैं।

त्रिनेत्र जागरण दीक्षा को प्राप्त करने के बाद जो व्यवहारिक स्थिति निर्भै होती है, वह इस प्रकार की होती है, कि शिष्य को पग-पग पर स्वयं उसके ही अन्तर्भूत से संकेत या गुरुदेव के निर्देश मिलने प्राप्त हो जाते हैं। अमृक कार्य को करना चाहिए, अमृक कार्य को नहीं करना चाहिए, अमृक स्थान पर जाना चाहिए, अमृक स्थान पर नहीं जाना चाहिए, अमृक व्यक्ति से प्रथान करके सम्बन्ध विकसित करने चाहिए, अमृक व्यक्ति से व्यावधान रहना चाहिए निम्न सहस्रों निर्देश प्राप्त होने की एक समन् स्थिति का बनना ही वास्तव में त्रिनेत्र जागरण दीक्षा का वास्तविक भाव होता है।

इस दीक्षा को प्राप्त करने के पश्चात् शिष्य को इस बात का बोध होना प्रारम्भ हो जाता है, कि क्या उसके लिए लाभकारी है और क्या अहिनकारी। ऐसी स्थिति आ जाने पर शिष्य स्वयं

**आशंकाएँ तो उक नहीं उक
हजार घेरे रहती हैं मनुष्य को हर पल,
परन्तु उलझते हुड़, भटकते हुड़ . . .
क्योंकि जाग्रत नहीं होता है व्यक्ति का
वह तीसरा नेत्र, जो पल भर में उसे
रास्ता बता सके . . .**

ही भावधान रहता हुआ वही योजना बनाता है या वही कार्य करता है, जिसमें उसके श्रम व समय का अपव्यय न हो। त्रिनेत्र जागरण की स्थिति महा भज्ञी में शिष्य के ज्ञान चक्रों के खुल जाने की स्थिति होती है। ज्ञान रूप में गुरुदेव इन्द्र ये स्थापित हो सके, पग-पग पर उनके साहचर्य की स्पष्ट अनुभूति हो सके, त्रिनेत्र जागरण दीक्षा इसी का एक उपाय होती है।

प्राचीन काल में शिष्यगण सप्रायास अपने गुरु से इस दीक्षा को प्राप्त करते थे, क्योंकि जहाँ गुरु 'ज्ञान' रूप में शिष्य के चित्त पटल पर विश्वामान होंगे, वहाँ कौन सा अनिष्ट अपना प्रभाव प्रकट कर सकता है? वहाँ स्वयं ही गुरुदेव पग-पग पर चैतन्य कर रहे हों, वहाँ शिष्य का अहित हो भी सकता है तो क्ये? गुरु जन तो सदैव इस प्रकार की दीक्षा सही अपने शिष्य को प्रदान करने के लिए एक प्रकार से कहें, तो आतुर ही रहते हैं, क्योंकि गुरु जन का तो एक ही ध्यान, एक ही धारणा और एक ही चिंतन होता है, कि कैसे उनका प्रिय, उनका आत्मीय, उनका शिष्य सभी प्रकार से सुखी, सम्पन्न और निःशंक हो सके।

अतः जो आवश्यकता होती है वह मात्र इन्हों ही होती है, कि शिष्य व्यर्थ के किसी चमत्कार प्रदर्शन की आशा को छोड़, इस प्रकार की दीक्षा भी का मठत्व और वास्तविक अर्थ नमज्ञे तथा दीक्षा प्राप्त कर लेने के बाद अपने कर्तव्य की समर्पण न समझ, जो मन्त्र ऋवर के रूप में वास्तव में पूज्यपाद गुरुदेव का ही स्वर आ रहा हो, उसे सुनकर उसका यथावत् पालन करने की चेष्टा करे। यहा होने पर जीवन का जबूझ पहली में शिष्य पग-पग पर पूनः उलझता नहीं है। तब वह प्रत्येक पल एक प्रकार ऐसी निश्चिन्तना में गनिशील हो जाता है, जो निश्चिन्तना अन्य किसी प्रकार से, कोई भी मूल्य देकर भान नहीं की जा सकती।

जो आज गित्र है, वह कल भी गित्र बना रहेगा, यह जास्ती नहीं है; अतः नहरे राज की बात कभी विश्री करे मत बताओ।

— पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

उत्तरार्थ य सौरी



आपके अत्यधिक स्नेहयुक्त पत्रों को प्राप्त कर हम आपके किरी भी सुझाव को मानने के लिए उत्साहित हो जाते हैं, अतः इस स्तरम् का आरम्भ किया गया है, जो व्यक्ति के शारीरिक तथा मानसिक सेवा के निदान से सम्बन्धित है, आप हन प्रवोगों को अपनाकर अपरब्द ही इसके बारे में हमें अपने विचार में।

१. क्या आपका बहुचा बीमार, चिड़चिड़ा, कमजोर इमरण इच्छित वाला हो गया है?

किभी आकृष्यक आवात के पश्चात् स्वरूप या अन्य किमी कारणवश यह देखने में आया है, कि उसका असर बड़ों की अपेक्षा बच्चों पर ज्यादा होता है। मस्तिष्क की नाड़ियों में अत्यधिक विचार उन्नत होने के कारण यह कभी-कभी सर्वमें का स्फूर्त शारण कर लेता है और बह कोगल पुष्प इस कुप्रभाव को झेल नहीं पाता, फलम्बन्ति वह बहुचा असमय ही बीमार पड़ जाता है और बात-बात पर चिड़चिड़ाता, हर कार्य का विरोध करना, उसकी आवत सी बन जाती है।

ऐसी स्थिति में वह कभी रोता है, कभी हँसता है, तो कभी मौत हो जाता है, जिससे कि पूरा घर परेशन रहता है। आप अनेक डॉक्टरों से उसका जान्न करवाते हैं और कई दवाइयों खिलाते हैं, लेकिन फिर भी उससे कोई नहीं बढ़ता है। डॉक्टर भी उस बीमारी का स्पष्टता से पता नहीं लगा पाते। बच्चे के शरीर के मन पर वासावरण ऐसे घटनाओं का गहरा असर पड़ता है और धीरे धीरे उसकी स्मरण अङ्क कमजोर पड़ने लग जाती है। इस प्रयोग के मध्यम से आप अपने बच्चे को सामाजिक अवस्था प्रदान कर सकते हैं।

शनिवार के दिन प्रातःकालीन बेला में पापन के पेड़ की सान बार पांचकामा कर कर्वे रूप से उसे बांध दें और हाथ में 'मेघिनी गुटिका' को लेकर मन ही मन बच्चे के रोगमुक्त होने की कानना करें, फिर ३ मिनट तक वही बहुत गड़कर निम्न मन का मन ही मन नय करें—

मंत्र

॥ उमं क्री ही नमोऽस्तु उः उः ॥

Om Aum Kriem Hreem Namostu Uthah Uthah

सात दिन पेसा करें और फिर उस गुटिका को बालक के गले में पहना दें। महाने भर पश्चात् मेघिनी गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 60/-

२. अपने लड़के बालों को आकर्षक बनादूए।

हर बच्ची को डब्बा होती है, कि उसके बाल सुन्दर रहें, लेकिन व्यरुत्ता के कारण उसे बालों की टीक प्रकार से देखभाल करने का समय नहीं मिल पाता। बालों में सूखी हो जाती है और प्रायः बाल गिरने भी लगते हैं तथा समय से पहले ही बाल सफेद भी हो जाते हैं।

आनार में प्राप्त होने वाले विभिन्न प्रकार के शैमू के प्रयोग से बालों को पुष्टता प्रदान करने का विज्ञापन दिया जाता है, परन्तु फिर भी बालों का गिरना प्रायः नहीं रुकता।

और यह तो निश्चित है, कि केशों का सुन्दर होना, किभी भी गर्दे के लिए अवश्यक ही है। यदि आप याहती हैं, कि आपके बाल लम्बे, धने, काले एवं आकर्षक हों तो इस मात्रिक प्रयोग को एक बार अवश्य ही कर के देखें—

किसी भी सोमवार को एक ताप पात्र में कुंकुम से एक स्वर्णिन किला निर्मित करें, तदुपरान्त सूकेशिका को उस स्वर्णिन के ऊपर स्थापित कर दें। उसका पूजन कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प से करें। फिर उस पर चावल के बाने चढ़ाने हुए निम्न मंत्र का नित्य ३१ बार ११ बिन तक उच्चारण करें—

मंत्र

॥ उः उः ही श्वौ भुवः उः उः स्वाहा ॥

Om Om Hreem Kshveem Bhuvah Om Om Swaha

मंत्र जार के बाद सूकेशिका को अपने बालों से स्पर्श कराएं। इस प्रयोग से आपके बालों में आकर्षण उत्पन्न होने

वों तो किसी रोग के शमक हेतु आज विकिटस विजान के पास अचूक इलाज है, परन्तु गंत्रों के माइटोम से विकिटस के पीछे थारा यह है, कि सभी रोगों का उद्भव मनुष्य के मन में ही छिपा होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभाव को यदि मन द्वारा विचित्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थानी रूप से शाब्दित जाते हैं।

लगेगा, बालों में किसी प्रकार के रोग नहीं होंगे। बारहवें दिन सुकेशिका व चढ़ाए हुए चावल को जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 80/-

३. अनावश्यक बालों को ऐसे हटाहटा

रोम रहित कोमल व चिकनी त्वचा ही स्त्री के सौन्दर्य का परिचायक होती है। उनके बार शारीरिक न्यूनताओं के कारण चेहरे पर एवं हाथ-पैरों पर बाल उग आते हैं, जिससे उसका सौन्दर्य समाप्त होने लगता है। उसके चेहरे पर छोटे-छोटे बाल उग जाते हैं। 'वैक्षिंग' आदि आधुनिक पद्धतियों से तुरन्त नियान तो ले जाता है, परन्तु इससे त्वचा के नैसर्गिक गुणों का डास भी होता है और त्वचा पर रोम या बाल और जल्दी बढ़ने लगते हैं। इससे स्त्री में हीन भावना आ जाती है।

अनावश्यक बालों को हटाने के लिए बाजार में सैकड़ों उपाय हैं, लेकिन उनसे यह बाल हटते नहीं हैं। एक बार आप इस प्रयोग को करके तो देखिए —

छिद्रिका को किसी पात्र में स्थापित कर उसके समझ धी का पीपक प्रचलित करें। फिर निम्न मंत्र का ३१ बार उच्चारण करते हुए जल को उस यंत्र पर चढ़ाए —

मंत्र

// उँ रुं कुं हुं हुं उँ //

Om Stum Kabum Hum Hrum Om

मंत्र जप की समाप्ति पर नित्य उस जल को पी लें। ऐसा २१ दिन तक करें। इसके बाव छिद्रिका को किसी वृक्ष की जड़ के पास डाल दें। प्रयोग के बाव परिवर्तन स्वतः ही सम्मने आने लगता है।

साधना सामग्री पैकेट - 60/-

४. कर्त्ता आप कील-मुंहासे से दुःस्त्रीहैं?

चेहरे का सौन्दर्य सभी को प्राप्त नहीं होता, यह भी सौभाग्य से मिलना है, परन्तु यदि कील-मुंहासे हो जाएं, तो सारा का सारा सौन्दर्य फीका पड़ जाता है।

बौद्धन के आगमन के साथ ही किशोर-किशोरियों के चेहरों पर कुंसियां सी उभरने लगती हैं। इन कुंसियों को दबाने

या कोइने से चेहरे पर बाग पड़ जाता है ताकि वज्र से चेहरे पर अन्य जगह भी मुहासे होने लगते हैं। ऐसे में चेहरे का समाप्त आकर्षण समाप्तप्राप्त हो जाता है।

कील या मुंहासे त्वचा में तैलीय तत्व के बढ़ जाने से होता है। इस प्रयोग के माध्यम से आप अपनी त्वचा को सुन्दर और आकर्षक बना सकते हैं, और कील मुंहासों पर नियंत्रण प्राप्त कर सकते हैं।

किसी पात्र में आर्थिय को स्थापित कर उसके ऊपर कुंकुम, अक्षत, पुष्प चढ़ाने हुए उसका पूजन करें तथा निम्न मंत्र का १५ मिनट तक जप करें —

मंत्र

// उँ चं चं चं ललिते दुं दुं दुं उँ //

Om Cham Cham Cham Lalite Dum Dum Dum Om

यह क्रम ११ दिन तक करें तथा प्रयोग समाप्ति के बाद उस आर्थिय को किसी मंदिर में रखकर आ जाए।

साधना सामग्री पैकेट - 70/-

५. कर्त्ता आप पेट की बढ़ती चर्बी से परेशान हैं?

पेट की चर्बी का बढ़ना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है और फिर चर्बी बढ़ने से दूसरे रोग भी जन्मते हो जाते हैं। इससे निजात पाने के लिए लोग या तो त्वचा का सहारा लेते हैं, या तो शारीरिक व्यायाम का, या फिर 'डायरिंग' (उपवास) का, लेकिन इससे कोई विक्रोष अन्तर नहीं पड़ता।

स्त्री ही या पुरुष बेडील पेट उसके सौन्दर्य को समाप्त करता ही है, ऐसे व्यक्ति हीन-भावना से ग्रस्त रहते हैं और हास्य का पात्र बन जाते हैं। कई कार्यों को करने में तकलीफ होती है, बढ़े हुए पेट के कारण रोग शोषणा से उनके शरीर में घर कर लेते हैं। लेकिन आप इस पेट की चर्बी को घटा सकते हैं, इस प्रयोग को अपना कर।

आपके पेट की चर्बी किसी भी उपाय से नहीं घट रही है, लगानार बढ़नी ही जा रही है, तो इसके लिये आप भारोत्तक को बायें हाथ की मुट्ठी में लंब करें तथा पूर्णिमुख खड़े होकर नित्य ११ दिन तक निम्न मंत्र का २० मिनट जप करें —

मंत्र

// उँ हौं दुं दुं उँ फट //

Om Hreem Drum Drum Om Phat

प्रयोग समाप्ति के पश्चात भारोत्तक को नदी अथवा तालाब में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 75/-

दुक्षा
मेरा जिट

दस दिव

द्वारा म
रहे। वे
की आंर
और ए
के मन
हैं। अठ
मन की
पास पर

सद्गुरुदेवः मुनि स्वरूप

मननात् सर्व मंत्राणां महदभिः परिमानबात् ।
मार्गणाच्यैव शिष्याणां मुनिश्चेति पदाभिधः ॥२॥

अथात् – मंत्रों के निरंतर मनन करने हो, विद्वानों द्वारा माननीय होने हो, जमरित एवं श्रद्धालु शिष्यों एवं साधकों की खोज करके उन्हें शरणागति प्रदान करने के कारण गुरुवेव नामाचरण, मुनिवद् ब्रह्मद यंबनीय हैं।

उन दिनों हरिद्वार में ज्यादा भीड़-भाड़ नहीं होती थी। धारों तरफ मलोरम वल थे, वहीं पठित पावनी गंगा के टट पर श्री गुरुदेव नए मंत्र तथा साधनाओं के अनुष्ठान में इतने लिमठन थे, कि वे भूल ही गए, कि मैंले चार दिन से अब का एक दाना भी नहीं छापा किया है।

पास के गांव से गुरुवेव का एक शिष्य थोड़ा आटा लेकर आया और गुरुदेव ने जल्दी से पूरे आटे की एक रोटी बनाकर आग में डाल दी। भूख की तीव्रता इतनी बढ़ गई, कि मन ने कहा रोटी थोड़ी सी सिक गर्नु है, तोड़ कर खा लूँ।

मन को समझाया डउनी भी क्या व्याकुलता? किन्तु अगले ही पल मन नहीं माना और एक दुकङ्गा ठोड़कर जैसे ही सुंह के पास ले गए, दुरुलट अपने आप मन रलानि और क्षोभ से भर उठा – क्या मेरा जियंत्रण मन पर से समाप्त हो गया है?

ऐसा विद्वार उठते ही गुरुदेव ने पूरी रोटी उठाकर गंगा में डाल दी और प्रण किया, कि अब मैं पुनः दस दिन तक अन्न ग्रहण नहीं करूँगा। और फिर वे मंत्र साधना के अनुष्ठान में रहा हो गए।

वचन और कर्म के
द्वारा मन पर सदैव विजयी ही रहे। वे तो सदैव शिष्यों के मन की आंखों से ही देखते रहे हैं और एक समर्थ मन ही दूसरे के मन की बात जान सकता है। अटाएव आज भी शिष्यों के मन की बात सद्गुरुदेव के पास पहुँचती ही है।



महावक्त्रः महावक्ता मांगलिकः महामुनिः ।
मुनिमानस हंसोऽयं मार्तिपः मधुराकृतिः ॥

आप योगी हैं, योगेश्वर हैं, मंगलमय हैं, देवपुरुष हैं और अनन्त सौन्दर्यमय हैं, आप शिष्यों और साधकों के हृदय रूपी मानसरोवर में विचरण करने वाले राजहंस हैं। आपको बारम्बार प्रणाम स्वीकार हो।

— 'निखिलेश्वर सहस्रनाम' से उद्धृत

नवरात्रि नवदुर्गा साधना

भ

गवती दुर्गा का शक्ति स्वरूप अत्यन्त तेजस्विना युक्त है, उनके तेज को आत्मसात कर पाना प्रत्येक मनुष्य के बास की बात नहीं है, एक साधारण मनुष्य उनके भजन सो गा सकता है, उनकी प्रकृति तो कर सकता है, लेकिन साधना करने की क्षमता यिर्फ नाथकों में ही होती है, जो पूर्णता के साथ भगवती दुर्गा के शक्ति स्वरूप में निहित रह सकते हैं। भगवती दुर्गा की साधना से वे स्वयं ही शक्ति स्फुलिङ्ग बन कर साधक में समाहित हो जाती है, निम्नसे साधक के अंदर समस्याओं से लाशन की क्षमता आ जानी है और वह हर क्षेत्र में विजय प्राप्त करता है।

नवरात्रि में गां दुर्गा के नी स्वरूपों की अलग-अलग साधना करना साधक के जीवन का दुर्लभ सौभाग्य होता है। दुर्गा के ये नी स्वरूप हैं— शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कृष्णांजलि, स्वरूप देवी, कान्त्यायनी, कालशत्रि, महागीरी, सिद्धिवाची।

इन नी स्वरूपों की साधना करने से साधक को प्रत्येक दुर्गा से सम्बन्धित आलग-अलग लाभ मिलते हैं। और इस प्रकार साधक को मात्र एक ही साधना से अनेक लाभ मिलते हैं। क्योंकि दुर्गा का एक स्वरूप जहाँ शब्दों पर विजय प्राप्ति में महायक है, तो वहीं, इसी स्वरूप रोग निवारण में सहायक है। कोई स्वरूप मनोकामना पूर्ति में महायक है, तो कोई स्वरूप धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि प्रदान करता है। वस्तुतः दुर्गा के इन नी स्वरूपों की साधना से साधक के जीवन की सभी न्यूनताएं समाप्त होती हैं एवं उसे खिल्हा मिलती है।

इस बार 15. 3. 99 से नवरात्रि आरम्भ हो रही है। नवरात्रि नींवे बहुमूल्य तंत्रमय दिवसों पर यदि साधक गुरु चण्डों में बैठकर, अध्यात्म शिविर में उपस्थित होकर साधनारत हो, तो

उसके सौभाग्य की तुलना नहीं है, किन्तु किसी कारणवश यदि साधक गुरु चण्डों में नहीं पहुंच सके, तो उसे निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

पूज्य श्री सदगुरुदेव ने सर्व असमर्थ हो जाने वाले शिष्यों को सहारा दिया है। और कृपा करके यह साधना आपके लिए प्रवान की है, जिसे आप पर पर ही सम्पन्न कर सकते हैं।

इस प्रयोग के लिए आवश्यक सामग्री इस प्रकार है— ‘नवदुर्गा यंत्र’, ‘नवदुर्गा माला’, एवं नी दुर्गाओं की प्रतीक रूप में ‘नी शक्ति बीज’।

साधना क्रम में प्रयुक्त उपरोक्त सभी सामग्री आपने आप में पूर्ण चेतन्य व प्राण-प्रतिष्ठित हैं। इनका प्रयोग कैसे करें तथा इनके फल को प्राप्त करने के लिए किस मंत्र का जप करें, आदि पूर्ण साधना विधि पश्चिका के मार्च 99 के अंक में प्रकाशित होगा।

इस साधना के विविध लाभ हैं, जिनका कि विस्तृत विवेचन मार्च 99 के अंक में ही दिया जाएगा।

आप आज ही इस साधना सामग्री पैकेट का ऑर्डर जोधपुर कार्यालय में भेज दें, जिसमें समय पर आपको सामग्री प्राप्त हो सके।

जोधपुर कार्यालय में ऑर्डर प्राप्त होने पर आपके पास मात्र 280/- की बी. पी. पी. से उपरोक्त समस्त सामग्री भेज दी जायेगी। आप इसना ऑर्डर भेजने में विलम्ब नहीं करें, क्योंकि अत्यंत संख्या में उपरोक्त सामग्री तैयार हो सकी है।

नवरात्रि के अवसर पर किए जाने वाली इस साधना का साधना पैकेट भाष्य बी. पी. पी. द्वारा जोधपुर से भेजा सकते हैं—

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग लाई कोट कालोनी,
जोधपुर - 342001, फोन : 432209, 432010

जीवन में तुम्हें झकड़ा नहीं है, गिरफ्तर आजे बढ़ना है और इस आजे बढ़ने में जो आज़ज्ज्वल है, जो तृप्ति है, वह जीवन का सौभाग्य है।

— पूज्यपाद सदगुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी



बापु साल पर शिष्यों के लिए तोहफा -

पूज्यपाद सद्गुरुदेव की डायरी से प्राप्त, उन्हीं की हस्तालिपि में

उनका शायराना अन्दाज़

अनोन्तक तो भा जन्मदा भै, किसी भी बाद को लेकर
कि अब फिर तमन्तके सराए जी देखा भैन।

बलों पे नाम जोरा छागया तो यहीं उत्तापेही
बहुत ले दीन अलोची यह आपे लड्डु चारोंगी
युठाना जी युके वहां तो बार्गुन बार्गुन बार्गुन
बहुत भै यार आवाज़ उल्लेख उल्लेख (लोकगीत)

१६.३.१९६८



तुम्हें देखना हूँ तो बहुत है कि तुम् उदास है
तोरे बिन रहना रहना नहीं कि जोत भास है
उस भासका से लिंगभी लग गई है लास रोलह

अधिकारी
जोकर्जी जामानहु तेर लाभ अद आलगी फिर है।

जाने ने अंधेरा जल औ केलाया है जीवन ने
जलाकर युद्ध की जी दे रोगनी, यह जोरी उदास है।
जब तेर के जीने पा लिया निलकुल जाने दी
जालान जाने अब लाघ फललाभी उदास है।

ऐ दर्दे दिल तु अब गह होड़ दे उमर्ट आने की
कि इष्ठ मुहूर्त त्वं रखावों मे खोकर जी लिया थक

कि अब तो मौतके आगास में रोने की हसरत है
बहुत बुख भर लिया थक वहूत दिन जी लिया थक।

- २८ - ३.८.६८

ऑडियो कैसेट्स

प्रकृति पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी की दिव्य व तेजश्वी गाणी में शिवरात्रि एवं नवरात्रि में सम्पन्न की जाने वाली साधनाओं पर गृह गरमीक प्रवचन तथा प्रामाणिक साधनात्मक गिधि-विधान।



शिवरात्रि के अवसर
पर उपयोगी कैसेट्स -

- ◆ शिवाश्री पूजन विधान
- ◆ यारदेश्वर शिवलिंग पूजन
- ◆ शिव भहिन श्तोत्र (अर्थ शहित)
- ◆ शिव सूत्र
- ◆ द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग साधना ७, वाराणसी (६ आग) : इन कैसेट्स में है निम्न प्रवचन/ प्रयोग -
— १. विष्णु प्रवचन, २. महामृत्युजय प्रयोग, ३. काल धर्म प्रयोग, ४. रोग मुक्ति व नववाहन शांति प्रयोग, ५. यारदेश्वर शिवलिंग पूजन, अमृत घट स्थापन प्रयोग, ६. द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग साधना एवं सिद्धाध्यम युक्त गृह स्थापन प्रयोग।

शृष्टि पर्य नवरात्रि

पर उपयोगी कैसेट्स -

- ◆ चैत्र नवरात्रि ५५ (कर्णाली) दिल्ली (७ आग) : इन कैसेट्स में है निम्न साधना विधान/ प्रयोग -
— १. नववार्ष मंत्र रहस्य एवं साधना विधि, २. शक्ति साधना रहस्य व वीश्वा, ३. कल्पवक्ता जगदमना मनोकामना प्रयोग, तत्त्वज्ञ महाकाली प्रयोग, ४. महाकाली आवाहन साधना, ५. कृष्णाण्ड प्रयोग, ६. पाप-दोष निवारण आकृतिक धन प्राप्ति तारा महाविद्या साधना, ७. मार्कण्डेय प्रणीत काल्याशी प्रयोग।
- ◆ जां अग्रवती जनदर्जने शत शत तंदन ◆ दुर्गाचिन

* व्यौधावर प्रति ऑडियो कैसेट - ३०/-

पूज्य पाद सद्गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी के महाप्रयाण पर धनी जिस वीडियो कैसेट की आपको प्रतीक्षा थी, वह अब उपलब्ध है।
कृपया अपने ऑर्डर जोधपुर के पटे पर गोट कराएं।

वीडियो कैसेट
महाप्रयाण
न्यौधावर - ३००/-

... सन्ध्यक इस पते पर करें :
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.)
फोन 0291-432209, टेली फैक्स 0291-432010

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४ फोन : 011-7182248, टेली फैक्स : 7196700
ज 'जनवरी' ११ मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '३२' १८

यदि आप साधन के-११ चाहते हैं तो साधन साधी करी हो भी प्राप्त कर सकते हैं अपनी आदेश लिखता है, हम आपको बैठी से साधी भेज देंगे, प्रत्येक ऑडियो कैसेट की जानकारी नीचे ।
टेलीफ़ोन : 0291-432010 पर अपना चाही आदेश लिखता है, हम आपको बैठी से साधी भेज देंगे, प्रत्येक ऑडियो कैसेट की जानकारी नीचे ।



महागणपति साधना

— देवताओं में प्रथमाराष्ट्रा भगवान् श्रीगणेश के विभिन्न स्वरूपों की ये साधनाएं जो किसी भी माह की गणेश चतुर्थी अथवा विनायक चतुर्थी को सम्पन्न की जा सकती हैं।

श्रावणलन्दमध्यं देवं किर्मिलं स्फटिकाकृतिम् ।
उद्धारं सर्वदिवावरं हृषीकेशुपास्महे ॥
ओंकारमाध्यं प्रवदन्ति संतो वाचः शुतीवामपि वृज्यग्निः ।
गणजनानं देवतन्या नताइषि भजेऽहमध्येन्दुकृतावतस्मृ ॥

जो ज्ञान तथा आनन्द के स्वरूप है, निर्मल स्फटिक तुल्य जिनकी आवृत्ति है, जो समस्त निद्याओं के परम आधार है, उन उपर्योग गणेश की मैं उपासना करता हूं, जो आदि औंकार है, वेद की कथाएं भी जिनकी स्तुति करती हैं, जिनके पिर पर अर्द्ध बन्द शोभायमान है, समस्त देवता जिनके चरणों पर नमस्ताक है, उन श्री गणेश की मैं बन्दना करता हूं।

भगवान् श्री गणपति सभी देवताओं में सर्व पूज्य और आविदेव माने गए हैं। गणपति भगवान् शिव और आदि शक्ति पार्वती का कल्याणकारी स्वरूप है और इनका सम्पूर्ण स्वरूप कल्याणकारी एवं विघ्नहर्ता है। आदि काल से शास्त्रों में यह विधान आया है, कि जीवन में कैसा भी कार्य हो, पहले गणेश पूजन आवश्यक है, उसके बिना कार्य सफल हो छो नहीं सकता है। सर्वप्रथम पूजन का कारण गणपति समस्त देवी-देवताओं के आशीर्वाद एवं वर से युक्त है। जब मां पार्वती के गर्भ से गणपति का जन्म हुआ, तो तीनों लोकों में स्थित देवताओं ने आशीर्वाद प्रदान किया। 'ब्रह्मविवर्त पुराण' में वर्णन आया है, कि शिव के पुत्रोत्सव पर सभी देवी-देवता एकत्र होकर मंगल आशीर्वाद प्रदान किया —

विष्णुराच — शिवेन्द्र तुल्यं ज्ञातं ते पस्मादुश्च वास्तक ।
पराङ्म मे सवा तुल्यः सर्वसिद्धिश्वरो भव ॥

विष्णु बोले — हे बालको! शिव जैसा तुम्हारा ज्ञान पृथ्वे परमायु हो, मेरे समान पराङ्म हो और समस्त मिलियों के अधीनवर हो।

ब्रह्मोवाच — वशस्ता ते प्रजत्यौर्ण सर्वपूज्यो भवाविष्य ।

सर्वेषां पुरातः पूजा भवत्वतिसुदुर्लभा ॥

ब्रह्म बोले — तुम्हारे यज्ञ में समस्त जगत आच्छब हो, गीष ही लबके पूज्य बनो और नगी लोगों के पहले तुम्हारी अति दुर्लभ पूजा हो ।

धर्म उवाच — सवा तुल्यः सुधर्षिष्ठो भवान्भवतु दुर्लभः ।

सर्वद्वृश्च दद्याद्युक्तो हरिभक्तो हरे: समः ॥

धर्म बोले — मेरे भगवान् आप दुर्लभ धर्मात्मा हों, सर्वज्ञ, वयालु, द्वारेभक्त और भगवान के समान हों ।

महावेव उवाच — दातारभ्यः सवा तुल्यः हस्तिभक्तश्च वृद्धिसाजः ।

विद्यवाच्युपर्यवाच्छ्राद्धते वान्तश्च प्राणवल्तमः ॥

शिव बोले — हे प्राण प्रिय! मेरे भगवान् दाता, त्रिभक्त, वृद्धिसाज, विद्यवान्, पुण्यवान्, शान्त और वसनशील हों ।

लक्ष्मीस्वाच्च — सम वित्तिश्च येहे ते देहे भवतु शाश्वती ।

पतिकृता सवा तुल्या शान्ता कान्तर मनोहरा ॥

लक्ष्मी बोलीं — तुम्हारे देह-गेह में मेरी निरन्तर विष्णु रहेगी, मेरे ही समान पतिक्रता, मोहर और शान्ता स्त्री तुम्हें मिलेगी।

सरस्त्युवाच — सवा तुल्या सुकृतिराधारणाशत्तिरेव च ।

स्मृतिविवेचना शरिरं भवत्वतितयां सुत ॥

सरस्यती बोलीं — हे सूत! मेरे समान उत्तम शक्ति हो, अत्यन्त धारणा शक्ति, स्मरण शक्ति और विवेचन शक्ति हो ।

सावित्र्युवाच — वशस्ते वैरजनन्ते वैदिकान्ती भवाविष्य ।

मन्मत्रज्यवशीलतश्च प्रवरो वैवरदिजामः ।

सावित्री बोलीं — हे ब्रह्म! मैं बेदमाता हूं, तुम शोध वेदजानी हो, मेरा मंत्र जप करने का स्वामान और वेदवेताओं में श्रेष्ठ हो ।

मैं ब्रह्म के बाद एक विशेष सान्देश लेकर तुम लोगों के लीच
उपस्थित हुआ हूं, एक विशेष घेताना जात्रत करने के लिए पैदाहुआ हूं।

— पूज्यपाद सदगुरुदेव डॉ० लालायण दत्त श्रीगाली जी

दल का
नणपति
उपासक
हैं एवं वे
गणपति
उन्हें ल

बंगल घट चूलने
गणेश गांड से फ़ि
गणेश की प्रती
वसन्त पंचमी
गणेश की पूजा
देव में बहुला
विधि-विधान
भारत में भाद्रप
समारोह के सा
विश्वर्गन यम्प
पंज
आधां राजस्व
के पूजन का नि
पर
है— अलग-उ
की साधना वै
की विशेष सा
है। ये साधन
चतुर्थी का प्र

उत्तिष्ठान
(तंत्र दोष-
वि
प्रयोग होता
आती है। उस
हो, दीन-हीन
और अशानि



हिमालय उवाच— श्रीकृष्णो ते मति: शश्वद्भक्तिर्भवतु शश्वती ।
श्रीकृष्णतु रथे युणवानभव कृष्णवरावणः ॥

हिमालय बोले— भगवान श्रीकृष्ण मैं तुम्हारी मति अविश्व
निरन्तर लगी रहे, उनकी शाश्वत भक्ति द्वारा प्राप्त है, उनके समान
गुणवान हो और कृष्णपरावण हो ।

मैनकोवाच— स्यमुद्गुरुर्यो जगमीयो कामतुत्प्रश्च रूपवाल् ।

श्रीयुक्तः श्रीयतिभवो धर्म धर्मस्तमो भव ॥

मैनका बोली— समुद्र के तुल्य गंगीर, काम के समान
स्वपवान, विष्णु के समान श्रीयुक्त और धर्म के समान आर्मिक हो ।

बसुंप्रोवाच— क्षमाशीतो मत्या तुल्यः शरणः सर्वशत्वाल ।

जित्विद्वन्नो विद्वन्नित्वश्च भव शर्व शुभाश्रवः ॥

पृथ्वी बोली— हे वत्स! मेरे समान क्षमाशील, शरणप्रद,
समर्प्त रत्नद्युक्त, विष्णुरहित, विष्णविनाशक और शुभसदन हो ।

ऐसे उच्च गुणों से युक्त भगवान गणपति जो कि शिव के
समान महायोगी भिष्म, लिंगदायक, शुम ऐश्वर्य सम्पत्ति, पूर्वुत्त्व
तथा अति विश्वारद हैं, जिनका ध्यान ही समस्त मंगलों से युक्त और
मंगलों का आश्रय है। जिस धर में गणपति विराजमान रहते हैं, वह धर
भवा मंगलद्युक्त होता है ।

गणेश के उपरोक्त स्वरूप ने ही यह स्पष्ट है, कि गणपति का
न्वस्पृष्ट विश्वाल एवं शक्ति और शिवत्व का साकार रूप है। इन
दोनों तथ्यों का सुखद स्वरूप ही प्रत्येक वार्य में पूर्णता प्रदान कर
सकता है ।

गणेश परिवार कितना अधिक महान है, कि मां पार्वती है,
पिता शिव है, प्राता भगवान कार्तिकेय है, उद्धि और सिद्धि दो पनियां
हैं, निनसे शुभ और लाभ दो पुत्र हैं अर्थात् एक गणपति की साक्षाता में
शिव, पार्वती, कार्तिकेय, उद्धि, सिद्धि, शुभ और लाभ की पूजा का
फल प्राप्त होता है ।

श्री गणेश तेज द्वादश लाभ

सुमुख्यश्चैव कदन्तश्च कपिलो जग्जकर्णकः ।

लम्बोवरश्च विष्णुर्विष्णवाशो विज्ञायकः ॥

धूमकेतुर्जग्नाय्यक्षरो भ्रातृष्णद्वो जज्जनकः ।

द्वादशैतानि नामान्ति यः पर्ते च्छुगुण्यादिपि ॥

विद्वरस्मे विवाहे च प्रदेशे विर्जये तथा ।

संज्ञाये संकटे वैव विद्वस्तस्य न प्राप्यते ॥

यह स्लोक गणेश पूजन और उनकी साधना-उपासना के

महत्व को विशेष स्वरूप से स्पष्ट करता है, इनका तात्पर्य यह है, कि जो
व्यक्ति विद्वा प्रारम्भ करते नमव, विवाह के समय, नगर में आयवा नद
ग्रन्थ में प्रवेश करते समय, यात्रा में कहीं बाहर जाते समय, संश्राम
अथवा शत्रु और विपरिति के समय, यदि साधक श्री गणेश जी के इन बाहर
नमों का स्मरण करता है, तो उसकी उद्देश्य की पूर्ति में आयवा कार्य की
पूर्णता में विश्वे प्रकार का विष्णु नहीं आता है। गणेश जी के बारह नाम
हैं— सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोवर, विष्णु, विष्णविनाशक,
विनायक, धूमकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द, और गजानन ।

लोक जीवन और गणपति

गहनगपति का लोक जीवन में, लोक कल्याणों में जो विवरण
एवं स्थान है, उतना विवरण किसी अन्य देव शक्ति का नहीं होता,
नामान्य बातचीत में किसी कार्य का शुभारम्भ करने की, कार्य का
श्रीगणेश का जाता है। किसी भी प्रकार के पूजन में यदि गणेश जी
की मूर्ति नहीं होती है, तो पंडित लोग सुपरी पर मौली बांध कर गणेश
की स्वाक्षरा करते हैं, दीपावली पर्व ही, तो लक्ष्मी के साथ गणेश जी
की प्रतिष्ठा निर्वित है। उत्तर प्रदेश में तो विश्वे जीवन के समय एक



तुम्हें विश्वोट करना है, बनावत करना है, अपने जीवन को ऊँचाई की
ओर अब्रसर करना है, तुम्हें अपने प्राणों को विश्वासित कर देना है, अपने
आप को भिटा देना है और पूर्णता को प्राप्त कर लेना है ।

— पूज्यापाद सद्गुरु रवेश डॉ० जारावण दत्त श्रीमाली जी

भगवान गणपति के पूजन में तुलसी दल का प्रयोग सर्वथा वर्तित माना जाया है। गणपति को प्रसन्न करने के लिए उनके उपासक वृद्धावल (दूध घास) अर्पित करते हैं एवं नैवेद्य में लड्डू घड़ाते हैं। भगवान गणपति को रक्ष वर्ष विशेष प्रिय है, अतः उन्हें लाल रंग का आसन देना चाहिए।

मंगल धूष बूल्हे के पास रख दिया जाता है और कढ़ाही का प्रारम्भ नणेश गांठ से किया जाता है, जल में भेरे घड़े अथवा मंगल कलश में गणेश की प्रतिष्ठा सभी शुभ कार्यों में सम्पन्न की जाती है। बंगल में अनन्त पंचमी महोत्सव तथा शिक्षा संस्कार समारोह में सर्ववती-गणेश की पूजा की जाती है। गणेश चतुर्थी को उत्तर-प्रदेश के अवधि क्षेत्र में 'बहुला चौथ' के रूप में सम्पन्न किया जाता है, जिसमें माताएं विधि विधान रहित गणेश की पूजा करती हैं, महाराष्ट्र तथा दक्षिण भारत में भाद्रपद सुदी चतुर्थी को स्थान-स्थान पर गणेश की प्रतिमा समारोह के साथ प्रतिष्ठित की जाती है और अनन्त चतुर्दशी को गणेश विसर्जन सम्पन्न किया जाता है।

पंजाब अथवा बंगल, महाराष्ट्र अथवा मध्य प्रदेश, तमिलनाडु अथवा राजस्थान - प्रत्येक प्रदेश के साहित्य में जन जीवन में गणेश के पूजन का विधान है और वह पूजन का एक अंग ही बन गया है।

परशुराम तंत्र में गणपति पूजन का विशेष विवरण आया है - अलग-अलग कार्यों के लिए गणपति के अलग-अलग स्वरूप की साधना की जाती है। गुरु जाजा से गणपति के विभिन्न स्वरूपों की विशेष साधना पद्धतियां साधकों को नववर्ष पर प्रदान की जा रही हैं। ये साधनाएं किसी भी मास की गणेश चतुर्थी अथवा विनायक चतुर्थी को प्रारम्भ किया जा सकती हैं।

उचित गणपति साधना

(तंत्र द्वाष-बादा निवारण के लिए)

किसी प्रथा या किसी व्यक्ति के ऊपर जब भी तंत्र बाधा या प्रयोग होता है, तो उस व्यक्ति के जीवन में सर्वनाशकीय दशा सामने आती है। उससे प्रभावित व्यक्ति चाहे वह कभी लक्षणपति या करोड़पति हो, तीन हीन और दरिद्र बन जाता है। घर में तनाब, कलह, विवाद और अशान्ति का बातावरण बना रहता है। मान-प्रतिष्ठा, यश सभी

शूल में मिल जाता है। आज के युग में आप के स्वस्य जीवन से इधर्हा करने वाले शब्द, मित्र या आज्ञा-पाल के रहने वाले लोग कभी भी योग्य ने मन-मुदाव को कारण बना कर आप पर यह तंत्र प्रयोग कर सकते हैं। ये तांत्रिक प्रयोग आप के जीवन को तहस-नहस कर देने के लिए पर्याप्त होते हैं और आपका दराता-खेलता जीवन बरबाद होकर रह जाता है।

इसके निवारण के लिए आप उचित गणपति का प्रयोग करें। इस प्रयोग के माध्यम से आप तंत्र बाधा से बच सकते हैं।

आप प्रातः स्नान आदि नित्य क्रिया के बाद आपने पूजा स्थान में पूर्वी ओर उत्तर की ओर मुख करके बैठें। शूष और दीप जलालें। आपने सामने पंचपात्र में जल भी लें। इन सभी नामस्थितियों को आप चौकी पर रखें जिस पर लाल बस्त्र विद्या हुआ था। पहले र्नान, तिलक, अक्षत, धूप, दीप, पूज्य आदि से गुरु चित्र का संशिद्ध पूजन करें। उसके बाद गुरु मंत्र की दो माला मंत्र जप करें।

गणपति पूजा

फिर गुरु चित्र के सामने किसी प्लेट पर कुंकुम या बेगर ये न्यस्तिक चिह्न बनाकर उचित 'गणपति चौथ' को स्थापित करें।

दोनों हाथ नोडकर प्रार्थना करें -

३५	जगत्कर्ता	भूतजगत्प्रियसेवितं	
कपित्थ	जड्डू	कस्त्रारु	मध्यरात्रं ।
दमस्तुत		शोकविद्राशकारकं	
ज्यामि	विद्वेषवर	एव	पहुङ्गजम ॥

फिर निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए पूजन करें -

३६	जं संजलमूलत्वं ज्ञमः स्नानं समर्पयामि ।
३७	जं एकवन्तात्य ज्ञमः तिलकं समर्पयामि ।
३८	जं सुमुखात्य ज्ञमः अक्षतात् समर्पयामि ।
३९	जं लक्ष्मीदेवशरवस्त्रं धूपं दीपं आद्याप्त्यामि, वर्णामि ।
४०	जं विद्वन्नजाशरात्य ज्ञमः पुष्ट्यं समर्पयामि ।

इसके बाद अक्षत और कुंकुम मिलाकर निम्न मंत्र बोलते हुए चंद्र पर चढ़ाएं -

ॐ लं नमस्ते नमः ।	ॐ त्वमेव तत्वमसि ।
ॐ त्वमेव केवलं कतासि ।	ॐ त्वमेव केवलं पतासि ।
ॐ त्वमेव केवलं हतासि ।	

'ॐ गणाधिपतये नमः'। बोलकर एक आत्मनो जल धंक पर चढ़ाएं।

**तुम्हें योगवान नदी की तरह बहते हुए सगुरु में विशर्जित होना है,
गुरु में अपने आप को लीन कर देना है, अपने आप को फना करते हुए,
अपने जीवन की पूर्णता को प्राप्त कर देना है।**

- पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ० जाराद्यन दत्त श्रीमाली जी

गणेश का वर्णन कई स्थानों पर आया है और अनुभवों से यह सिद्ध हुआ है, कि तत्परती की साधना जीवन में मनलाभारी एवं अद्यंत अमृतकूल सिद्ध हुई है।

बाला हरिदास जी प्रबल गणेशोपासक थे। वे गणपति की एक छोटी सी मूर्ति को अपनी आँखों के कोर में रखते थे, जो कि राहु के बराबर थड़ी थी। उन्होंने बाला, कि कलिद्युग में दीयातिशीय कलाकारक देव ही गणपति हैं। गणेश की प्रदीपाकरण हुए उन्होंने कहा है, कि यदि हम लिट्या प्राप्तः उठते समय गणपति का स्मरण कर लें, तो सारा दिन प्रसन्नता से बीता है, और उस दिन विशेष शुभ प्रलयावधन साधारण भिलते हैं।

गणपति पूजन के बाद निम्न मंत्र का 'मृग माला' से 'माला मंत्र जप १५ दिन तक नियमित लप से करें—

// उ३५ गं दुं तत्रबाधा लियारण्य श्रीजग्नेशशय स्वरहा //

Om Gam Hum Tantreshandha Nivaranasya
Shreegangameshshay Swaha

प्रयोग नमान्ति के बाद यंत्र और माला को ललत वस्त्र में बांध कर लिनी नहीं या तालाब में विसर्जित कर दें। यह प्रयोग प्राप्तः ५,१० रुपये से ८,४५ के बीच में पूर्ण कर लेना चाहिए।

साधना सामग्री पैकेट — 280/-

विजय गणपति साधना

(समरता विद्या, बालाओं शत्रुओं पर पूर्ण विजय के लिए)

गणपति का यह ऋषस्त्र नीबू और प्रचण्ड शत्रुहन्ता होता है। जीवन में कभी भी, किसी भी दाण, किसी भी भोड़ पर कोई भी शत्रु खड़ा हो सकता है। इन पर विजय प्राप्त करने के लिए सौरव आयुधों से सलच्छ रहना चाहिए। निम्न जीवन में शत्रु बाधा न हो, वह शीर्घर्षण जीवन नहीं रहेगा जा सकता। शत्रु हो और उसका पौरुषता के नाय भुकाबला किया जाए, यही इन प्रयोग का मुख्य पथ है। यदि इन शत्रुओं से आपका सामना है, तो निश्चित रूप से यह साधना आपके लिए उपयोगी है। यदि कद्याचित अवसर नहीं आया है, आप शत्रु बाधा से निर्दन्त हैं, फिर भी यह प्रयोग आपके लिए उपयोगी है, क्योंकि इस प्रयोग को सम्बन्ध कर भविष्य में आने वाली शत्रु बाधा से सुरक्षा का पूर्व उपाय कर लेते हैं।

छत्रपति शिवाजी ने स्वयं को अपनी कुलदेवी भवानी की

उच्छिष्ट गणपति साधना में विधिविशेष होता है। सभी साधनाओं में गणपति विशेष/यंत्र का पूजन होता।

आराधना के साथ इस दुर्लभ और उच्चतम साधना से सुरक्षित कर रखा या, इसी का परिज्ञाम था, कि अनेक दुर्वान्त शत्रुओं से विरोधे पर भी निरंतर सतत रहकर अपने शत्रुओं को मात देते रहे और विजयशी इस साधना के माध्यम शिवाजी के ही पक्ष में आवश्यक है। विजय गणपति साधना के माध्यम से आप भी दुर्वान्त शत्रुओं पर निश्चित रूप से विजय प्राप्त कर सकते हैं।

प्राप्तः 'उच्छिष्ट गणपति माध्यम' में बताई हुई विधिनुसार गुरु पूजन और गुरु मंत्र जप सम्पन्न करें। इसके बाद 'विजय गणपति' की भी पूर्वोक्त गणपति पूजन विधि से पूजा कर स्नान, तिळक, असत, धूप, दीप, पुष्प आदि आर्पित करें।

इसके बाद विशेष के द्वारा और चावल की ढेरी पर 'विजय-सिद्धिदा' को स्थापित कर, उसका कुंकुम अशत से पूजन करें। तत्प्रथात् 'विजय गणपति माला' से १५ माला ५ दिन तक नियमित लप से जप करें—

// उ३६ ह्रौं कर्त्तौं श्रीं गं शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु शत्रु //

Om Hreem Krem Shreem Gam Shatru Baadhaa
Nivaranasya Phat

यहस्ये दिन सभी सामग्री को किन्नी मन्दिर में रख आवें।

साधना सामग्री पैकेट — 260/-

है, ब्रह्मा
दाणी,
दाक्षपाता
स्वामी,
स्वरूप
सिद्धि भ

हेमा भी भयंकर
बन जाता है।

'हुम्'
गुरु मंत्र आदि
'हेरम्ब माला'

// ३
Om Kles
जप

कर पूजा स्थान
योग सा जल य
स्थान में स्थापि

पाठदेवत्वर
(आकर्षित्वा

तथा
माध्यम से जी
बना जा सकता
सम्पूर्ण जीवन
परिष्रम और
पलायन कर
स्थिति में आ
अवश्य सम्पन्न
परि
संस्पर्शित ता
भृत्यपूर्ण खो

पु



जीवन में किसी भी क्षण जब गुरु प्राप्त होते हैं, उनसे दीक्षित होकर व्यक्ति जब हृदय में गुरु को धारण कर लेता है, तभी वह औतिक दर्य आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है।

— पूर्वद्युपाद सद्युरुद्युवेऽपि ३० नारायण ददा श्रीमाली ऊ



गणपति को ब्रह्मणस्पति कहा गया है, ब्रह्मण शब्द का अर्थ है — वाक् और वाणी, अतः ब्रह्मणस्पति का ताटपर्य वाक्पति, वाचस्पति अथात् वाणी का स्वामी, अतः गणपति साथना के किसी भी स्वरूप को सम्पद्ध करने से वाणी एवं विद्या सिद्धि भी साथ ही साथ प्राप्त होती है।

केत्ता भी मयंकर रोग हो, उपर नियंत्रण प्राप्त कर स्वनश यौवनवान बन जाता है।

'उच्छिष्ठ गणपति भाधना' में वर्णित विधि से गुरु पूजन, गुरु मंत्र आदि जप करें तथा 'हेरम्ब गणपति यंत्र' का पूजन करें। फिर 'हेरम्ब माला' से निम्न मंत्र की ३ माला ३१ दिन दिन तक करें—

// ॐ कर्त्तृ हीं दोजवारशत्र्य हेरम्बाय फट् //

Om Kleem Hreem Rognashay Herambaay Phat

जब समाप्ति के पश्चात् किसी जल भरे पात्र में वंत को डूबे कर पूजा स्थान में रख दें। दूसरे दिन उसी पात्री भी इनाम बत ले और योहा सा जल घाषण करें। प्रयोग समाप्ति के बाद माला एवं वंत को पूजा स्थान में स्थापित रहने दें, और एक माला मंत्र जप प्रतिदिन करते रहें।

साधना सामग्री पैकेट — 240/-

पाद्यकेष्वर गणपति साधना

(आकस्मिक दान प्राप्ति के लिए)

तंत्र शास्त्र की एक अद्भुत खोज है पाद्य गणपति, जिसके माध्यम से जीवन की दुर्भाग्यपूर्ण रेखा को समाप्त करके देहव्यवान बना जा सकता है। दरिद्रता जीवन का मनसे बड़ा अभिष्ठाप है, आज का सम्पूर्ण जीवनक्रम थने की चारों ओर धूम ढो रहा है। जब व्यक्ति अपने परिश्रम और भ्रष्ट ये उत्तरि नहीं कर पाता, लक्ष्मी उससे रुट कर पतनायन कर जाए, जीवन को जीना जब सम्भव नहीं हो पा रहा हो, उस स्थिति में आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए इस देव दुर्भाग्य साधना को अवश्य सम्पन्न करना चाहिए, जो साधक का परम सौभाग्य सिद्ध होगा।

पवित्रों के इस पृष्ठ पर प्रस्तुत इस साधना को सिद्धाश्रम संस्पर्शित तंत्राचार्य श्री स्वामी सर्वेश्वरनिद्वि ने अपनी जीवन के बहातपूर्ण खोज में से एक हीरक खण्ड के रूप में प्रदान किया है।

'उच्छिष्ठ गणपति साधना' में वर्णित विधि से गुरु पूजन, गुरु

मंत्र जप कर 'पाद्यकेष्वर गणपति' का पूजन करें। फिर विघ्न के दाढ़े व बाढ़े और 'शुभ' एवं 'लाभ' को स्थापित करें तथा उनका भी कुंकुम अक्षत से सामान्य पूजन सम्पन्न करें। पूजन समाप्ति के बाद निम्न मंत्र का 'सफेद हकीक माला' वे ११ माला २१ दिन तक जप करें—

// ॐ जं हूं श्री गणेशार धनं देहि तायद श्रीं हुं र्यं उ॒ नमः ॥
Om Cam Hum Shreem Ganeshaay Dhanam Dehi Daapay
Shreem Hum Cam Om Namah

प्रयोग समाप्ति के बाद गणपति, शुभ एवं जाम को पूजा स्थान में स्थापित कर दें तथा माला को विसर्जित करें।

साधना सामग्री पैकेट — 360/-

श्वेतार्क गणपति साधना

(सर्व मनोलाभामला पूर्ति के लिए)

मन शब्द में मनुष्य शब्द बना है और जब मन होगा, तो इच्छाएं होनी ही। अपनी अनेक इच्छाओं और मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिए ही तो मनुष्य सुवह से लगाकर रात्रि भोगे तक प्रवासरत रहता है, कार्यत रहता है। मनावन गणेश जी को तो समर्प्त सिद्धियों के प्रवाता माना जाया है, फिर भला ऐसा कैमे सम्पाद है, कि कोई मनोकामना की जाए और श्वेतार्क गणपति का मंत्र हो और मनोकामना पूर्ण न हो।

ऊपर बताई हुई विधि से गुरु पूजन, गुरु मंत्र आदि जप करें तथा 'श्वेतार्क गणपति' का पूजन करें। श्वेतार्क गणपति के दाढ़े एवं बाढ़े और समस्त मनोकामना की पूर्ति में सहायक रूप में 'अस्त्रि' एवं 'सिद्धि' का स्थापन करें। हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामन बोलकर जल को चूपि पर छोड़ें। फिर निम्न मंत्र का २१ दिन तक निट्य ३१ मिनट जप करें। प्रत्येक मंत्रोच्चारण के साथ एक अक्षत विघ्न पर चढ़ाएं।

// ॐ हूं श्रीं विजयव्यक्तव्य मनवाच्चित्तं सिद्धुच्चे उ॒ त्वं कर्त्तृ हीं फट् ॥
Om Hreem Kleem Vinasayakavya Manovachchhitam
Siddhaye Om Kleem Hreem Phat

प्रयोग समाप्ति को अपित किए अक्षत के दानों को एकत्र कर पदियों को खिला दें, तथा विघ्न को पूजा स्थान में स्थापित कर दें। मनोकामना पूर्ति छेत्र यह प्रामाणिक प्रयोग है।

'श्वेतार्क गणपति साधना' पृष्ठ मुख्येन ने आजीवीवं स्वरूप प्रदान की है, जिसकी साधना सामग्री आप नि:शुल्क प्राप्त कर सकते हैं। आप केवल ही पश्चिम सदस्य लगाएं/जो आपके परिवार के सदस्य न हों। और संलग्न पोस्टकार्ड भर कर भेज दें। ४३/- (दो पश्चिम सदस्यता शुल्क १९/- + १९/- डाक व्यय ४८/- - ४३/-) की जी. पी. से मंत्र मिल प्राप्त प्रतिशब्दिक 'श्वेतार्क गणपति', 'अस्त्रि', 'सिद्धि', भेज दें और आपके दोनों पश्चिमितों को वर्ष वर्षन्त प्रतिमाह पवित्रा भेजते रहेंगे।



गुरु चरणों में आपने आपको समर्पित कर देने के बाद आपको शारीर साधने की जरूरत नहीं रहती, जब आप हैं, ही नहीं, जब आपका अस्तित्व ही नहीं है, तब आप क्या शादीं ने... जब आपने समर्पण ही कर दिया तो फिर आप रहे ही नहीं, आपका शारीर गुरुमय बन गया।

— पूज्यपाद सद्गुरु लवेद डॉ० नारायण ददा श्रीमाली जी

सद्गुरुदेवः ग्रृष्णि स्तुतम्

कर्ता मंत्र तंत्राणां यंत्राणां सर्व तत्ववित् ।
ब्रह्मवर्दस्व मापद्धः ग्राषिराज अधिष्ठितः ॥३॥



लिए कोई मंत्र चाहता है।

गुरुदेव तो स्वयं ही शिव हैं, तुठाने में सबसे आगे, उन्होंने इट ही उसको मंत्र दे दिया। द्युवक ने छड़ी लिराशा से अपनी अस्मधृता व्यक्त की और कहा, गुरुदेव। मुझसे 'म्' का उच्चारण नहीं हो पाता है।

पूज्यगुरुदेव को उसके ऊपर वया आगई, उन्होंने तुरन्त एक दूसरा मंत्र देते हुए कहा - 'छेटा! यह जो दूसरा मंत्र है, यह मैंने खास तौरे लिए ही बनाया है, इसमें तुझे 'न' का उच्चारण नहीं करना पड़ेगा, जो दूसरे शिव के इसी मंत्र से दर्शन होंगे।'

यह तो पूज्यपाद के मंत्र सूच्ना, ऋषिरूप की एक ही झलक है। पूज्यपाद सद्गुरुदेव ने देश एवं विदेश के अनेक साधारणमक शिविरों में द्युग को देखते हुए अनेक नवीन मंत्रों का सृजन किया, नवीन तंत्र पद्धतियों को स्थापित किया, तथा दृष्ट द्वारा शास्त्रों को पुनरस्थापित किया।

उबके लिए
ऋषि शब्द का
उद्भोषण तो अट्टलप
प्रतीत होता है, वर्योंकि
वे तो समस्त ऋषियों के
पुत्रजन्मत स्वरूप ही हैं।



ज 'जबरी' ११ मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '४०' १८

अर्थात् - मंत्र तथा तंत्र के शाहत्र द्यनाकार, यंत्र निमणि की विधि को घन्मूर्णता से जालने वाले ब्रह्मतोज से मन्डित गुरुदेव नाशयण नाशात् ऋषिराज कहे गए हैं।

लदरीनाथ की यात्रा में एक छार, जिस स्थान पर पूज्य गुरुदेव निवास कर रहे थे, वर्षी का एक स्थानीय व्यापिक गुरुदेव से मिलने आया। चरणों में प्रणाम अर्पित कर उसने गुरुदेव से कहा, कि उसने गुरुदेव के सन्दर्भ में काफी कुछ सुन रखा है, और इसी क्रम में वह भगवान शिव के प्रत्यक्ष वशिनि के

जी का नाम उठारी है, जो नहीं हो जा सकता रूप जियंता नहीं वाले गुरुदेव मन्नाव ते - जगहाव करुणा से इ परिचय स विद्याई दे जाति या नहीं, अरि गिरिल उबके द्व दाशगिल गरिमा एवं की अतुभु

सद्गुरुद्विदः दार्थनिक स्मृति

सूर्य ज्ञान परो देवः काल ज्ञान परायणः ।
सर्वशास्त्रार्थं संवेता सर्वदर्शनसंविदः ॥४॥

अथात् - सूर्यविज्ञान एवं काल ज्ञान धारुत्र के अद्वितीय वेता, समस्त शास्त्रों के ज्ञाता तथा दर्शनशाहूत्र के प्रधानवेता, गुरुद्वेष नानायण प्रविद्व दार्थनिक और वरभान में यादाहनिहित के पद पद विभूषित हैं।

वे साक्षात् मानव रूप में ईश्वर ती होते हैं जो कि सी एक धर्म ग्रन्थ पर अथवा किसी एक धारणा पर जीवन भर प्रदर्शन न करके उनकी जीव को प्रथम सोपान से यात्रा प्रारंभ करकर उच्चावच शिखर तक तो जाने के लिए सतत चेतावन रहते हैं।

आज भारत में ही नहीं बल भारत की सीमाओं के बाहर भी पूज्यपात्र गुरुद्वेष डॉ. नारायण वह श्रीमाली जी का ज्ञान ज्योटिष्टत्र का पठायिवाची हो दुका है। उनकी सैकड़ों भविष्यवाणियां काल की कसौटी पर रखी उतारी हैं, किन्तु ऐसा व्यक्तित्व जो सूर्यविज्ञान का अद्वितीय ज्ञाता रहा हो, काल उसके समक्ष दया कुछ गौण बहीं ठीं जाता है? सैकड़ों शिष्य इस ज्ञान के साक्षी हैं, कि कैसे किसी उग्रहोमी को होते वेद सदसा गुरुद्वेष जे सुकृम रूप उपस्थित होकर घटिट होने से रोक दिया और ऐसा केवल वही कर सकते हैं जो स्वयं में काल के नियंता नहाकाल स्वरूप साक्षात् भगवान् द्विद ही हैं। अपली शरण में आए समस्त जनों की पीड़ा को ठुरण करने वाले गुरुद्वेष इस द्युग में साक्षात् जगन्नाथ ही हैं, तभी तो कहा है -

मन्त्रार्थः श्री जगन्नाथः, मदजुहः श्री जगद्गुरुः । मदरत्मा सर्व भूतत्मा, तस्मै श्री जुरव लमः ॥

जीव अवस्था में रहते हुए भी विश्वामित्र तक पहुंचने की स्थिति ही भगवान् श्री जगन्नाथ की स्थिति है - जगन्नाथ जो पूरे जग के स्वामी हैं, जो पूरे विश्व के रक्षक हैं, जो पूरे विश्व को समान हासि से व असीम करुणा से लिहार रहे हैं।

उसी स्थिति का परिचय सद्गुरु में स्पष्टता से दिया देता है। केवल एक जाति या एक प्रालृत के लिए नहीं, अस्तित्व विश्व के लिए, निखिल ब्रह्माण्ड के लिए उनके प्रवचनों में उनके दार्थनिक स्वरूप, ज्ञान की वरिष्ठा एवं उनके पूर्ण गुरुत्व की अबुभूति मिलती है।

“निस क्षण व्यक्ति अपने आपको पहिचानने की कोशिश करता है, उस समय वह माया से अलग होना प्रारंभ करता है, माया से अलग हटने की क्रिया ही प्रकृति से एकरूपता स्थापित करती है। नीव और मृत्यु में बहुत सामांजस्य है। मृत्यु चिरनिद्रा है और मृत्यु के पूर्व हम नीवित निद्रा में छबे हुए हैं। हम केवल कल्पनाओं में ही दूबे हैं, कि ऐसा नहीं होगा तो ऐसा हो जायगा, और अधिकांशतः व्यक्ति इन कल्पनाओं में ही जीवित रहते हैं।”

- वार्षनिकता से ओत-प्रोत ये प्रवचनांश पूज्यपात्र की विव्याणी में ‘गुरु मेरो जीवन प्रेम आधार’ से उद्धृत हैं।

सद्गुरुदेवः योगी स्वरूप

जीवं शिवेन योक्तारं ओगमोक्षं प्रदायिनं ।
लोकसंग्रह कर्तारं वन्दे योगीश्वरं गुरुम् ॥५॥

अथति— जीव को शिव हो जोड़ने वाले, साधकों को भोक्ता के स्थान भोगों की पूर्णता देने में द्वार्थ, शिष्यों व साधकों के कल्याण के लिए सतत् कार्यरित रहने वाले योगीहाज गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द जी को मैं श्रद्धापूर्वक नमन अर्पित करता हूँ।

गौमुख के निकट विचरण करने वाले स्वामी वेवज्ञानब्द जी नवरत्नि के शिविर में जोधपुर आए थे, उभी उन्होंने गुरुदेव सम्बन्धित अपने अनुभवों को बताया था। उन्हीं के शब्दों में—

“यह मेरे जीवन का सौभाग्य रहा है, कि मुझे प्राप्तः स्मरणीय पूज्यपाद सद्गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का शिष्यत्व मिला और उनकी व्यक्तिगत सेवा का एक माह अवसर मिला। और जाने किटाने जन्मों के पुण्य एकत्र हुए थे, कि एक दिन गुरुदेव ने गुफा के उस विशेष कक्ष में गढ़ा-छोकर आ जाने को कहा। उनके चरणों में प्रणिपात होकर मैं ब्रेत्र झुकाए उनके समुख छैठ गया। गुरुदेव ने मुझे अपनी आंखों को पूरी तरह सुले रखने को कहा।

मैंने देखा, कि गुरुदेव मेरे मस्तक पर अपने दाढ़िने अंगुष्ठ को तो जी से बढ़ा रहे हैं, थोड़ी देर में उन्होंने मेरे सिर के मष्टा भाग पर जोरें से अपनी हथेली से प्रहार किया। इस प्रहार को मैं संभाल न पाया और मुझे ऐसा लगा, कि मेरे सामने अंधेरा छा गया है।

थोड़ी देर में मेरे सामने गाह व दारा मण्डलों समेत पूरा छहाण्ड फैला था। एक ओर नील वर्ण का प्रकाश पुंज था जिसमें गुरुदेव विराजमान थे, मैंने देखा कि शूद्य से समस्त वेवी-देवता, समस्त चर-अचर प्रकट होकर उनमें विलीन होता जा रहा है। थोड़ी देर में मुझे लगा कि मैं भी उन्हीं में समाप्त जा रहा हूँ। मेरे सिर में चक्कर आ जाए लगा और मेरी समाधि दूट गई। सामने पूज्यपाद गुरुदेव मुस्करा रहे थे।”

यह तो पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा अपने एक शिष्य पर हुए शिष्यपात और योगिक क्रिया का वृत्तान्त है। सद्गुरुदेव ने तो किटाने ही साधकों व शिष्यों की कुण्डलिनी जाग्रत की है। अनेक जीवों को विराट सत्ता से साक्षीभूत कराया है और आत्मा-परमात्मा के तुस मिलन की ही तो योग कहते हैं। पूज्यपाद ने राजयोग, क्रिया योग, दीक्षा योग, मंत्र योग, कुण्डलिनी योग आदि अनेक विधियों से शिष्यों को ज्ञान दिया, वे तो योगीश्वर हैं।

त

सद्गुरु
के साथ
नाए थे
पूज्यपा
सङ्क
करते थे
का सौन
बिल्डरा
गुजराती
फूलों क

उनके सु
अविरल
शिष्यज
देवी उन

“गुरुदे

के एक
यहाँ व्य
हृदय से

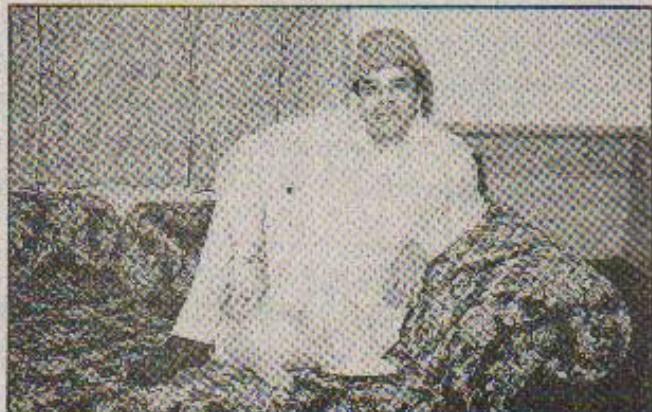
उसी स्थ
किया।
उनके क
काव्याच
रूप में स

सद्गुरुदेवः कविश्रेष्ठ

सम्मोहनादि काव्यानां ज्योतिषादि समन्वितां ।
कर्ता मंत्रविज्ञानं कविराज प्रचोदितः ॥६॥

अथवा – सम्मोहन, ज्योतिष, भास्यर्वेष, मंत्र विज्ञान तथा पादविज्ञान के विषय में अनेक श्रेष्ठ शिष्यों के इच्छाकार होने से गुरुदेव नामायण लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार तथा कविश्रेष्ठ माने गए हैं।

अपने गृहस्थ जीवन में सद्गुरुदेव एक बार अपने पांच शिष्यों के साथ कामारुद्या देवी की यात्रा पर गए थे। रास्ते में एक स्थान पर पूज्यपाव गुरुदेव ने कार रुकवार्ड और सड़क के एक ओर जाकर निरीक्षण करने लगे। पहाड़ी कीट होने से प्रकृति का सौन्दर्य चारों ओर उन्मुक्तामा से खिल रहा था। पहाड़ियों के बीच से गुजरती सड़क और एक तरफ नीचे फूलों की धाटी – छड़ा बनोरम ढृश्य था।



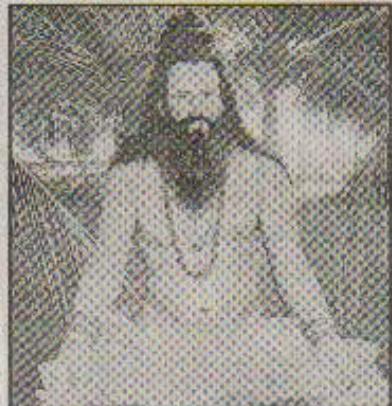
पूज्यपाव गुरुदेव एक दृक्ष के नींवे जाकर टहलते रहे, और पटा नहीं चेटाना के किस स्तर पर उनके मुख से देवी की अभ्यर्थिना में एक स्टोक्र निकल पड़ा और वे आटमलीन होकर पन्द्रह मिनट तक अधिरल रूप से गाते रहे। थोड़ी देर में भगवती कामारुद्या पूर्ण जाज्वल्यमान स्वरूप में प्रकट हो गई, शिष्यजन भी गुरुदेव के उस विद्या गायन में डूब गए थे और इस घटना के साक्षी बने। कुछ समय बाद देवी अन्तर्थिन हो गई और पूज्य गुरुदेव ने कार से आगे चलने की आज्ञा दी।

शिष्यजल उस स्टोक्र को अपने पास रखला चाहते थे, अतः एक ने साहस कर पूछ ही लिया – “गुरुदेव! आप जो स्टोक्र गा रहे थे वो किस पुराण में वर्णित है?”

गुरुदेव ने तो शिष्यों से कभी कुछ सुपाया ही नहीं है और वे बोले –

“बेटा! यह स्टोक्र किसी पुराण का नहीं है। यह तो इस स्थान का प्रभाव है, इस स्थान पर कामारुद्या के एक उच्चकोटि के विशुद्ध उपासक ने कीर्त्यकाल तक बैठकर आराधना की है, उसकी चैतन्यता अभी भी यहां व्याप्त है। इसी से मैं अनायास ही कार रोकता कर यहां आगम्य ले रहा था। यह स्टोक्र तो स्वतः ही हृष्य से पूछ पड़ा।”

गुरुदेव ने शिष्यों के आग्याह पर वह स्टोक्र लिखवा दिया। कुछ वर्ष पश्चात् उन में से एक शिष्य ने उसी स्थान पर जाकर उसी स्टोक्र के माध्यम से भगवती कामारुद्या का जाज्वल्यमाल वशन भी प्राप्त किया। वस्तुतः काव्य शिक्षि की यह पराक्रान्त है। प्रत्येक प्रवचन को किसी श्लोक से ग्राम्भ करना उनके काव्य शैली को ही प्रतिबिम्बित करता है। अहयात्म के पथ पर बढ़े व्यक्ति का हृष्य, तो वैसे ही काव्यात्मक हो जाता है, और फिर सद्गुरुदेव तो मात्र श्रेष्ठ कवि न होकर समस्त काव्यों से भी केवल अंश रूप में समझे जाने वाले परम चिरबतन परमेश्वर हैं।



सद्गुरुर्देवः युगनिर्माता

शिष्य धर्म समुज्जवाल्य गुरुता स्थैर्य माचरन्
ऋषित्वं पालितं पूर्णं युगं संस्थापितं ब्रूधः ॥७॥

अथात् - जिन्होंने भगवतपाद शंकर कालीन कलंकित (पादपद) शिष्य धर्म को समुज्ज्वल किया, पाठमेष्टि गुरु की महिमा की जल-जन तक स्थापना की तथा ऋषिकालीन प्राचीन ज्ञान परम्परा की हाथबात्मक पद्धति को सार्वजनिक बनाकर नये युग की स्थापना की, ऐसे महामानव गुरुदेव निखिलेऽवदानं जी को मैं निरन्तर प्रणाम अर्पित करता हूं।

सिद्धाश्रम की पवित्र भूमि में सनस्त कारण जगत के जियंता प्राप्तः स्मरणीय भगवान् स्वामी सचिवानन्द जी विराज रहे थे। उन्होंने जीवे छैठे सभी ऋषि-मुनि, संचारी, देवगण, दापस्त्रियों को सम्बोधित करते हुए कहा - “गिरिशिल जो कि मेरे हृदय का आदार है, उसे मैं इस टट्व दीक्षा को देने के साथ-साथ निखिल को संसार की उटिल संघर्षमय स्थितियों में भेज रहा हूं।

आज विश्व भौतिकता और विलासिता में आकंठ झूँझ गया है, यारों तरफ अल्पकार सा व्याप्त होने लगा है, धर्म और अध्यात्म के प्रति आस्थाएं व्यूँ हो गई हैं, उन्होंने भोग को ही पूर्णता माल लिया है, साधनाओं द्वारा सिद्धियों के प्रति उनके मन में सन्देह होने लगा है, योगियों का भ्रूँत उड़ाया जाने लगा है, भौतिकता की धकार्यीद्य में धर्म, वश्त्रि, योग, मीमांसा, ज्योतिष, आद्युर्वेद एवं अन्य भारतीय विद्याओं का लोप होने लगा है, और यदि यही स्थिति रही, तो मैं देख रहा हूं कि भारतवर्ष से भंत्र-तंत्र आदि गुरु विद्याओं का सर्वथा लोप हो जाएगा, और पूरा विश्व विश्वव्य ही मृत्यु के मुंह में, काल का ग्रास बनकर रह जाएगा।

ऐसे समय में भारतवर्ष को एक ऐसे तेजस्वी व्यक्तित्व की आवश्यकता है, जिसमें विपरीत परिस्थितियों में भी जूँड़े और विजय प्राप्त करने की क्षमता हो। निश्चय ही यह संक्रमण काल है। गाटियों, अपमान, आलोचनाओं, अनास्था और पाख्यान के इस घटाटोप ऊंधकार में भी मैं उसे भेज रहा हूं और मुझे विश्वास है, कि वह मेरे स्वप्नों को साकार करने की क्षमता रखता है।

शंकरशार्द्ध, गोरखनाथ और विश्वामित्र के समय में भी उन्होंने विपरीत परिस्थितियां नहीं थीं, पर निखिल ब्रह्म टट्व से ऊर्जिस्थित पूर्ण व्यक्तित्व है। वह अपनी जीववृत्ता, क्षमता और पौरुषता के साथ स्वयं तो सफल होगा ही, हजारों गृहस्थ शिष्यों को भी पूर्णता प्रवान कर सकेगा। मेरा और निश्चय लीला विहरिणी जगतजननी का आशीर्वद प्रत्येक क्षण इसके साथ है।”

पूज्यपाद डॉ० नारायण दत्त श्रीमाटी के रूप में सद्गुरुर्देव जे देश-विदेश में अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम परिवार की स्थापना की, भंत्र-तंत्र-योग प्रतिका का प्रकाशन किया, डेढ़ सौ से भी अधिक ग्रन्थों को रचकर लूप्त गुरु विद्याओं व ऋषि परम्परा का पुनर्स्थापन किया, लाखों से भी अधिक साधकों को प्राप्तवेदाना प्रवान की, दीक्षाओं की ऋषिकालीन परम्परा को पुनः प्रारम्भ किया है। आज उनके द्वारा दैयार ये लाखों साधक उनके द्वारा द्वारा दैयार के ही परिणाम हैं। युग निर्माता के रूप में उनका यह कार्य अभी भी अद्वितीय रूप से गुरु त्रिमूर्ति के रूप में सक्रिय है।

जीव

१. मूर्त

मैं तरक्की
से कुछ
है और उ
वातावरण
प्रयोग क
प्रयत्न क
नाना चा
करा रखा

रात्रि को
के ऊपर
स्थापित
दै। माल
निम्न मं
मंत्र

//
Om Ram

या दुकान
अनुकूल
किसी चे
बंद कर
भी प्रका

साधना साप्तशता

लघु साधनाओं को साधक इसलिए सम्पद्ध करता है, कि उससे कार्य शीघ्रता से पूर्ण होते हैं, जीवन में घटित होने वाली छोटी-छोटी समस्याएँ व्यक्ति को निःक्षर तनावग्रहण बनाए रखती हैं। प्रस्तुत हैं ऐसी ही साधनाएँ, जो आपको सफलता दिलाने में सहायक होंगी।

१. मूठ प्रयोग से मुक्ति हेतु

हर व्यक्ति का कोई रात्रि होता है, या उसके बिच नेस में तरक्की देखकर उससे जलने लगते हैं और नलन की बजाए कुछ तांत्रिक-प्रयोग करका देते हैं जिससे वह परेशान रहता है और उसके घर में पी आमदनी कम रहती है और क्लेश का वातावरण बना रहता है, यदि किसी ने घर या व्यापार पर मूठ प्रयोग कर दिया हो अब वह घर में कालह और तनाव है या प्रयत्न करने पर भी व्यापार में उत्तिन नहीं हो रही है, तो समझ जाना चाहिए कि जरूर किसी ने घर या व्यापार पर मूठ-प्रयोग करा रखा है। इसके लिए यह प्रयोग अवश्य ही करें—

यह प्रयोग रविवार के दिन आरम्भ करना चाहिए। रात्रि को स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहन कर पूजा स्थान में आसन के ऊपर एक थाली रखें थाली में 'काली हकीक माला' को स्थापित करें तथा माला के बीच में एक तेल का दीपक लगा दें। माला के प्रत्येक मनके पर सिन्दूर का तिलक करें, फिर निम्न मंत्र का 35 मिनट तक बिना माला के जप करें—

मंत्र

॥ उौं रं रं तंत्र बाधां निवरण्य वं वं उौं फट् ॥

Om Ram Ram Tantra Bandham Nivarny Yam Yam Om Phat

जप समाप्ति पर गन में प्रार्थना करें, कि हमारे घर में या दुकान में जो मूठ प्रयोग है, वह दूर हो और मेरा जीवन अनुकूल रहे। फिर रात को 10 बजे उस माला व दीपक को किसी चौराहे पर रख दें या कहीं जमीन में गाढ़ कर गढ़वे को बंद कर दें। इस प्रकार यह प्रयोग करने से निःचय ही किसी भी प्रकार का मूठ प्रयोग दूर हो जाता है।

साधना सामग्री पैकेट - 150/-

अ 'जब्बरी' 99 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '45' ॥

२. रोगमुक्ति हेतु

कभी-कभी शरीर में कुछ ऐसे जटिल रोग जाते हैं, जिनका न तो कोई उचित कारण समझ में आता है और न हल। प्रायः ऐसे रोगों का कारण पूर्व नन्यकृत दोष अथवा किसी विरोधी द्वारा कराया गया तंत्र प्रयोग होता है या कोई बीमारी भी हो सकती है, जिससे कि पूरा परिवार परेशान रहता है।

बीमारी में इतने रूपये खर्च होते हैं, कि पता ही नहीं चलता, उसके बावजूद कोई फर्क नहीं पड़ता है। अतः इन सभी से छुटकारा पाने का जो एक सटीक उपाय विख्वाई देता है, वह मंत्र के माध्यम से रोगमुक्त ही दिखाई देता है; जो सुरक्षित भी है। किसी भी प्रकार के रोग से स्वयं का बचाव कर लेना भी उतना ही महत्व रखता है, जितना कि रोग के पश्चात् रोग से मुक्त हो जाना। इस प्रयोग के माध्यम से आप निःचय ही अच्छे हो सकते हैं।

रात्रि को स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में बैठ जाएं और सामने आसन बिछा कर उस पर थाली में 'रोग निवारण यंत्र' स्थापित कर उसका पूजन कर उसके समझ धी का दीपक लगाकर 'रोग निवारणी माला' से निम्न मंत्र का जप करें—

मंत्र

॥ उौं क्रीं क्रीं रोजान् शम्य उौं उौं फट् ॥

Om Kream Kreem Rogaa Shumay Om Om Phat

यह मंत्र जप लियमित 21 दिन तक करें और प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें तथा माला को धारण कर लें।

साधना सामग्री पैकेट - 240/-

३. पूर्णगृहस्थ सुख प्राप्ति हेतु

जब साधक का गृहस्थ जीवन ही सुखी नहीं रहता है, तो किसे वह क्या साधना करेगा? उसका सारा दिमाग तो अपनी घर की चिंताओं में ही चला जायेगा। रात-दिन भृति-पत्नी में करनह, सन्तान का न होना, आपस का तनाव आदि अनेक कारणों से मन व्यथित रहता है, जिसकी बजाह से साधना में सफलता असंभित हो जाती है। इस प्रयोग से अनुकूलता मिलती है तथा घर में शान्ति रहती है।

किसी पात्र में 'गृहस्थ सुख प्राप्ति यंत्र' को स्थापित करें, उसका पंचोपचार से पूजन करें तथा उसके ऊपर अक्षत चढ़ाने हुए निम्न मंत्र का बिना माला के १३ मिनट जप करें—

// उ॒ हौं हौं मम गृहस्थ सुखं साधव्य उ॑ //

Om Hreem Mam Gribasthi Sukham Sandhay Om

यह मंत्र जप 31 दिन तक करें और जप समाप्ति के बाद यंत्र को मंदिर या नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 80/-

४. मनोरक्तामना पूर्ति

इस किसी की इच्छा होती है, कि उसने जो कार्य सोचे हैं वह पूर्ण हो जाएं। कार्य को प्रारम्भ करने पर उसमें अनेक आधार आती है, जिससे मनोबल टूटने लगता है और व्यक्ति बीच में प्रयास छोड़ देता है। उसके अन्दर निराशा घर कर लेती है। इस प्रयोग से आपके अन्दर उन्साह एवं जोश व्याप्त हो जाता है और आपके सोचे हुए कार्य पूर्ण होते हैं।

प्रातः स्नान आदि से निवृत होकर अपने पूजा कक्ष में आसन पर बैठें, किसी पात्र में 'मनोरक्तामना पूर्ति यंत्र' को स्थापित कर उसका पूजन कर उसके समक्ष वीपक लगाकर काला मिर्च के दाने को यंत्र पर चढ़ाने हुए निम्न मंत्र बोलें—

मंत्र

// उ॒ क्रौं नमः मनोरक्तामना पूर्ति यंत्रं सिद्धौ ये फट् //

Om Kroum Namah Manovraakshhitam Siddhaye Phat

इस मंत्र का जप 108 बार करें और उसके बाद काली मिर्च के चढ़ाए हुए सभी दानों को हवन अग्नि में प्रवाहित कर दें। आपकी जो भी मनोरक्तामना हो वह बोलें और फिर यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 100/-

५. शीघ्र विवाह हेतु

यह एक बहुत बड़ी समस्या है जब घर में किसी

ज्ञ 'जलवरी' 99 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '46' ॥

लड़की का विवाह नहीं हो रहा हो, तो पूरा घर ही परेशान रहता है और माता-पिता को दिन-रात उसकी चिंता रहती है। वह ठीक से कार्य नहीं कर पाते और सोचते रहते हैं, कि क्या होगा? एक तो अच्छा जीवनसाथी भी नहीं मिल पाता, इस प्रकार लड़की भी अपने-आप में बहुत ही स्नान करती है, वह ठीक से बाहर नहीं निकलती और समाज में तथा बाहर के लोग उसे लमेशा ताने मारते रहते हैं। माता-पिता को भी बहुत दुःख होता है। इस प्रयोग के माध्यम से आप समस्या का समाधान कर सकते हैं।

किसी पात्र में 'शीघ्र विवाह सिद्धि यंत्र' को स्थापित कर उसका पूजन कर उसके समक्ष निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप सिद्धि माला से करें—

मंत्र

// उ॒ हौं हौं एं वलीं शीघ्र विवाह कार्यं साधव्य उ॑ नमः //

Om Hreem Ayeem Kleem Sheeghra Vivaab Kauryam Sandhay Om Namah

मंत्र जप समाप्ति के बाद सामग्री को नदी में विसर्जित कर दें। इस प्रकार आपकी समस्या का समाधान बहुत ही शीघ्र हो जाएगा।

साधना सामग्री पैकेट - 210/-

६. धन प्राप्ति हेतु

इस किसी की एक ही इच्छा होती है कि वह सबसे ज्यादा धनवान हो और बास्तव में जीवन में धन की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता है। इसके अभाव में व्यक्ति की सामान्य सी आवश्यकता भी पूर्ण नहीं होती है। आज बच्चों को पढ़ाने के लिए, उनकी शादी-व्याह तथा उनके कैरियर के लिए धन की जरूरत पड़ती है और व्यक्ति धन के अमान में उन सब समस्याओं से नृद्धता रहता है।

किसी भी शनिवार की राति में यह प्रयोग आरम्भ करें। किसी पात्र में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उसके ऊपर 'महालक्ष्मी यंत्र' स्थापित करें। यंत्र का पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से करें। इसके पश्चात् आधे घण्टे तक यंत्र पर अपनी दृष्टि को एकाग्र करते हुए निम्न मंत्र का जप करें—

मंत्र

// उ॒ प्रां प्रां हौं महालक्ष्मी प्रसादवति स्वाहा //

Om Praam Praam Hreem Mahalakshmee Prasaadavati Swaha

यह प्रयोग 9 दिन तक करें। इसके बाद यंत्र को लकड़ी के प्रतीक रूप में अपने पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दें।

साधना सामग्री पैकेट - 120/-

साद्गुरु

उप आपसे वर्ष पूर्व से दुर्गम्य ही दिल में एक मिल जाये, जो इस जी

पि तो मुझे यूरु मेरी आत्मा संदर्भ में एक ही कुछ आरे पत्र प्राप्त हु प्रसन्नता हुई गुरुदेव से मि की दिव्य सुगमा, ऐसा हि

कि तो सुबह चा हो गया.... जी के बेश उन्होंने कहा मुझे आशीर्व इन्हीं ने तो मु गुरुदेव मै इ मुझे निरंतर

जीवनका

पूर्व वन्दना। जब दुःखी और ब

साध्वीक साक्षी हैं

सदगुरु मिले, हुआ सफल जीवन

गुरुदेव सन् 1995 दीपावली सूर्योदय के अवसर पर आपसे दीक्षा प्राप्त करने का सीधारास्य मिला। इससे एक वर्ष पूर्व से ही आपका पता मुझे चल गया था, किन्तु ये मेरा दुर्भाग्य ही था, जो मैं इनमें समय के बाद मिला। पहले मेरे दिल में एक टीरा सी निकलती थी, कि काश इस युग में कृष्ण मिल जाये, कोई रामकृष्ण परमहंस जैसे सदगुरु मिल जाएं, जो इस जीवन को सफल कर दें।

पिछले वर्ष जब मैंने मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पश्चिमा पढ़ी तो मुझे यूँ लगा, कि मानों इन्हीं सदगुरुओं के चरणों में जाकर मेरी आत्मा को तुम्हि मिल सकती है। मैंने एक पत्र लिखा, जिसके संदर्भ में एक विवर सुझे आमास्म हुआ, कि आज मेरे लिए अवश्य ही कुछ अस्येगा। और मुझे गुरुदेव की ओर से आशीर्वाद युक्त पत्र प्राप्त हुआ। पत्र मैंने पढ़ा, तो आसू आ गये और इनी प्रसन्नता हुई, कि मैं वर्णन नहीं कर सकता। जब मैं प्रथम बार गुरुदेव से मिलने जोधपुर गया, तो माझपुर में दैन में एष्टजंघ की दिव्य सुरांध का एक ऐसा झोंका आया, जो मुझे रोमांचित कर गया, ऐसा मैंने जीवन में पहली बार महसूस किया।

फिर जब मैं जयपुर से जोधपुर के लिए बस में चला तो सुबह चार बजे मेरी आँखें खुलीं और मैं मानों चेतना शून्य हो गया... तभी सामने गुरुदेव आये और वे निखिलेश्वरानन्द जी के बेश में थे, गले में रुद्राक्ष की माला धारण किये हुए। उन्होंने कहा, कि मैं श्री नारायणदत्त श्रीमाली हूँ और उन्होंने मुझे आशीर्वाद भी दिया। जब मैं आश्रम में गया, तो देखा कि इन्होंने तो मुझे 4 बजे दर्शन दिये थे, मैं गदगद हो गया। पूज्य गुरुदेव मैं इन धरणों को कभी भी विस्पृत नहीं कर सकता, मुझे निरंतर आपकी कृपा इसी प्रकार मिलती रहे।

— सुरजीत सिंह, श्री हनुरेश्वर ड. मा. विद्यालय
श्लोपुर केल, ज्वालियर (म. प्र.)

जीवनकाली सदगुरुदेव

पूज्य गुरुदेव के चरणों में हमारी तरफ से बार-बार बन्दना। जब मेरे जीवन में गुरुली नहीं आये थे, तो मैं बहुत ही दुखी और बीमार रहती थी। काफी धन व्यय करने पर भी

कुछ फायदा नहीं हुआ। हर रोज डॉक्टरों के पास जाना पड़ता था। एक बार मेरे पति के दोस्त हमारे घर आये और उन्होंने हमें पत्रिका दी। जब से मैंने उस पत्रिका को पढ़ा, तब से मेरे मन में जीने की चाहत होने लगी और सन् 1995 में तुधियाना के शिविर में मैंने ओर मेरे पति ने गुरुदेव से 'गुरु दीक्षा' ली, और इसके बाद मैं धीर-धीर ठीक होने लगी।

फिर चंडीगढ़ के शिविर में हमने भाग लिया तथा विशेष दीक्षा प्राप्त की, इसके 15 दिन बाद मैं बिल्कुल ठीक हो गई। एक दिन की बात है, कि मैं अपने कगरे में सो रही थी, रात के तीन बजे थे, कि मेरे सिर पर चलता हुआ पंखा गिर पड़ा। इससे घर के सभी सदस्य घबरा गये और मुझे अस्पताल ले गये। अस्पताल में मैं डॉक्टर के सामने खड़ी हो गई और बोली — 'देखो मेरे सिर पर चलता पंखा गिर गया है, पर मुझे कुछ भी नहीं हुआ है।'

यह सुनते ही सभी डॉक्टर हेरानी से मेरी तरफ देखने लगे और कहने लगे — 'तुम तो ठीक-ठाक खड़ी हो तुम्हें चोट भी नहीं होगी। आज तक पंखा निरन्तर से कोई भी नहीं बचा, तुम कैसे ठीक हो?' मैंने कहा कि मेरे गुरु जी ही मेरे जीवनवाता हैं, यह सब उनकी कृपा से ही सम्भव हो पाया है।

— श्रीमति कांता देवी, कड़ोता, हमीरपुर (हि.प्र.)

महाकाली दुर्दृष्टि

मैं सहरसा जिला के बेगांहा नामक गांव में रहता हूँ। अभी तक न तो मैं गुरुदेव ने मिला हूँ और न तो उन्हें कहीं अपनी जाश्त अवस्था में देखा है। पूज्य गुरुदेव की कृपा से मैं और मेरी पत्नी, बच्चे सब दो बार एक्सीडेन्ट से बचे हैं।

1996 के शिवरात्रि के आसपास की बात है, मैं एक रात अपने कक्ष में सोया हुआ था। रात के करीब 3 बजे, स्वर्ण में मैं अपने घर से थोड़ा दूर अपने आम के बगीचे में गया, तो देखा कि एक पेड़ के नीचे एक सात वर्ष की बालिका नुत्य कर रही थी, वह नुत्य ऐसा था जैसे पूरे मंसार में प्रवन्ध आ जाएँ। मैंने उस बालिका को नुत्य करने से रोका, वह स्कूक तो गई परन्तु कुछ क्षण बाद वह लुप्त हो गई। इसके बाद ही वहाँ आँधी-नूफान, बारिश शुरू हो गई थी। मेरे चारों तरफ एक विचित्र प्रकार की

रोशनी उस पचास पीट के धेरे में फैल गयी थी।

मुझे उस आधी-तूफान और विचित्र रोशनी में से निकलना बहुत ही गुश्किल हो रहा था। मैंने गुरुदेव को उस समय याद किया और जोर से गुरु मंत्र पढ़ने लगा। तभी कोई विष्वपुस्त्र मेरा हाथ पकड़कर उस आधी तूफान और रोशनी में से बाहर खींच लाया। इसके बाद मेरे सिर में दर्द होने लगा, उस दर्द से मेरी नोंद टूट गयी और मैं उठकर बैठ गया, लेकिन फिर भी मेरे सिर में दर्द हो रहा था। ज्यों ही मैं दूसरे तरफ लैटकर सोना चाहा, त्योंही मेरे मुंह से एक चीख निकल गई। मेरे चीखने से मेरी पत्नी और मेरा भाई उठकर मेरे पास आया और बोला क्या हुआ भैया?

मेरे मुंह से आयान नहीं निकल रही थी, क्योंकि मेरे मामने मां काली खड़ी थीं। मैं घर से उन सबको कह रहा था, कि वो देखो मां काली खड़ी हैं। मेरी पत्नी और मेरे भाई को कुछ भी न नहर नहीं आ रहा था, जबकि मैं बराबर मां काली को देख रहा था। भयवश मैं उस कक्ष से बाहर निकल गया और नलकृप पर जाकर हाथ-मुँह और पैर को धोया, फिर आकर गुरुदेव के चित्र के सामने न तमस्तक हो गया। मेरी आँख से अश्रुधारा बह निकली और पलटकर उस स्थान को फिर से देखा, तो वहां पर कोई नहीं था, मां काली अदृश्य हो गई थी। फिर भी मुझे उस समय से लेकर पांच दिन तक मेरे सिर में दर्द और उस कमरे में मां काली के गौनूर होने का आभास होता रहा।

दिनेश कुमार बच्चन, बैंगड़ा, सहरसा (विहार)

दीक्षा से तंत्र दोष नियारण

मैं लगभग आठ वर्षों से परेशान था। जब मैं सोना था तो दिन ही या रात मुझे लगता था, कि मेरे ऊपर कोई लैटा है। मुँह से बोली नहीं निकलती थीं, हाथ-पैर हिलने-डुलने से भी हिलता-डुलता नहीं था। रोज सोते समय दर लगता था, कि फिर कोई मेरे ऊपर आकर बैठेगा। मैं कई तांत्रिकों से नाबीज लेकर पहन चुका था, झांड़-फूंक करता था, फिर भी ठीक नहीं हुआ।

इसी बीच एक दिन स्वच्छ मैं परमपूज्य गुरुदेव जी और माता जी को देखा, उन दिनों मेरे घर में कुर्मा पूजा चल रही थी। गुरुदेव जी तथा माता जी मेरे पूजा वाले घर में गये, जब वे घर से बाहर निकल रहे थे, तो मैं गुरुदेव जी के पैर पकड़कर रोने लगा। तभी गुरुदेव जी नारायण के रूप में परखतित हो गए और बोले — ‘आमों जरूरत पड़ी है, तो आ रहे हो?’ ऐसा कहकर



गुरुदेव वापस चले गए। फिर मैं नग गया, इसके बाद से गुरुदेव जी मुझे माह में पक दो बार जरूर दिखाई देते हैं।

मैंने दिनांक 5 मार्च 1907 को महाशिवरात्रि पर्व पर द्वादश ज्योतिलिंग साधना शिविर, वाराणसी में गुरुदेव जी से सामान्य दीक्षा प्राप्त की। शिविर से वापस लौटते ही मैं बिल्कुल ठीक हो गया हूं, डर-भय भी बिल्कुल समाप्त हो गया है। मैं जब भी किसी परेशानी में रहता हूं, तो परम पञ्च गुरुदेव जी का स्मरण करते हो परेशानी दूर हो जाती है। ये मेरा सीधान्य है कि मैं परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का शिष्य हूं।

देवदत्त साहू, बौद्धिकापुर (म. प्र.)

बाढ़ से टक्का

पिछले तीन वर्षों से गुरुदेव के चरणों में मन लगा कर साधना करने के फलस्वरूप मुझे 20 या 25 बार गुरुदेव के दर्शन स्वच्छ गौ हो चुके हैं। मैं जब भी कोई साधना करता हूं, तो गुरुदेव अवश्य आते हैं और कई बार निर्देश भी दिए हैं।

21. 6. 96 की रात को इतनी भयंकर बरसात हुई और भयंकर प्रलयकारी आधी आई, कि मकानों में तीन फुट पानी पर चुका था। घर का सारा सामान ऊचे हिस्से में रख दिया गया। सब लोग अपना सामान निकाल कर मकान छोड़ रहे थे, परन्तु मैं मकान नहीं छोड़ रही थी। लोगों ने बहुत कहा, कि मकान गिर जायेगा बाहर आ जाओ, परन्तु मेरा एक ही उत्तर था — “मेरे गुरुदेव मेरी व मेरे मकान की रक्षा करेंगे, मैं घर नहीं छोड़ूँगी!” गंव के करीब 100 मकान गिरे पर मुझे कुछ नहीं सूझ रहा था, केवल गुरुदेव व गुरु मंत्र की ध्वनि ही सुनाई दे रही थी। मैं बराबर गुरु मंत्र का जप कर रही थी।

23. तीर्थी वार्ष को करीब तीन बजे मुझे बोडी सी थकान आ गई, मैं चारपाई पर लैट गई, परन्तु गुरु मंत्र जप रही थी, कि तभी गुरुदेव आये और सबसे ऊपर की छत पर जाकर खड़े हो गये और आशीर्वाद-मुग्रा में हाथ उठाकर कहा, कि ‘घबराओ नहीं सब ठीक हो जायेगा।’ मैं जैसे ही उठा गुरुदेव जा चुके थे। मैं पानी को देखने लगी उसी क्षण से पानी घटने लगा।

मेरी आंखों से आँसू निकल रहे थे, और मन कह रहा था— गुरुदेव आपने हमारी रक्षा कर रही थी, मेरे मकान में लगभग सात दिन तक पानी रहा, परन्तु मकान का कुछ नहीं बिगड़ा, गंव में भारी क्षति होने के बाद भी। अतः गुरुदेव के रूप में हमें भगवान मिले हैं, जो पल-पल हमारी रक्षा करते हैं ऐसे विष्व विभूति के चरणों में मैं नमन करती हूं।

श्यामा देवी, ताऊसर, नागौर।

गुरु की आवश्यकता, विष्ण्य का धर्म, जीवन का लक्ष्य, श्रेष्ठ पथ आदि अध्यात्म के अनेक जटिल प्रश्नों को पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी ने अपने ग्रन्थों में जितनी सरलता, सहजता और सुन्दरता से बताया है, अन्यान्य कहीं और देखने को नहीं मिलता। ये ग्रन्थ स्वास आज के युगधर्म के लिए ही हैं...

निरिवलेश्वरानन्द स्तवन



जो एक स्तवन नहीं
शब्दों के गायण से ब्रह्म को व्यक्त
करने का प्रयास है, सद्गुरुराजेप
की लीलाओं को पंतिभृष्ट करने
का प्रयास है, जिसके पाठ करने
ही रवतः व्याग की छिद्रा आमना
हो जाती है, रागाशी की भाव-भूमि
रघु होने लगती है और शिद्धियाँ
तो मानो हाथ जोड़ कर सामने
खड़ी होती हैं... तभी तो यह मात्र स्तवन नहीं काल के
आल पर लिखी असिट पंतियाँ हैं, शिद्धों व साथकों द्वारा
नित्य पठनीय पुर्व अवणीय पुक अद्भुत और अनोखा
संकलन....

रुपीछावरः 96/-

ज्ञान से परिपूर्ण हो ग्रन्थ ही
आपके लिये संग्रह करने योग्य

चिर प्रतीक्षित हे दोनों ही ग्रन्थ
शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं,
अपनी प्रति अवश्य सुरक्षित करायें-

शुरु नीता



शुरु नीता सम्पूर्ण वेद,
पुराण, श्रुति और समस्त ग्रन्थों का
विचार है, जिसके पढ़ने मात्र से ही
भौतिक और आश्यात्मिक जीवन में
पूर्णता मिलती ही है, इसका नित्य
पाठ करना ही आव्य को सोने की
कलम से पुनः लिखना है। यह
ग्रन्थ प्रत्येक शिष्य और शाशक के
लिए अनिवार्य है।

रुपीछावरः 150/-

इत्यान् धारणा और समाधि



इत्यान् धारणा और समाधि
समाधि अपने आप में मानसरोवर
है, जिसमें हंस की तरह इबकी
लगाने से अपूर्व शांति, मानसिक
पूर्णता और जीवन के ऊँचालान
मुकाफ प्राप्त होते हैं, सम्पूर्णजीवन
को जीने का यह आधारभूत ग्रन्थ
है, जो अपने आप में अद्वितीय है।

इस पुस्तक को पढ़कर व्यक्ति इत्यान् की आवश्या
में जा सकता है, अपने आप में धारणा शक्ति को धारण कर
समाधि अवस्था में पहुंच सकता है।

रुपीछावरः 96/-



प्रत्येक व्यक्ति
भविष्य जानने और उसका
आकलन करने के लिए
प्रयत्नशील रहता है, ज्योतिष
की एक विद्या 'फलित
ज्योतिष' है, पर इससे पूर्णता;
अधिष्ठा कथन संबंध नहीं हो
पाता, क्योंकि बिना 'झट' के
भविष्य का सूक्ष्मातिसूक्ष्मा कथन संभव नहीं है, इसके लिए
श्रेष्ठतम्, अद्युक्त और अद्वितीय विद्या और साधना है -
'पंचांगुली साधना'।

रुपीछावरः 120/-

* सम्पर्क *

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हार्डकार्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)

Phone : 0291-432209 TeleFax-0291-432010

सिद्धांशुग्रन्थ, 306 कोहाट एन्कलेज, पीतमसुरा, नई विल्ली - 34, फोन : 7182248 टेलीफ़ोन : 7196700

पाठकों के प्रभ

● संतोष कुमार शाक्य, रायसेन से लिखते हैं — प्रभु! आपकी कृपा ये 'कालचक्र' स्तम्भ के दो प्रयोग भाज्योर्वय प्रयोग जुलाई २८ एवं कामनापूर्ति प्रयोग, जून १८ के अंक से मैंने एवं मेरे तीन भिन्नों ने पूर्णता के साथ सम्पत्ति किये और सफलता प्राप्त की। हमें ऐसा लगा जैसे चारों तरफ से मैंसे ही पैरें को ब्रह्मसात ही रही है। यह सब आपके ही आशांवाद का फल है।

● महेश शर्मा, किरणपुर से लिखते हैं — 'मैं मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान परिका का नियमित पाठक हूं। इस परिका में लिखित अभिमंत्र पूर्णतः सत्य हैं। मैंने हनुमान मुद्रिका का विधि-विधान से पूजन कर, जब ऐसे कार्य के लिए प्रस्थान किया, जो विगत तीन माह से लम्बित था, मेरे उक्त स्थान पर पहुंचने के पूर्व ही मुझे दृष्ट रामाचार प्राप्त हुए। पून्य गुरुदेव मुझे सुकृत रूप से उपरिकृत होकर दिशा निर्देशित करते हैं।'

● विनेश राठोर, रायपुर से लिखते हैं, कि मुझे हर माह परिका का बेस्डी से इन्तजार रहता है। मेरे पांच में कीव सात साल से दाद-खान था, पर काफी इलाज कराने के बाद भी ठीक नहीं हुआ। मैंने अक्टूबर १६ के पृष्ठ ६० पर प्रकाशित लाधना तुलसी गुटिका का प्रयोग किया। मात्र १५ दिनों बाद ही मेरे पांच से दाद-खान अच्छा हो गया। ऐसा लगता ही नहीं कि यहाँ कभी दाद-खान था। यह गुरुकृपा से ही संभव हुआ।

● मुकेश कुमार समीर, सुन्दरन (राज.) से लिखते हैं, कि मैं आपकी परिका का नियमित पाठक हूं। अध्ययनोपरांत मुझे इस परिका में आलोचना के कुछ बिंदु नज़र आए, तो बहुत से विषय अत्यंत सराहनीय थी लगते हैं। विमिन्न लेखकों के कुछ ऐसे लेख परिका में छापे जाते हैं, जो साधारण पाठक के लिए निर्याक से हो जाते हैं। ये लेख आस्त्रों के जटिल उदाहरणों से भरे पड़े हैं, और विज्ञान के इस प्रवर्शन में लेखक का मूल मंतव्य लुम हो जाता है। लगता है ऐसे लेख मात्र लिखने के लिए लिखे गए अपितु कुछ कहने के लिए नहीं। इस प्रवृत्ति से बचना जरूरी है।

— आप परिका के प्रत्येक लेख का इतनी सूक्ष्मता से अध्ययन करते हैं, ये आपकी जागरूकता को ही दर्शाता है। आपने जिस तथ्य की ओर इशारा किया है, व्यान अवश्य रखा जाएगा, जिससे सभी वर्ग के पाठक हर लेख को समझ सकें और लाभान्वित हो सकें।

— सह सम्पादक

● अजय सक्सेना, मुर्शिदाबाद से लिखते हैं, कि अप्रैल १५ के मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान में पृष्ठ १९ पर मृणा पर शेष निवारण के प्रयोग के लिए माला का उल्लेख नहीं दिया, कि किस माला के द्वारा जाप करना है।

● आर. प. गुप्ता, इलाहाबाद से लिखते हैं, कि वे अप्रैल १५ से मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान परिका के नियमित सदस्य हैं। पत्र में आजे लिखते हैं, कि मैंने अब तक जितनी भी प्रकाशित साधनाओं के बारे में दिया हुआ विवरण पढ़ा है, बहुत अच्छा लगा। मदगुरुदेव से सम्बन्धित लेख मुझे बहुत मुन्द्र लगते हैं। 'शीतला साधना' के बारे में अब तक कुछ प्रकाशित नहीं हुआ है, अतः गुरुजी से प्राप्तना है, कि मां शीतला के बारे में सरल साधना विधि-विश्वान प्रकाशित अवश्य ही करें।

● चक्रधर दास, उडिशा से कहते हैं, कि मैं मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान परिका का नियमित सदस्य हूं। परम पूज्य गुरुदेव के प्रवचन और उपदेश का भरा हुआ एक स्तम्भ परिका के प्रत्येक अंक में प्रकाशित करने की कृपा करें।

— प्रत्येक अंक में परिका का प्रथम लेख 'सत्यगुरुदेव' और गुरु तत्व पर ही होता है। पूज्यपाद सत्यगुरुदेव के प्रवचनों में ही कहीं गई बातें को भाषा का कलेवर बेकर यह लेख आपके सम्मुख आता है। अभी हाल में परिका के मध्य पृष्ठ पर 'गुरु वाणी' स्तम्भ आरम्भ किया गया है, जिसमें पूज्यपाद के प्रवचनांशों को ज्यों का ज्यों प्रस्तुत किया जाता है। 'शिव्य धर्म' भी एक नवीन स्तम्भ है, जिसमें गुरुदेव का आपने शिष्यों को दिया गया उपवेश या सन्देश होता है।

— सह सम्पादक

● सोमनाथ गुप्ता, इलाहाबाद से लिखते हैं, कि पुराण और अनुष्ठान से भ्रमनिधि कोई शोध परक लेख परिका में प्रकाशित करें। यदि इस सम्बन्ध में गुरुदेव नी द्वारा रचित कोई पुस्तक हो तो उसका उल्लेख करें, या जिसमें गुरु मंत्र के प्रत्येक बाज मंत्रों का विस्तार पूर्वक अनुष्ठान दिया हो।

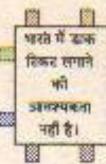
— परिका के पुराने अंकों में ऐसे लेख दिए जा चुके हैं, पाठकों के लाभार्थ, इन्हें पुनः प्रस्तुत किया जाएगा।

— सह सम्पादक

डाक व्यय
पत्र प्राप्त करने
वाले द्वारा
दिया जायेगा

व्यापारी जबाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
342001 (राज०)



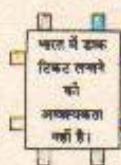
सेवा में,

व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय
पत्र प्राप्त करने
वाले द्वारा
दिया जायेगा

व्यापारी जबाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
342001 (राज०)



सेवा में,

व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग. हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय
पत्र प्राप्त करने
वाले द्वारा
दिया जायेगा

व्यापारी जबाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
342001 (राज०)



सेवा में,

व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सद्गुरुदेवः उपदेष्टा स्वरूप

सुग्रदानुमता च कर्ता धर्ता पितामहः ।
उपदेष्टा सर्वशास्त्राणां शिष्या सर्वार्थी साधकः ॥४॥

अथात् – युगानुकूल समाज को अभिप्रेत्ता देकह साधनाओं से जोड़ने वाले, शिष्यों का भट्ठण योषण करते हुए, प्रत्येक घर में आवि पुष्ट की भाँति शुभ कार्यों में प्रेति करने वाले, शिष्यों को शाहनीय मर्यादियों में अनुबंधित करके, भौतिक व आध्यात्मिक पक्षों में पूर्ण करने वाले गुरुदेव नामायण ही हैं।

पूज्य गुरुदेव एक बार संचारासी वेश-भूषा में घलते-घलते गंगा के तट पर अद्योरियों के महाय पहुँचे। पूरा सम्प्रदाय ही था, और लगभग डेढ़ सौ से भी अधिक अद्योरी पूर्ण दीभट्टस्ता के साथ रह रहे थे। इस स्थान का कब्ज ही लोगों को पता है। लिखिल जी का वहाँ ले प्रथान अद्योरी द्वारा स्वागत हुआ, उसे उनके साधनात्मक स्तर की पूर्व सूचना थी। सायंकाला लिखिल जी के स्वागत बैं एक सभा का आयोजन किया गया। गंगा का ठट और ठट के समीप ही लकड़ी के तख्त से बने एक गंध पर गुरुदेव एवं प्रथान अद्योरी विराजमान थे।

अद्योरियों के लघु गृह्य के पश्चात् पूज्यपाद गुरुदेव से प्रथान अद्योरी ने ‘कापालिक किया से शिव सायुज्य’ विषय पर एक घण्टे का प्रवचन देने के लिए आग्रह किया। पूज्यपाद का अविरल हाराप्रवाह प्रवचन चलता रहा। और एक-एक कर गुरुदेव ने अद्योर व कापालिक सम्प्रदाय के ऐसे-ऐसे रहस्य उद्याटित किए, जो कि प्रथान अद्योरी तक को पता नहीं था।

ऐसे विष्य गृह्ण प्रवचन ने अद्योर शहद की सर्वथा नवीन व्याख्या की। प्रथान अद्योरी एक छहूत उच्च स्तर का साधक था, और एक बहुत उच्च क्रोटि के अद्योर सम्प्रदाय के गुरु द्वारा दीक्षित भी था, परन्तु ज्ञान का ऐसा प्रवाह उसने पूर्व कभी अनुभव नहीं किया था। पूरे प्रवचन में गुरुदेव कभी भी प्रवचन के केन्द्र विषय से छठे नहीं और समाप्त ठीक एक घण्टे में करके उपनी बात को पूर्णता दी। अद्योरी ने उपनी घड़ी में देखकर इस बात को नोट किया था, कि गुरुदेव ने उपराह्ण 3:15 बजे जो प्रारम्भ किया वह ठीक 4:15 को पूर्ण किया और उस समय में उल्होने किसी भी बात को अद्यूरा नहीं छोड़ा और पूर्णता से बढ़ाया।

सभी अद्योरी इतने बंत्र-मुरल थे, कि वे वहाँ से हल्के का नाम ही जानी ले रहे थे। सबने पूज्यपाद के चरण स्पर्श किए और प्रथान अद्योरी के विशेष आग्रह पर गुरुदेव ने उसे विशेष दीक्षा भी प्रदान की। और एक निर्णित संचारासी की भाँति कुछ देर में सबसे विदा लोकर पुनः किसी स्थान के लिए चल पड़े।

उपदेशों की उनकी शैली होती ही इस प्रकार की है, कि उनका प्रत्येक शहद भंत्र की तारह असर लाता है, और उनकी बात कानों में ज उतार कर सीढ़े हृदय में उतारती है। जिन साधकों ने उनके द्वारा आयोजित साधनात्मक शिविरों में भाग लिया है, वे इस बात के साक्षी हैं। उनकी बाणी में उतना प्रभाव इसीलिए है, वर्तोंकि यह वाणी किसी सब्द अथवा महापुरुष की न होकर परछाही की ही है। उनके एक दुशारे पर शिष्य गर्वन बोले को टैयार रहते थे, तो उसी लिए कि वे सायात् ब्रह्मस्वरूप ही हैं, किसी व्यक्ति अथवा संसारी में उठानी क्षमता नहीं हो सकती। उपने उपदेशों को वे मात्र शिष्यों को पालन करने के लिए ही नहीं करता है, अपितु स्वयं अपने जीवन में भी उतारते रहे हैं।

स्त्रेज कहे परेविक की त्वं स्त्री ।
मैं कहता भर्त्तिवन की देस्त्री ॥

पूज्यपाद गुरुदेव ने किसी भी विषय पर प्रवचन किया है, तो उसे स्वयं के अनुभवों द्वारा स्पष्ट किया है। इसके लिए उन्हें कभी भी किसी शास्त्र या ग्रन्थ की आवश्यकता नहीं पड़ी। श्रीकृष्ण की भाँति उन्होंने गृह रहस्यों को मात्र समझाया ही नहीं है, अपितु उसका जंकन शिष्यों के हृदय में कर दिया है।

वशदावरति श्रेष्ठस्तत्त्वदेवतरो जनः ।

स वत्प्रसादं कुरुते लोकस्तवनुवर्तते ॥

महापुरुषों द्वारा किए गए कार्य एवं दिए गए उपदेश आजे

वाले द्वारों के लिए प्राचीय स्वरूप होते हैं, परमप्रवशक होते हैं।

१०८० तो हैरपाल गिर्जे उपग्रह करती है

बस रंगों का एक पर्याप्त नहीं, आगोद-प्रमोद कर लेने का अवसर नहीं, होली तो एक संदेश है इत्य में जीवन के चार पुरुषार्थों में से एक पुरुषार्थ 'काम' को सिद्ध कर लेने का, जिससे आगे के पुरुषार्थों की सफलता में कोई संदेह नहीं रह जाए . . . और यही सम्भव कर देती है यह साधना इस प्रकार . . .

खुद के ही समीप ला देने वाला होता है यह
अवसर और क्षण - होली! जब अपने ही अंदर
बिखरे रंगों से अपना परिचय होता है। जब आकाश की महन
नीलितिमा मी आच्छादित सी हो जाती है अर्द्धर-गुलाल के उड़ते
अनेक रंग के मेंढ़ों के बांध; जब कृष्ण पहुँचती है उन्मुक्त धारण की वे
किलकारियां जो पिचकारियां ऐ बिखरे रंगों से भी कहीं न्यादा
गहरी होती हैं... और दो छद्यों के परस्पर धर्षण से उत्पन्न
चिंगारियों में मस्म हो जाता है वह सारा अन्नाकल्प जिसका
भर्य होना होलिका-अर्जिन में किसी भी यज्ञाहृति को समर्पित करने
से कहीं अधिक आवश्यक होता है। होली तो मन को उन्मुक्त कर
देने का यंदेश होती है, पर्व की किसी भी जड़ धारणा के मरण
विपरीत। इस पर्व पर यदि मन ही उन्मुक्त न हो सका, तो उसमें
किसी नूतन रंग के प्रविष्ट होने की धारणा भी किसे बन सकेगी?

ज्यों पृथ्वी के गर्भ में प्रवाहित कोइ नलधारा महसा पृथ्वी का कठोर आवरण बेघ एक कुष्ठार बन पहले आकाश का चुम्बन करके आगे बढ़ती है और उत्ताह के साथ फिर धरा पर बिशुर नरन मा करती है, कालकाल-छलछल की मधर संयोगीत

समिति प्रगति

ये शब्दों को रखती अपने पश्च पर प्रव्याप्त कर
 देती है, उसको तो जीवन में उतार देने का
 इनित लेकर प्रतिवर्ष ही आती रहती है हालांका
 आनंद की, मधुरता की, प्रसन्नता की और
 यिलखिलाहट की एक नहीं कई-
 किसी एक या दो व्यक्ति में
 प्रवाहित की है इस प्रकृति ने!
 मैं तो कहीं से कृपणता होती
 पढ़ जाता है, तो केवल
 इस बात से, कि किसने अपने
 सावरण को किनना नहिल
 केसने उनको रुद्ध परम्पराओं
 उलझा दिया है और जकड़ दिया
 वह प्राण के गतियों के लिये।

भटक रहा था तू दुनिया की आवाश नलियों में,
आवाज देकर बुलाया गले अपने लगाया तुझको।
तेसी जिम्मदनी क्या थी, काही अंधेरी शत थी,
देकर अपनी रोशनी पूजन का चांद बनाया तुझको॥

नियम ही नहीं वर्जना बन जाते हैं, वहीं एक चट्ठान सो पड़ जाती है नहज और सरस प्रवाह के मध्य। प्रवाह के मध्य किसी चट्ठान को डाल देने से किसी भी प्रवाह की गति स्मृतिं नहीं की जा सकती है, अपितु ऐसे अवरोध के पीछे जो कुंठा सूपी बबाव बनता जाता है, वह एक आण आने पर विष्वस करता हुआ सहन जगति के स्थान पर विनाशकारी वेग को भारण कर लेता है।

मनुष्य मन का सहन प्रवाह होता है काम! केवल सन्तानोत्पत्ति के रूप में ही नहीं बरन् प्रत्येक सृजन के गूँज में जो वेग होता है वह काम ही होता है। कामतत्व की इस जगत में उपस्थिति से ही यह जगत सरस है, गतिशील है—इस तथ्य की उपेक्षा कर देना, न तो भौतिक आर्थि में तर्क संगत होगा और न ही आध्यात्मिक सनदर्भों में हो, क्योंकि आध्यात्म के द्वेष में गी चिस वेग के माध्यम से कुण्डलिनी जागरण सम्भव होती है, राहस्यार्थेदेन के द्वारा ईश्वर या ब्रह्म से पूर्ण तादात्मय की स्थिति निर्मित होती है, परमानन्द अवश्वा समाधि की उपलब्धि होती है, वह वेग मूलतः कामतत्व का ही वेग होता है। काम तत्त्व स्वयं में न शलील है न अशलील। यह केवल एक स्पन्दनशील तत्त्व है और निर्मर करता है किसी भी व्यक्ति के मानस पर, कि वह इस स्पन्दन की किस दिशा में गतिशील करता है।

केवल ऊर्ध्वगामी अथवा अधोगामी ये दो गतियां ही नहीं, कामतत्व की ज्ञेनानेक गतियां सम्भव हैं। एक कवि इसी स्पन्दन के माध्यम से काव्य सूजिन कर सकता है, तो एक संगीतविज्ञ कोई राग। योगी इसी तत्त्व को परिवर्तित कर लेते हैं स्पन्दन चराचर के प्रति एक आत्मीयता के रूप में, तो वहीं दार्शनिक के लिए सहायक हो जाता है यह गूँह रहस्यों का नियान प्राप्त करने में।

काम तत्त्व का निरूपण केवल यीन रूप से करता अपर्याप्त

उद्यो भगवान् प्री त्रणपति की

सहृदयिणी हैं अद्वितीय सहवारी हैं बुद्धि (सिद्धि), ठीक उसी प्रकार कामदेव की सहृदयिणी हैं—प्रीर्ति और सहवरी हैं रति और इन्हीं अर्थों में कामदेव की उपासना किसी अश्टलीलता की सूचक नहीं वरज सूचक है जीवन की उस परिपूर्णता की जो परिदृप्ति भी हो ...

है। कामतत्व को तो केवल एक सम्पूर्ण दृष्टि के माध्यम से ही परखा जा सकता है और तब इस समन्वयील तत्त्व के माध्यम से समर्जन प्रक्रिया में व्याप उस स्पन्दन को पहचाना जा सकता है, जो वास्तव में एक दैविकता न होकर साक्षात् ईश्वरीय विनाम होता है।

जीवन की आविरल बहनी नदी में भौतिक व आध्यात्मिक पद्धों के मध्य जो समन्वय स्थापित हो सकता है, वह अर्थ व काम के दो खण्डों पर बने एक मेनु के माध्यम से ही हो सकता है। व्यक्ति भौतिकता के तट पर खड़ा होकर जिस धर्म के माध्यम से अपनी याजा को सम्पूर्ण करना चाहता है वह क्रमशः अर्थ व काम को स्पर्श करने हुए दूसरे आध्यात्मिक तट पर उपलब्ध मोक्ष के द्वारा ही सम्भव हो सकती है। इससे भिज कोई मार्ग नहीं है और यहि है भी, तो किसी धने जंगल में जानी उस पगड़ण्डी के समान है, जो शीघ्र ही कुठाओं के झाड़-झाड़ में उलझाकर व्यक्ति की गति ऐसी कर देती है, कि फिर वह न आगे जा पाता है और न पीछे।

जैसा कि प्रारम्भ में कहा, ऐसा द्वंद्वागक विश्विति तभी उत्पन्न होती है जब मर्यादाएं, वर्जना का स्वरूप लेने लग जाती हैं।



धमण्ड किस बात का करता है? तेश वजूद ही क्या है?
गिटा दे अपनी हस्ती को, अगर कुछ पाना हैं तुझको।
कश्तूरी का मृग हैं क्यों दर-दर भटकता?
मैं वही हूं, जिसकी तलाश मूढ़तों से हूं हूं तुझको।

कामदेव की
उनकी केवल
की साधना
बोनों की स
ही किसी स
कर सकते
इसी कारण
साधना औ

य

ही अथवा
नहां साधन
उल्लेखित
केवल होति
के पन्द्रह दि
समान प्रभ

प्रस्तुत विवे
साधना प्रस्तु
में प्राप्त होन
इस साधना

15.3.99 त

चाहिए, जि
होलिका द
पीले बस्त्र
ओर मुख
बैठे तथा स
सामग्रिया
ले, जिसमें
साधना वे
व्यवधान ह
है। आसन
तीली की
शाली में

जीवन की अविरत छहती नदी में
भौतिकता व आध्यात्मिकता के दो तर्तों का
सम्पर्क सम्भव होता है जिस सेतु से, उसके
स्तम्भ होते हैं – अर्थ व काम। जिनका स्पर्श
करते हुए धर्म से आरम्भ हुई यात्रा भीक तक
की पूर्णता कर सकती है।

काम भी जहां तक मर्यादा के अन्तर्गत ग्रहणीय होता है, वही तक
उसकी सकारात्मकता व्यापी रहती है, कर्मना के अन्तर्गत काम न
तो गतिशील हो सकता है और न प्रशंसनीय ही। काम स्वयं में
कोई धृणित भावमुम्भि ही नहीं, व्योकि इसकी उत्पत्ति साधात्
मगवान ब्रह्म के मन द्वारा ही सम्भव हुई है।

गवान ब्रह्म के हृदय पक्ष के मन्त्रन द्वारा उत्पत्ति होने
के कारण ही कामदेव की एक उपमा ‘मन्मथ’ भी कही गयी है।
यन के मन्त्रन द्वारा उत्पत्ति होने वाला यह देव इसी कारणवश
किसी के भी मन में ऐसी हलचल मचा देने में समर्थ है जिस
हलचल के उत्पन्न हो जाने के पश्चात ही जीवन की जड़ता वृत हो
सकती है और मन पर पढ़े हुए बोझिलताओं के आवरण स्वतः ही
विद्यार्थ होने की स्थिति में आ जाते हैं।

उन्मुक्त हृदय में ही अध्यात्म की सुरुषि का प्रवेश हो
सकता है, इसी कारणवश कामदेव की उपाधना केवल साधना
पक्ष का ही नहीं वरन् धर्म का भी अधिभान्य अंग रहती है। यूं
साधना और धर्म परस्पर में दो विपरीत स्थितियाँ हैं भी नहीं। धर्म
किस प्रकार से एक गतिशील स्वरूप प्राप्त कर सके, इसी प्रश्न का
व्यवहारिक उत्तर होती है साधनाएँ।

कामदेव की साधना ठीक उसी प्रकार की सहज व
सात्त्विक साधना है जिस प्रकार से कोई अन्य पुरुषार्थ सम्बन्धी
साधना। यदि कामदेव की साधना को लेकर मनीषियों के मन में
कोई छंटा होता, तो व्याप्ति सम्पन्न किया जाता जैव नवरात्रि के
कुछ ही विमों के अंतराल पर अनंग वयोवशी का पर्व?

वास्तव में शक्ति तत्त्व की भी तभी सार्थकता है, तभी
उसका पूर्णित है जब उसमें काम तत्त्व के रूप में सूननशीलता
का गुण आ समाया हो और इसी बात का अंदेश लेकर प्रतिवर्ष ही
आती रहती है होली।

होली के अवसर पर कामदेव साधना सम्पन्न कर, मध्यमे
चैत्र नवरात्रि के अवसर पर शक्ति साधनाएँ सम्पन्न करते हुए पुनः
अनंग वयोवशी को कामदेव साधना सम्पन्न करने का अर्थ है –
शक्ति का जीवंतता वद, वेग का और उल्लास का ऐसा चक्र निश्चित
करना, निशासे सम्पूर्ण वर्ष के लिए ऊर्जा का संग्रहण किया जाए।

विन्दु कामदेव साधना से अधिसंरक्षक साधकों कवल निस
रूप में परिचय है वह एक प्रकार से भ्रूःरूप परिचय है। भ्रविष्य
पुराण के अनुसार निशासे रूप में कामदेव की साधना करने का कोई
भी विशेषार्थ नहीं होता, जब तक उनकी सहचरी के रूप में रति की
तथा सहधर्मिणी के रूप में प्रीति की शो संयुक्त साधना न की जाए।

निरो सामान्यतया कामोपायना कहते हैं वह कामदेव-
रति की ही साधना होती है। पृथक रूप से न तो कामदेव की
साधना करने का कोई अर्थ है और न पकांगी रूप में रति की
साधना करने का, किन्तु कामदेव रति की ऐसी साधना मूलतः वही
तक सीमित होती है जहां नक पक जाए व एक पुरुष के सम्बन्ध।
दूसरे शब्दों में कामदेव-रति की साधना केवल दैहिक पक्षों तक ही
साधना है, वैवाहिक सुख व श्रेष्ठता की साधना है।

कामदेव-रति साधना दैहिक पक्षों से विस्तारित होकर
अन्तःपक्ष का तब स्पर्श करती है, जब इसी साधना के साथ कामदेव
की सहधर्मिणी प्रीति की भी साधना सम्पन्न की जाए। किसी भी
देव की सहधर्मिणी ही वास्तव में उस देवता की शक्ति का आधार
होती है, वही उस देवता की साधना का अन्तःपक्ष होती है। सहचरी
की स्थिति तो केवल सम्बन्धित देवता के लीला विस्तार तक ही
सीमित रह जाती है। सहचरी की साधना सम्पन्न करने का अर्थ है –
उससे सम्बन्धित देवता का केवल स्थूल परिचय प्राप्त करना,
जबकि कोई भी देव अपने स्थूल (अर्थात् बाढ़ा) स्वरूप से कहीं
अधिक अपने अन्तःपक्ष में हो तो विस्तारित व वरदायक होते हैं।

दूसरी ओर कामदेव एक ऐसे देव पुरुष की साधना है,
जो जितना अधिक व्यक्ति के बाढ़ा पक्ष से सम्बन्ध रखते हैं, उसी
सीमा तक किनी भी व्यक्ति के अन्तःपक्ष से भी सम्बन्ध रखते हैं।
कामतत्व की आङ्कड़, भावना, वेग इत्यादि मनोभावनाओं की जहां
व्यक्ति के मन में उपस्थिति होनी आवश्यक होती, ही वही सौन्दर्य,
पृष्ठा, दृढ़ता, गति के रूप में उपस्थिति होनी अनिवार्य होती है।

तभी एक सम्पूर्ण विवर का निर्माण हो पाता है और इसी कारण



हमेशा नहीं कह पाऊँना, ये बातें जो कहनी भी तुम्हें,
सज्जा ही जाना, वह दशारे जो कर दिए हैं तुम्हें।
क्यों चेहरा नमनीन है? किस बात पे रोया है तू?
बहाते हुए आंशु शर्म आती नहीं तुम्हें!

ॐ 'जबवरी' 99 मन्त्र-तत्त्व-यंत्र विज्ञान '56' ल

कामदेव की जहां केवल रति के साथ साधना पर्याप्त नहीं है वही उनकी केवल प्रीति के साथ साधना भी पर्याप्त नहीं है। कामदेव की साधना तो तब पूर्ण होती है जब उनके साथ रति एवं प्रीति दोनों की साधना सम्पन्न की जाए। केवल रति-प्रीति युक्त कामदेव ही किसी साधक के मन में चिरस्थायी होकर उसे वह भाव प्रदान कर सकते हैं जो भाव होली जैसे विलक्षण पर्व का होता है और इसी कारणावश होलिका दहन की रात्रि में कामदेव से सम्बन्धित साधनाओं को सम्पन्न करने का विशेष महत्व कहा गया है।

यूं तो होली पर किसी भी साधना को, चाहे वह तांत्रिक हो अथवा भांत्रोक्त, उसे सम्पन्न करने का सिद्ध मुहूर्त होता है और जहां साधनात्मक दृष्टि से होली के मुहूर्त की बात आती है वहां यह उल्लेखित करना आवश्यक हो जाता है, कि होली का तात्पर्य केवल होलिका दहन की रात्रि नहीं बरन होलिका दहन की रात्रि के पन्द्रह विन पूर्व से लेकर दहन के पश्चात की पन्द्रह रात्रियां भी समान प्रभाव रखती हैं।

इस पर्व की मुख्य भाक्ता को ध्यान में रखकर इस लेख में प्रस्तुत विवेचन के आधार पर साधकों के लिए इस वर्ष एक दुलभ साधना प्रस्तुत की जा रही है, जिसका किसी अन्य साधनात्मक ग्रंथ में प्राप्त होना कठिन ही है। रति-प्रीति के संयुक्त प्रभावों पर आधारित इस साधना को साधक अथवा साधिकाएं दिनांक 20.2.99 से दिनांक 15.3.99 तक की किसी भी रात्रि में सम्पन्न कर सकती है।

इस साधना को सम्पन्न करने के इच्छुक साधक को चाहिए, कि उपरोक्त दिनांकों के मध्य की किसी भी तिथि में अथवा होलिका दहन की रात्रि में स्नान आदि कर दस बजे के आसपास पीले वस्त्र धारण कर, पूर्व विश्वा की ओर मुख कर, पीले रंग के आसन पर बैठे तथा साधना की समस्त आवश्यक सामग्रियां पहले से ही अपने पास रख लें, जिससे बार-बार उठना न पड़े।

साधना के मध्य बार-बार उठना अवश्यकीय होनी में आता है, जो सफलता को संदिग्ध बना देता है। आसन पर बैठने के बाद दत्तचित्त भाव से पिसी हल्दी व किसी तीली की सहायता से किसी स्वच्छ स्टील की याली या तांबे की याली में ऊपर दिये यत्र का अंकन करें। यदि आप चाहें तो इसे

रति-प्रीति की यह साधना विवारक साधना नहीं है किसी शरीरिक वुर्डलता की वज्र उससे भी कठीं अधिक सहायक है उस मानसिक दौर्बल्य के विनाश में जिससे शैषिणी आ जाता है तज में और नीरसता व्याप्त हो जाती है मन में...

भोजपत्र पर भी अंकित कर सकते हैं।

अंकन को कल्पना प्रभावित है, इसमें चिवारक यी चीराल की भावशक्ति नहीं है। अंकन को कल्पने के पश्चात जहां-जहां 'भी' एवं 'ही' बीजाक्षर अंकित हैं, वहां एक एक लघु नारियल को स्थापित करें तथा अंकन के मध्य में जहां 'कली' अंकित है उसके अपर कामदेव यंत्र स्थापित करें। सभी लघु नारियलों का पूजन श्वेत चंदन, अक्षत, सुगंध (इत्र) एवं पुष्प की पंखुड़ियों से करें तथा कामदेव यंत्र का पूजन प्रत्येक बार कुर्कुम से यंत्र पर एक टोकड़ा या बिन्दी लगाते हुए निम्न प्रकार से मंत्रों द्वारा करते हुए करें—

ॐ कामदेव लमः, ॐ कामदेवदेव लमः,

ॐ मन्मथाद लमः, ॐ वस्ततसर्वदाद लमः,

ॐ स्वस्मरशीत्याद लमः, ॐ पुष्पधन्त्यद लमः;

ॐ मन्वनाद लमः, ॐ कंवर्पद लमः।

इसके पश्चात् कुछ पुष्प की पंखुड़ियां, अक्षत एवं सुगंध यंत्र पर बैटकर, अपनी मानोकामनाओं की पूर्ति की प्राप्ति करते हुए, शुच धी का एक बड़ा दीपक जलाकर मन्मथ माला से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र नप सम्पन्न करें—

// ७५० रति वित्तास प्रीति प्रीत्यर्थं वस्त्रै स्तौ उमः //

Om Rati Vilas Preeti Preetyarthe Kleem Soum Om

मंत्र नप के बाद रात्रि में साधनारथन पर ही सोए तथा यूसरे दिन प्रातः सभी सामग्री की किसी सरोबर या नदी में विसर्जित कर दें। यदि आगे भी १५ दिनों तक उपरोक्त मंत्र की नित्य प्रति एक माला मंत्र नप सम्पन्न करने रहे, तो विशेष लाग्नप्रद होता है।

कामदेव से सम्बन्धित अन्य साधनाएं तो फिर भी सीमित अर्थों से युक्त अथवा एकलंगी की जा सकती हैं, किन्तु प्रस्तुत साधना विधि को सम्पन्न कर साधक 'काम' को एक पुरुषार्थ के रूप में सिद्ध कर ही लेता है, इसमें संशय के लिए कोई भी स्थान नहीं।

साधना सामग्री पैकेट — 240/-

सर पटकोगे, रोओगे एक दिन,

मेरे चले जाने के बाद,

मैं कैंगड़ हूं, आझी मेरी पहचान नहीं है तुम्हें।

— पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ० जारायण दत्त श्रीमाली जी

कथणीं बद्धणीं जोग न होई

योग अर्थात् जीवन में दो पक्षों का सम्मिलन! केवल अद्यात्म की नहीं वरबन सम्पूर्ण जीवन की घटना होती है योग, जीवन के हर पुरुष क्षण एक जो केवल कहने-सुनने से संताय नहीं हो जाती। जीवन के कल में आपु अजेक उतार-चढ़ावों के माध्यम से हस्ती तात्पर एक छोड़ा हर ही है ल्यामी अनुश्रुतानंद जी द्वाद्या लिखिता 'सबक वहे शो हंस हमारा' उपन्यासिका की यह तेरहवीं कड़ी . . .

सुबह उत्कर मैंने पैट कमीज को अलग रखा और किर से अपना बड़ी गेरुआ चोला निकाल लिया। बहुत बुआ सांसारिक पेषभूषा में रसार से धुलने-गिलने का प्रयत्न! और जाकर गगा में स्नान कर अपने तन-मन को हल्का किया यहाँ नुझे पग-पग पर अपने गेरुए चोले का लाभ मिल रहा था और कहीं किसी ने मुझसे कोई रोक टोक नहीं की। दोपहर तक का समय तो कौपुलों में ब्याही ही गया, किन्तु सांयकाल मन में पुन विवार-विगश का क्रम चल पड़ा। मुझे यह बात मध्य रही थी कि मैं पूज्यपाद गुरुदेव को दिन सूचित किए और विना उनकी अनुमति के दाराणसी से गूँ चला आया हूँ। किन्तु मैं ऐसा करने को विवश हो गया था। सांयकाल मैंने पूज्य गुरुदेव से जोधपुर कोन पर बात करनी चाही किन्तु नुझे यह जानकर बहुत खेद हुआ कि पूज्य गुरुदेव दो दिन हुए अपने किसी विदेशी शिष्य के आमन्त्रण पर विदेश बले गए हैं। अब मेरे रागने इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं था कि मैं जो कुछ भी करूँ अपनी अनुश्रुतेना का स्वर सुनकर ही करूँ। वद्यपि वाराणसी से विदा लेते समय राव साहब ने मुझे एक बड़ी धनराशि जबर्दस्ती थामा दी, किन्तु प्रश्न नात्र यही नहीं था अपितु यह था कि इन क्षणों का सदुपयोग कैसे किया जाए।

रात्रि के क्षण आए और समस्त प्रकृति ही निद्रा

- पूज्यपाद गुरुदेव की इस्तलिया में

अह - न्तर्दिन मी जिन्दगी जिन्दगी न रही
हम्म भृ के लिये रोना हुई जाती है।
जिन्दगी यो तो हमेशा से परेशान थी
आओ तो हर सांसा परेशां नुई जाती है।

— जनपरी 99 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '58'

की क्रोड ने दसी गयी किन्तु मेरे नेत्रों में निद्रा का कोई लक्षण नहीं था। रात्रि की उस निरताबत्ता में विगत दिनों की घटनाएँ चलचित्र की भाँति सामने आने लगीं। किसी तरह मैंने गो फटों की प्रतीक्षा की और पूर्व की ओर उजाले का अनुमान होते ही जाकर गगा में अपने को बुबोकर अपने को शात करने का प्रयास करने लग गया।

किर तो नित्य रात्रि का यही क्रम हो गया कि मैं अपनी शैव्य पर पहुँचा नहीं कि मन में ढंड छिड़ जाता जभी मैंने एक कथा पढ़ी थी कि एक राजा को यह जानने की इच्छा हुई कि उसका राज्यकाल उसके पिता एवं पितानह से किस प्रकार मिलते हैं? राज्य का सबसे बृद्ध व्यक्ति हुँडा गया और उसे राजा के सामने प्रस्तुत किया गया। अपने राजा की जिज्ञासा सुनी और एक घटना से अपनी बात को स्पष्ट करने की अनुमति मांगी। उसने बताया राजा के पितानह का शासनकाल था तभी एक बड़े मेले में नगर के नगर सेत की पुत्रवधू भगवद रथ जाने से रास्ता भूल गई, जिसे वह अपने धर ले गया। रात भर उसके विश्राम एवं सुरक्षा का प्रबन्ध किया तथा दूसरे दिन सुबह रथ्य उसे लेकर उस के घर तक छोड़ने गया और बदले में कोई भी उपहार स्वीकार नहीं किया।

उसके बाद क्या हुआ . . . ? राजा का प्रश्न था : उसके बाद महाटाज आपके पिता का कबत भाषा और मैलोक्ते लगा कि क्य अच्छा होता कि मैं कुछ उपहार स्वीकृत कर लेता और अपने जीवन को सुधार लेता?" "उसके बाद मैं राजा कबत में तुम जब क्या

लोघते हो?" राज ने अपने शुरी भाष्य कहा, जहाँ ब्रह्मांड था। वह मैं लाटे गए धीन क दृढ़ती फिरती? उत्तर मिल चुका

आदि का रथ दृश्य काल या ही है। यह न साधनात्मक प्रयत्न निरादर व्यवसायिकता ही नहीं था कि से भी प्रयत्न में वर्णित कथा स्थान के बारे इससे यदि कि तो मैं क्षमा प्राप्ति न

और कालीखो अपेक्षाकृत निरही है, जिसके बहा पहुँच कर बलने के बाद साधनात्मक से यह चित्त उस के क्षेत्र में प्रवृत्त नहीं। केवल कोई समस्या है। निजेन में मेरा पद या मेरे देते थे। रहने देता था और काल प्रस्तुत भगवत् विश्वी साधन से है, यह दृष्ट्य मैं मैं उसी पद और इसी विचार का स्वरूप व अपने आपको

ज्ञेयते हो?' राजा उत्सुकता से बीख ही उठा। उत्तर में वृद्ध ने अपने झुर्री भरे चेहरे पर एक विलींग होती हुई स्मित के नाथ कहा, 'भ्रातृया! दमा क्षेत्रे अब तो मन में माता है कि मैं भी विज्ञाना बेकूफ था वहीं सुन्दर और जवान थी और मैं भी जवान था... सुनह तो गहने छीन कर यदि उसे त्वत् माट कट निकलन देता तो वह मुझे क्यं हँड़ती किस्ती?' राजा का वेहरा झुक गया। उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल चुका था।

जब साधक पूछते हैं कि साधना में दिशा, स्थान आदि का क्या अर्थ होता है तो यह भी इसी प्रकार होता है। देश, काल, परिस्थिति सभी का सन पर सूक्ष्म प्रभाव पड़ता ही है। यह बात और है कि इसका कोई विशद विवेचन साधनात्मक ग्रन्थों में नहीं मिलता। मैं विद्याचल देवी के प्रति निरादर युक्त नहीं हूँ किन्तु वहा का क्षेत्र तो अब व्यवसायिकता से भर गया है और फिर मेरे लिए यह सम्भव ही नहीं था कि मैं वहा अधिक रामय तक रुकता। अतः वहा से भी प्रयाण कर देने का मानन्त बना लिया। केवल पुण्याओं में वर्णित कथाओं के आधार पर मैंने न तो कभी किसी तीर्थ स्थान के बारे में कोई धारणा बनाई, न ही बना सकता हूँ। इससे यदि किसी को मेरी उपरोक्त बात पढ़ कर ठेस लगे तो मैं क्षमा प्राप्ती हूँ।

मैंने स्थानीय लोगों से आसापास के बारे में पूछा और कालीखोह की ओर प्रस्थान कर गया। कालीखोह अपेक्षाकृत निर्जन स्थान ने रिष्ट एक प्राचीन तप स्थली रही है, जिसके घिय में भी पौराणिक आच्छान मिलते हैं। वहां पहुँच कर मुझे आतिक तृप्ति गिरी। मैंने जोधपुर से बदलने के बाद मन ने जो कामना की थी कि इसी प्रकार के साधनात्मक स्थानों पर जाऊँगा, वह पूर्ण होती लगी और मेरा चित उस निर्जन स्थान में लग गया। वस्तुतः साधना के क्षेत्र में प्रदृढ़ हो जाने के बाद मन में दृढ़ शब्द रहते ही नहीं। केवल थोड़ी भी अवश्यकताएं होती है जिनकी पूर्ति कोई समरण नहीं होती। दृढ़ तो समाज में रहकर पनपते हैं। निर्जन में न तो कोई संसार नाम पूछने वाला था न ही मेरा पद या मेरी आय गोजन की व्यवस्था ग्रामीण जन कर देते थे। रहने के लिए एक घना वृक्ष अपनी छाया प्रदान कर देता था और वस्त्र मेरे पास थे ही।

कालीखोह की पुण्य भूमि पर रहकर ही मेरे मन में वर्तुतः भगवती विद्याचल देवी के लिए समान उपजा। विज्ञी लग्ना ले पूर्व उस लग्ना के लिए चित में एक आवाट बनाना पड़ा है, यह दृष्टय मैंने पूर्णपाद गुफाके के सामीय में टहकट ही कीछु वा औट दै उझी पट अमल करने लगा उन्मुक्त भाव से पूरा-पूरा दिन इसी विचार में निकल जाता कि भगवती विद्याचल देवी का स्वरूप क्या होगा, और ऐसा विन्नन करते समय मैंने अपने आपको किसी पूर्णप्रह से नहीं बाधा था। साधकों को

इसीलिए शास्त्र अध्ययन प्राचीनकाल में गुरु निषेद्ध कर देते थे। क्योंकि शास्त्र अध्ययन करने से जहां एक और ज्ञान को पुष्ट करने में सहायता मिलती है वही मन में अनेक बातें दुराग्रह बनकर रिश्तर हो जाती हैं जिसके फलस्वरूप साधक कभी अपना विन्नन पुष्ट नहीं कर पाता है। स्वतन्त्र विन्नन ही पुष्ट हो सकता है आरोपित विन्नन नहीं। यह भी साधना का सूत्र है।

विद्याचल देवी का स्वरूप अनेक साधकों की दृष्टि में एक पूर्ण तांत्रोक्त देवी का है, किन्तु मुझे तो साक्षात् वे बन देवी ही प्रतीत होती रही। वन देवी की कल्पना एक नितान ग्रामीण कल्पना नहीं होती इसके शास्त्रोक्त विवरण भी मिलते ही रहते हैं। ज्यो शाकम्भरी देवी के अन्य रसरूप तो फिर भी विद्वानों के गढ़ हो सकते हैं किन्तु वन देवी के रूप में ग्रामीण विन्नन में भगवती दुर्गा की जो परिकल्पना की गई वह जीवतास के अत्यधिक निकट है, उसमें भमत्व है और ऐसा सब कुछ निश्चलता से है। मैं जीवन में ऐसी सुखद रिश्त प्राप्त कर आत्मलीन होने लग गया था। और आत्मलीनता की उस रिश्त में स्वतः विन्द्य देवी की अभ्यर्थना में ये श्लोक प्रस्तुति डॉ उदे, जिन श्लोकों द्वारा पूज्य गुरुदेव ने विन्द्य देवी को अपने सम्मुख प्रकट कर तत्र के अत्यन्त गुप्त रहस्य अपने शिष्यवृन्द के समक्ष रपष्ट किया था—

मर्द विम्मा तं देवि! विन्द्यपर्वत वामिनी
सर्वशत्तिभ्यां देवि शुभनेत्री पटात्पटा॥
वर्वार्य मामिनी आता देवमाता जगन्मधी॥
सर्ववाणी निटाकृष्ण देहि मे पटमेष्टितम्॥

मैं भाव विट्वल हो अपने परमाराध्य श्री गुरुदेव के साथ ही मा विन्द्य की वन्दना कर रहा था, और तभी एक शुभ्र ज्योत्सना मेरे सम्मुख प्रकट हुई और धीरे-धीरे उसने नारी स्वरूप धारण कर लिया। उनका वह स्वरूप सामान्य नारी का नहीं था, अपितु यूँ लग रहा था मानो नां की सम्पूर्ण वाल्सल्यता एवं करुणा ने साकार रूप धारण कर शिशु की पुकार सुन, उसे अपने अक में उठा लेने के लिए प्रस्तुत हो गई ही। मेरा रोम-रोम भगवती विद्याचल देवी के प्रति कुतज्ज हो उठा।

— किन्तु प्रकृति को कुछ और करना था उसे कुछ और ही स्त्रीकार्य था।

मानव मन वृत्ति यह स्पृह होती है कि उसे एकल मिले लग्नमें यह कमल औट भी प्रलक्षा दे होती है किन्तु इसके बाहर भी मन अपने ही अग्नि किण्वी व्यक्ति दे जानीश करने के अनुष्ट भी रहा है उस एकाकी स्थान में अपने एकान्त सुख को भोगता हुआ भी यदा-कदा मेरा मन किण्वी से वार्तालाप करने के लिए उद्धग्न होने लगा, कि तभी मेरे जीवन में त्रिलोचन नाम के

15 जनवरी

16 जनवरी

17 जनवरी

18 जनवरी

19 जनवरी

20 जनवरी

21 जनवरी

22 जनवरी

23 जनवरी

24 जनवरी

25 जनवरी

26 जनवरी

27 जनवरी

28 जनवरी

29 जनवरी

एक बाले का आगमन हुआ। अपने आप में सरल निश्चल और अपनी बासुरी की धुन पर खुद ही झूमने वाला त्रिलोचन सहज ही मेरा मित्र बन गया। वह ज्याला नहीं साक्षात् बटुक मैरव ही था क्योंकि यदा-कदा मुझे जिस किसी वस्तु की भी कामना होती वह उसे पलक डापकते पता नहीं कहा से लाकर प्रस्तुत कर देता था। सब से बढ़कर तो उसका आत्मीयता से भरा व्यवहार था और एक प्रकार से मेरे मन में प्रेम रनेह के जो माय समय के प्रवाह के साथ मुझा गए थे वे जीवित होने लगे।

दिनभर उसकी चरती हुई गायों को देखता और उसकी बासुरी की धुन को सुनता तथा सांयकाल बादलों की ओट से भगवान् सूर्य को विविध रंगों के साथ छुपते देखता तथा प्रातः यिदियों की यह चहवहाट से आंखें खोलता — मुझे लगता था कि उसे साक्षात् रवर्ग में ही आ गया हूँ प्रेम से ही प्रेम उपजत है यह बात मैंने त्रिलोचन के दिए गए निश्चल उन्हें ही तीव्री भैंट समझी।

ऋतु अपने नियत रूप में परिवर्तित हो रही थी और शीतकाल के आगमन के साथ-साथ मुझे एक लग्नी कम्बल की आवश्यकता भी महरूसा होने लग गयी थी। सर्वं की भाति मैंने अपने 'बटुक मैरव' त्रिलोचन से प्रार्थना की तो उसने सरल सा उत्तर दिया 'इसमें कौन सी बड़ी बात है, मैं कल ही मद्रासी बाबा से कहे करला दूगा।' मैंने यह नाम पहले नहीं सुना था। यूँ भी मेरी त्रिलोचन से जगत-प्रपञ्च पर वारा होती ही नहीं थी, जो कभी प्रसंगवश सुन सकता। मेरी उत्सुकता बढ़ी और मैंने जानना चाहा कि ये महानुभाव कौन हैं? प्रत्युत्तर में दूसरे ही दिन त्रिलोचन ने मुझे ले जाकर मद्रासी बाबा के सामने प्रस्तुत कर दिया।

मद्रासी बाबा अपने नाम के अनुरूप किसी भी दृष्टि से दक्षिण भारतीय नहीं प्रतीत हो रहे थे। एक वयोवृद्ध व्यक्तित्व जो श्वेत केशों एवं श्वेत श्वस्त्रों का स्वामी था, अपनी सम्पूर्ण विनिप्रता से एक साधारण से घर ने बेटा ग्रामीण जन की समस्याएं सुन रहा था। मुझे घोर निराशा हुई। मुझे वे आध्यात्मिक व्यक्तित्व के स्वामी नहीं लगे। आता ही मुझने को ही था कि एक घोर गम्भीर आवाज ने मुझे बाबा लिया, 'मूँक जामे अनुग्रहान्वद! अब छाप है।'

वे मेरा नाम लेकर ही मुझे बुला रहे थे। मेरे लिए कोई विशेष छतप्रभ कर देने वाली घटना नहीं थी। मैंने अपने संन्यस्त जीवन में ऐसे अनेक सन्यासियों को देखा था जो कि कर्णपीशाचनी की साक्षणा से ऐसी बातें सहज ही ज्ञात कर अपने सामने वाले को अचम्भित कर देते हैं किन्तु उनका अगला वाक्य अत्यन्त गूढ़ था और मैंने पूज्यपाद गुरुदेव को अनेक अवसरों पर इसी प्रकार से सूत्र रूप में

मात्र कुछ शब्द ही कहते सुना था।

मैं रुकने के लिए विषय था और मुड़ कर उनकी ओर देखा तो उनकी करुणारिता आंखें कुछ इस रूप से स्वादित हुई थीं वे कोई स्वीकृति ही प्रदान कर रही हैं। आज मैं कई वर्षों बाद समझ पाता हूँ कि वह मूँक इंगित वस्तुतः पूज्यपाद गुरुदेव के ही रहूँगे रूप में उपस्थित होने के संकेत थे। किन्तु तब तो मैं मात्र यही समझा कि वे मद्रासी बाबा रुकने के लिए स्वीकृति प्रदान कर रहे हैं।

थोड़े ही अनेक मूँक दर्शन में अप्पी जीवन में विष्टे पढ़े हैं जिन्हें मैं अब लमझाने चाही प्रक्रिया प्राप्त कर पाऊँ हूँ और अशुद्धिता हेतु लोधता हूँ कि व्याध उन दर्शनों को उठी अमर्य यज्ञात रूप में ग्रहण कर दिया होता तो इनना बद्धकर क्यों देखना पड़ता? गुरुदेव तो मुझसे कभी विलम्ब है ही नहीं बल वैसे ही उन्हें विलम्ब लमझाना द्यता कभी अन्तर्वेतना बनकर तो कभी बाह्य रूप से विलम्ब किया जाना देता तो गुरुदेव तो मुझे पाप-पाप पट मिलते दें और मैं पता नहीं किया कुन मैं खेला हुआ चलता द्यता मेरी अपनी कथा भी इसी से मेरी अपनी नहीं है, गुरुदेव को ही अपीत है।

'अब क्षण है।' इस अधूरे किन्तु गृह वाक्य की व्याख्या सुनने की उत्सुकता में मेरा वह पूरा दिन ही बीत गया। अन्ततः जब सायकाल ग्रामीणों को उन्होंने विदा किया तथा त्रिलोचन को भी जाने की अनुमति दे दी तब पहली बार मेरी ओर मुड़कर बोले, 'और वह समाचार है?'

इसके पूर्व तो जैसे वे मेरा अस्तित्व ही भूल दुक्ते थे। मैंने विनिप्रता पूर्वक उत्तर दिया, 'राव आनन्द ही आनन्द है।' उनके मुख पर एक रहस्यपूर्ण रिति तैर उठी और उसी रिति मुद्रा से उन्होंने पुनः एक अशुद्ध वाक्य कहा — 'हा! आनन्द तो होगा ही, दरा, मलूका जी कह ही गए हैं।' मैं अन्दर तक से तिलमिला रहता। ज्यों किसी पुरुष को भरी समा में उसकी पली नपुसंक कह दे उसी प्रकार का अपमान मैंने उस क्षण राहन किया। 'अजगर करे न लाफरी पंछी करे न काम। दास मलूका कह गए सब के दरता रह।' इसी को उन्होंने अत्यन्त तीक्ष्ण व्याख्य रूप में मुझ से कहा था। यदि कोई और अवसर होता तो मैं रवय नहीं जानता कि मैं क्या कर देवता किन्तु गृह गुरुदेव के पास से आने के बाद जो कुछ जीवन जिया था उससे मन में धैर्य की कुछ मात्रा संवित कर ली थी अतः शात भाव से उन्हीं से पूछा कि उनके विचार में मुझे व्या करना चाहिए?

(त्रिमूर्ति)

ज 'जनवरी' 99 मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान '60' ल

यह हमने नहीं किया है इनके कहाँ हैं

किसी भी कार्य के प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में सशब्द-असशब्द के भायना रहता है, कि यह कर्वा सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, काम तो उपस्थित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समस्ति पर वह स्वयं को तनावराहित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिससे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युल ढाल जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहानिहिट के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित गांथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पत्र करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

- | | | | |
|----------|---|----------|---|
| 15 जनवरी | भगवती जगद्भाको लालरंग के पांच पृष्ठ किसी मन्दिर में बढ़ाकर कार्य हेतु जाए। | 30 जनवरी | 'गुरु संधेया' पुस्तक से पृष्ठ के 27 से ध्यान मंत्र को 3 बार पढ़कर पूज्य गुरुदेव का ध्यान करें। |
| 16 जनवरी | प्रातः काल सरसों के तेल का दीपक हनुमान मंदिर में बढ़ाकर आइए, विपदाएं समाप्त होंगी। | 31 जनवरी | 'काली स्तोत्र' ('महाकाली साधना' पुस्तक से) का पाठ करके ही कार्य हेतु जाए। |
| 17 जनवरी | प्रातः काल रोटी पर गुड रखकर गाय को खिला दें। | 1 फरवरी | नीलाल पूज्य 'ॐ निं ओ फट' ('Om Nm Nm Om Phat') मंत्र बोलते हुए 'गुरु चित्र' पर चढ़ाएं। |
| 18 जनवरी | 'ओ क्लीं हों फट' ('Om Kleem Hreem Phat') का 21 बार जप करके ही कार्य पर जाए। | 2 फरवरी | घर से बाहर जाने से पूर्व मन ही मन गुरु ध्यान एवं गुरु मंत्र करें। |
| 19 जनवरी | पक काशन पर कुंकुम से तीन बार गुरु मंत्र लिख कर उसे किसी मंदिर में चढ़ा दें। | 3 फरवरी | 'मातंगी साधना' पुस्तक के पृष्ठ के 65 से 'मातंगी कच' का पाठ कर ही कार्य हेतु बाहर जाए। |
| 20 जनवरी | 'ऐं ऐं छीं ओ स्वादा' ('Ayein Ayein Heeem Om Swada') का 5 बार उच्चारण कर ही कहाँ जाए। | 4 फरवरी | गुरु गीता के श्लोक के 56 का 21 बार पाठ करें। |
| 21 जनवरी | प्रातः काल भगवान सूर्य की अर्घ्य प्रदान कर अपना दिवस आरम्भ करें। | 5 फरवरी | 'ओ निं खिं ओ फट' ('Om Nm Khim Om Phat') मंत्र का 9 बार उच्चारण करके ही कार्य पर जाए। |
| 22 जनवरी | बाहर जाने से पूर्व देसी धो से बनी वसन्त ग्रहण करें। | 6 फरवरी | 'सीधी' ('न्यौछावर 40/-') को जल से स्नान करकर मिठूर से पूजन करके ही कार्य हेतु जाए। |
| 23 जनवरी | प्रत्येक कार्य के पूर्व 'हीं' बीज का सात बार जप करें। | 7 फरवरी | प्रातः 'निखिल मुद्रित्र' ('न्यौछावर 40/-') का पूजन करें, उसे धारण कर ही कार्य हेतु जाए। |
| 24 जनवरी | गुरु मंत्र का जप 11 बार करके कार्य पर जाने से कार्य में सफलता मिलेगी। | 8 फरवरी | भगवान शिव का ध्यान करके ही कार्य पर जाए। |
| 25 जनवरी | प्रातः काल तुलनी को जल चढ़ाएं एवं उसके समक्ष दो अग्रवती लगाकर बाहर जाएं। | 9 फरवरी | 'ओ नमः शिवाय' ('Om Namah Shivaay') का 11 बार जप करके कार्य हेतु जाए। |
| 26 जनवरी | पीपल के पत्ते पर कुंकुम से स्वस्तिक का निर्माण कर अक्षत चढ़ाएं तथा उस पत्ते को किसी मंदिर में चढ़ा दें, सफलता प्राप्त होगी। | 10 फरवरी | 'शिव महिमन स्तोत्र' के सेट का श्रवण करें। |
| 27 जनवरी | प्रातः काल बाहर जाने से पूर्व 'निखिलेश्वर शतकम्' के श्लोक क्र. 21 से 25 का तीन बार पाठ करके कार्य पर जाए। | 11 फरवरी | 'नमदिव्यवर शिवलिंग' ('न्यौछावर 150/-') का जल द्वारा 'ओ नमः शिवाय' बोलते हुए 16 मिनट तक अभिषेक करें; बाद मैं जल को प्रसाद रूप में श्राहण करें। |
| 28 जनवरी | धो के दीपक में एक इलायची डालकर गुरु चित्र के समक्ष रख दें, इसके बाद ही अन्य कोई कार्य करें। | 12 फरवरी | शिव आरती सम्पत्र करने के बाद ही कोई कार्य करें। |
| 29 जनवरी | भगवती जगद्भाको मिठाई का भोग लगाएं। | 13 फरवरी | 'स्त्रादाश माला' ('न्यौछावर 300/-') को धारण किए रहें। |
| | | 14 फरवरी | 'ओ नमः शिवाय' ('Om Namah Shivaay') का दर्शन मिनट जप करके कार्य हेतु जाए। |
| | | 15 फरवरी | 'शिव ताण्डव स्तोत्र' के सेट का श्रवण करें। |

वैदा सामाया द्वं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय के बै सभी रूप यहाँ प्रस्तुत हैं, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उचिती या अवश्यकता के कारण होती है तथा जिहैं जान कर आप स्वयं अपने लिए उचिती का नार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को तीन खंडों में प्रस्तुत किया गया है — श्रेष्ठ, मध्यम और निकृष्ट। श्रेष्ठ समय जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य को, वाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नीकरी से सम्बन्धित हो,

घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय

का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके माय में अंकित हो जायेगा।

यदि किसी कारणवश आप श्रेष्ठ समय का उपयोग नहीं कर सकें, तो मध्यम समय का

प्रयोग कर सकते हैं। इस काल में भी कार्य पूर्ण होता है और प्रतिशत होता है 75% अर्थात् कार्य

पूर्ण होने में विलम्ब होता है, किन्तु सफलता मिलती है।

निकृष्ट समय का उपयोग तो सदा से निविद्ध है, क्योंकि यदि बनते हुए कार्य का प्रारम्भ शुरू वक्त भी निकृष्ट समय में हो जाय, तो वह विश्व जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए, कि निकृष्ट समय में किसी भी प्रकार के कार्य का प्रारम्भ न करे।

प्रेषण : 1 से 13 जनवरी तक दिसंबर अंक में प्रकाशित में समय हूँ ले अनुचर ही वार देखकर श्रेष्ठ समय का निर्धारण करें।

दार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	मध्यम समय	निकृष्ट समय
रविवार (17, 24, 31 जनवरी)	प्रातः 6.00 से 10.00 तक सायं 6.48 से 7.36 तक सायं 8.24 से 10.00 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	प्रातः 10.00 से 2.00 तक रात्रि 10.48 से 1.12 तक	दोपहर 2.00 से 6.48 तक सायं 7.36 से 8.24 तक रात्रि 10.00 से 10.48 तक रात्रि 1.12 से 3.36 तक
सोमवार (18, 25 जनवरी)	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 7.30 तक प्रातः 10.48 से 1.12 तक दोपहर 3.36 से 5.12 तक सायं 7.36 से 10.00 तक रात्रि 1.12 से 2.48 तक	प्रातः 9.00 से 10.48 तक दोपहर 1.12 से 3.36 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.00 से 1.12 तक ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 5.12 तक	प्रातः 7.30 से 9.00 तक सायं 5.12 से 6.00 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
मंगलवार (19, 26 जनवरी)	प्रातः 6.00 से 8.24 तक प्रातः 10.00 से 12.24 तक सायं 7.36 से 10.00 तक रात्रि 12.24 से 2.00 तक रात्रि 3.36 से 6.00 तक	प्रातः 9.12 से 10.00 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 3.36 तक	प्रातः 5.12 से 6.00 तक प्रातः 8.24 से 9.12 तक दोपहर 12.24 से 4.30 तक सायं 5.12 से 6.00 तक रात्रि 2.00 से 2.48 तक
बुधवार (20, 27 जनवरी)	प्रातः 7.36 से 9.12 तक प्रातः 11.36 से 12.00 तक दोपहर 3.36 से 6.00 तक सायं 6.48 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 4.24 तक	प्रातः 6.00 से 7.36 तक प्रातः 9.12 से 11.36 तक दोपहर 2.00 से 3.36 तक रात्रि 10.48 से 12.24 तक	दोपहर 12.00 से 2.00 तक सायं 6.00 से 6.48 तक रात्रि 12.24 से 2.00 तक
गुरुवार (14, 21, 28 जनवरी)	प्रातः 6.00 से 8.24 तक प्रातः 10.48 से 1.12 तक सायं 4.24 से 6.00 तक सायं 7.36 से 10.00 तक रात्रि 1.12 से 2.48 तक	प्रातः 9.12 से 10.48 तक दोपहर 10.12 से 1.30 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.00 से 1.12 तक	प्रातः 8.24 से 9.12 तक दोपहर 1.30 से 4.24 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
शुक्रवार (15, 22, 29 जनवरी)	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 6.48 से 1.12 तक सायं 4.24 से 5.12 तक सायं 8.24 से 10.48 तक रात्रि 1.12 से 3.36 तक	दोपहर 1.12 से 4.24 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.48 से 1.12 तक	प्रातः 6.00 से 6.48 तक सायं 5.12 से 6.00 तक सायं 7.36 से 8.24 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक
शनिवार (16, 23, 30 जनवरी)	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 10.30 से 12.24 तक दोपहर 3.36 से 5.12 तक सायं 8.24 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक	प्रातः 7.36 से 8.24 तक दोपहर 1.12 से 2.00 तक सायं 6.00 से 8.24 तक रात्रि 10.48 से 12.24 तक	प्रातः 6.00 से 7.36 तक प्रातः 8.24 से 10.30 तक दोपहर 12.24 से 1.12 तक दोपहर 2.00 से 3.36 तक सायं 5.12 से 6.00 तक रात्रि 12.24 से 2.00 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक

के जीवन
जलते हैं।
इनमें सब
न हो,
न समय
कैसा हो

मन का
त कार्य

जाता
करें।



सद्गुरुदेवः नानवहितचिन्तकं

अयं ब्रिजः परोवेति नणनात्र संस्थितः ।
रात्रिं दिवं हितं कर्ता लोकरंगनकारकः ॥११॥

अथात् - मेरे और पदाये की भावनाओं से दृष्टि, अपने लिजी त्वार्थ की छोड़ जो रात-दिन लोक कल्याण के कार्यों में व्यहत भगवद् पाद गुरुदेव नारायण जैसे व्यक्तित्व भूलोक में हजारों वर्षों बाक ही भानव कल्याण के लिए अवतरित होते हैं।



जीवन के प्रारन्धिक दर्शनों में जब गुरुवेव बालक ही थे, तब एक बार वे सङ्क पर पैदल-पैदल पढ़ कर वापस घर आ रहे थे। सङ्क किनारे एक घर में उक्खोले देखा, कि एक घर में भव्यकर आग लगी है और बाहर बहुत भीड़ जमा है, तथा एक स्त्री विलाप कर रही है और रो-रोकर कह रही है - 'हाय मेरा बच्चुआ! हाय मेरा बच्चुआ!' उस स्त्री का एक बच्चा अबदर सो रहा था और वारों तरफ भव्यकर आग लगी थी। यदि कोई अबदर उसे निकालने जाता, भी टो बचकर वापस निकालने की सम्भावना न के छारछार थी। ऐसे में जालक नारायण से रहा न गया, उसके हवय से स्त्री का आर्तनाद सुना न गया और झट ही स्कूल का छस्ता पटक कर आग की उल ताण्डव करती लपटों के मध्य कूद गए।

चारों तरफ धूओं और जलों द्वारा लकड़ी के पटरे, बालक नारायण का छद्म जगह-जगह से जला गया, किन्तु शुरू में कुछ दिस्त भी नहीं रहा था। अबदर से रोने की आवाज आ रही थी, उस आवाज के सहारे बालक भीतर चला गया, उसने देखा कि शिशु टाक आग की लपटें अभी नहीं पहुंची थीं। जिन दृष्टि गवांए नारायण ने शिशु को कपड़े में लपेटा और गोद में लेकर बेपरवाह भागा। सांस

लोना मुश्किल हो रहा था, और तापमाल इताला अधिक होने पर भी नारायण किसी तरह शिशु को बाहर निकाल लाया। शिशु को प्राक्षर उसकी माता प्रसङ्गिता से पागल हो गई थी।

बाल्यावस्था में ही मानव के प्रति इतनी कठूली में आ जाना अवतारी पुरुषों के ही लक्षण होते हैं। बाव में तो गुरुवेव का पूरा जीवन ही छस्ता और सङ्कटप्त मानव को आध्यात्म के द्वारा शान्ति देने में ही दीता। यिन्ती में उनके द्वारा शिलान्यास किया गया 'आरोद्यात्म' आज भूर्तरूप लेने जा रहा है, जिसमें अग्रेक रोनी, पीड़ित जन आकर आरोद्य प्राप्त कर सकेंगे, गुरुवेव की चैतान्य शक्ति जीठ पर समर्पित होकर अपने रोनों, दोषों का शमन कर आध्यात्म एवं शान्ति के प्रथ पर अग्नसर हो सकेंगे।

11 Unique Holi Rituals

He life of a human being is closely related to nature, hence only on striking a complete equilibrium with it does one acquire uniqueness and totality. And this equilibrium can only be achieved through the medium of Tantra, which is a way of comprehending the mysterious ways of nature and the intricacies of Sadhana, and thus giving a new shape to one's life.

While collecting these simple practices from the traditional texts and eminent ascetics we were occupied by the single thought of providing unfailing yet moderate practices accomplishing which one could eliminate all deficiencies of one's life. Though these practices can be performed any time of the year, yet they are said to be hundred times more fruitful if accomplished during the time interval that lies between the festivals of *Holi* and *Navraatri*.

1. RAJOG — This is an amazing root which is obtained and energised with Mantras, during the *Mool Nakshatra* (asterism). Following practices can be performed with it.

(i) If it is burnt on Holi with garbage, at the main gate of one's house, then all troubles and paucities are removed forever.

(ii) Diseases and ailments are cured if it is thrown into the "Holika-fire" on the night of Holi, after moving it around the heads of all the family members. (Rs. 60/-)

2. DEVYARUPA — A unique article which is considered extremely rare and is sometimes found on the Ashoka tree.

(i) If a woman has had many miscarriages then it should be tied around the waist of the expecting woman with a black cloth on Holi or any Friday.

(ii) Visit the cremation grounds in the night of Holi and throw a Devyarupa in the South direction after uttering the enemy's name. Thus the enemy is certainly pacified. (Rs. 118/-)

3. CHANDRAVIRAAG — A creation of the *Aghoris*, which they prepare by adding some natural ingredients to potter's clay.

(i) No matter how drastic the conditions, they are immediately pacified if it is thrown into a dry-well.

(ii) For protection of the house and its members one must bury it near the main door in the morning of Holi. (Rs. 51/-)

4. LOHITA — Found abundantly in the hills of Nagaland it has got its name due to its red colour.

(i) A person wearing it is forever freed of the fear of weapon injury. Wear it on Holi or during Navratri.

(ii) The whole family remains safe and well protected throughout the year, if it is offered in the Holika-fire on the night of Holi. (Rs. 45/-)

5. JUGUNA — This beautiful object is extremely miraculous. A Juguna with a hole is considered even more effective and is vastly used in Tantric practices.

(i) Animals and cattle remain safe if a Juguna is buried near the barn.

(ii) To cure diseases in children move it around the head of the child and throw it in the South direction in the night of Holi. (Rs. 105/-)

6. MORTUNG — It has been explicitly praised in the Ayurved texts. It also commands significant place in the Tantric field.

(i) A woman facing problems in her periods should permanently tie a Mortung around her waist on Holi.

(ii) A woman's beauty increases manifold if she wears it secretly under her hair. (Rs. 90/-)

7. SHON — This amazing object obtained from Shonbhadrā is considered to be a very good shield against evil.

(i) If a child is suffering from fever; or if he is under the influence of the evil eye, then a Shon should be moved around the child's head and given to someone as charity alongwith some money, any time between Holi and Navratri.

(ii) Unnecessary quarrels and conflicts come to an end, if it is placed in the house between Holi and Navratri. (Rs. 75/-)

8. TUMUL — Tumul can be extremely useful and rewarding.

(i) On the day of Holi write the name of the person who owes you money on it and then throw it in the South direction speaking aloud his name; thus within a week the debtor himself returns back the money he owes. (Rs. 100/-)

9. DASOUDHI — This amazing object is used in Ayurved as well as Tantra.

(i) Even the worst alcoholic is cured of his drinking habit, if it is tied around his neck on Holi.

(ii) It is extremely helpful in restraining sleep. In fact, Tantrics use it for conquering sleep while performing long duration Sadhanas. (Rs. 60/-)

10. TANTROKT NARIYAL — This gift of Nature can be termed as the essence of Tantra without the slightest hesitation.

(i) The atmosphere of the house remains pure and sacred (unaffected by evils) if such a Nariyal is placed near the entrance, wrapped in a red cloth on Holi.

(ii) For permanent acquisition of Lakshmi (wealth) one must place this Nariyal in one's shop, house or locker in the night of Holi. (Rs. 60/-)

11. HOLIKA — All Tantrics perform special practices on it in the night of Holi, for the realisation of their desires.

(i) If a Holika dyed with vermillion is offered on the idol (picture) of Lakshmi while chanting, *Om Padmaavatyai Namah*, at midnight on the day of Holi, the goddess establishes herself in the Sadhak's home till the next year and showers him with wealth and prosperity year long. (Rs. 80/-)

Hanuman
Ta
Han

In the
even a bit off
Chalisa, whic
power. So m
secluded are
"Bhoot Pishi
to come near

The
the Sadhak
face all adve

"The
Sadhana has
when we, al
Varanasi, aft
very kindly;
the Lord. Th
I was filled w
would make
for my exci
Isht. I feel t
adverse situ

Be
revealed to
to in this pr
which I am
Sadhaks an

1.
Sadhana pe

2.
Sadhana sh

(mixture of
jaggery) an

vermillion a

3.
red worship

4.
of jaggery,

5.
6.

This is a c

Tantrotkt

Hanuman Sadhana



In the Indian context Lord Hanuman finds place in the heart of each and every person and it is frequently seen that as soon as someone faces even a bit of problem, one starts the recital of the Hanuman-Chalisa, which is indeed a divine eulogy packed with great power. So much so that even a child passing through a secluded area at night, involuntarily starts chanting – “Bhoot Pishach Nikat Nahin...” ie May no evil spirit dare to come near me for I am chanting the name of Mahaveer.

Thus each moment the Lord instils into the life of the Sadhak courage and fearlessness, so that he could face all adversities of life boldly.

“Tantrotkt Hanuman Kalp” form of the Hanuman Sadhana has been obtained from revered Gurudev. Once when we, all disciples, reached the city of spiritualism, Varanasi, after having travelled to all parts of India, Gurudev very kindly made us perform this Sadhana in the temple of the Lord. That day fortunately I too was with Gurudev and I was filled with joy on hearing Gurudev announce that he would make us accomplish this secret Sadhana. The reason for my excitement was that Hanuman is my family-God or Ish. I feel that the Lord has helped me overcome various adverse situations in life.

Before commencing the Sadhana, Gurudev revealed to us the rules which should be strictly adhered to in this practice. I had noted down the same in my diary which I am now presenting here for the benefit of other Sadhaks and the readers of the magazine.

1. One should observe celibacy during the whole Sadhana period:

2. The idol or picture of the Lord used in the Sadhana should be bathed with water and *Panchamrit* (mixture of five articles – Milk, Water, Honey, Curd and jaggery) and then it should be smeared with a mixture of vermillion and oil of sesamum seeds (*Til*).

3. One should use red flowers, red clothes and red worship-mat during the Sadhana.

4. One should offer *Choorma* (a well ground mixture of jaggery, butter and chappatis) or a sweet of gram flour.

5. The Sadhana should be performed facing South.

6. Any woman, man or child can do this Sadhana.

This is a completely baseless belief that women should

not perform Hanuman Sadhana. But this is quite right that a woman should not engage in this Sadhana during her periods. And neither should she enter a room where such a Sadhana is going on, once menses have started.

7. This Sadhana practice can be carried out any time of the day ie., in the morning, evening or at night.

8. In the worship of Lord Hanuman water is not offered in the feet of the Lord.

9. The leaves of Holy Basil (*Tulsi*) are very dear to the Lord hence same should be offered.

10. The best day for carrying out this Hanuman Kalp Prayog is Tuesday.

After explaining these rules to us Gurudev gave us a very secret Mantra and the method of using it. The same is being revealed here.

First spread a red cloth and on it place a “*Sankat Nirvarak Hanumat Kalp Yantra*”. Then mix oil of sesamum in vermillion and make eight marks on the Yantra with it.

Then meditate on the form of the Lord chanting the following Dhyana Mantra.

*Atulit Balduhamas Hemsheelaabham Danujayan
krishnam Jaatinamnagra-gaunyam, Sakat geen-nidhaan
Vaanaranaambeesham Raghupati Priyabhaktam
Vaatjostam Namam.*

Thus chanting the above Mantra contemplate that divine and unique powers of the Lord are entering into your heart and body. One must feel that the atmosphere around one's body is becoming replete with cosmic enlightenment and that one's will power is being strengthened.

Then chanting the following Mantra offer eight red flowers one by one. Pray to the Lord to vanquish your problems. With a *Rakta-varṇīya Mala* chant eight rounds of following Mantra.

Om Hoom Hoom Hanumataye Phat

This is a single day Sadhana but one should offer flowers on the Yantra and light a lamp filled with mustard oil regularly every morning for eight days.

On the ninth day throw the Yantra and the rosary in a river. Thus by the accomplishment of Hanumat Kalp Prayog the Sadhak's life is freed of all obstacles and fear of enemies, and he goes on to acquire good education, wealth, health and all that he desires.

Sadhana Articles : 240/-

Audio Cassettes of Divine Sadhanas performed by Gurudev Dr. Narayan Dutt Shrimali.

1. Hanuman Sadhana 2. Durgaarchan

3. Bhagawati Jagdamba Shat Shat Vandan

4. Cheitra Navratri - 95 {7 cassettes containing Sadhanas of Katyayani, Tara, Mahalaxmi, Jagdamba, Dakshin Mahakali and Kushmaandas }

Per Cassette Rs-30/-

Mantra Tantra Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur - 342001, (Raj.), Ph. 0291-432209 Fax. 0291-432010

Any day

Batuk Bheirav

In the present times man is surrounded by problems, obstacles and enemies. Hence he is left with only one alternative – Mantra Sadhana – because it is the only medium through which he can achieve complete victory over his difficulties and enemies. Among such simple and rewarding Sadhanas *Batuk Bheirav Sadhana* commands a distinct position.

Lord Bheirav, as is popular, is the incarnation of Lord Shiva. In the Kali Khand of *Shakti Saangam Tantra* is a small story regarding the origin of Lord Bheirav. According to it a mighty demon, *Apad*, through the powers of penance, had acquired the boon of invincibility. As a result, all the Gods were extremely troubled and they started to think of a way of defeating him collectively. Even as they were thinking thus, suddenly divine rays started emanating from the body of Lord Shiva which took the form of five year old '*Batuk*'. Batuk Bheirav annihilated the demon '*Apad*' and ended the troubles of the Gods. Hence, he came to be known as *Apaduddharak Batuk Bheirav*.

'*Tantra Lok*' has described Bheirav as '*Bhaibheemadibhih Avsteeti Bheirav*' ie. one who protects from the worst calamities and catastrophes.

The populace is generally filled with a sense of apprehension and fear regarding Bheirav Sadhana. Their belief, however is baseless. In fact this Sadhana is extremely simple and easy and can be performed by anyone.

The Sadhak must be well acquainted with the basic facts related to this Sadhana.

1. This Sadhana should be performed with a particular motive.

2. This Sadhana should be performed only during the night. Day time is completely prohibited.

3. The daily offerings remain changing in Bheirav Sadhana ie He must be offered rice porridge on Sunday, 'Laddu' on Monday, ghee and jaggery on Tuesday, curd and jaggery on Wednesday, Laddus of gram-flour on Thursday, roasted grams on Friday and Pakodas of black grams on Saturday. Apart from these, apples and fried wafers can also be offered.

Batuk Bheirav Sadhana

The Sadhak must take a bath during the night time and sit facing the South. Then he must light an oil-lamp in front of the *Batuk Bheirav Yantra* and chant the undergiven verse.

*Bbaktya Namaami Batukam Tarunnam
Trinetram Kaampradaan Var-kapaal Trishooldandaaan
Bbaktartinaabkarne Dadbatam Kareshu Tum
Koustubhaa-bharan Bbusbit-dityadebam*

Then he must obtain the permission of Lord Bheirav with folded hands and commence the recitation of the following Mantra with *Black Hakeek rosary*.

Batuk Bheirav Mantra

*Om Hreem Batukaay Aapaduddhaarnay Kuru Kuru
Batukaay Hreem Om Swaha.*

This twenty-one-lettered Mantra is considered extremely powerful and efficient. If its one round is chanted daily for a month starting from Shiv Ratri then the Sadhak surely fulfils his desires. One can also complete the Sadhana in one day by chanting 30 rounds of the Mantra at one go. One can choose any day.

Apart from this, there are several other practices of *Batuk Bheirav*.

1. For protection from problems & enemies

Light an oil lamp and facing South chant 11 rounds of this Mantra –

*Om Hreem Bheirav Bhayankar Har Maam Raksh
Raksh Hoom Phat Swahaau.*

Do this ritual after 9 p.m. on any day.

2. For enchantment

If a Sadhak chants the afore mentioned Batuk Bheirav Mantra ten thousand times in a jungle or on the bank of a river, on any Thursday morning (before sunrise), then he is able to enchant anyone in the future.

3. For removing poverty

This Mantra is extremely efficacious and is known as *Swarnakarshan Bheirav Mantra* ie. a Mantra which attracts gold. If a Sadhak chants this Mantra ten thousand times during the night of a Wednesday or Friday facing the West, after lighting an oil lamp in front of himself, then he surely attains riddance from poverty.

*Om Ayeem Kleem Kleem Kloom Hraam Hreem Hrum Sakvam
Aapaduddhaarnay Ajamalbaddhaay Lokeshwaraay
Swarnakarshan Bheiravaay Mum Daridrey Vidveshanraay
Om Hreem Maahaabheiravaay Namah.*

In every ritual mentioned here *Batuk Bheirav Yantra* must be placed before oneself during Sadhana. Black Hakeek rosary must be used. Bheirav Sadhana is extremely easy and is said to bestow instant results in the present times. Hence, every Sadhak can accomplish it and attain the realisation of his desires. After the Sadhana throw the Yantra and rosary in a river.

Sadhana Articles : 240/-

Totality



The God the Ma absolute remains nothing Goddess. Ever astounding pre Sundari. Therea any Sadhana of Pain, = way into the life remarkable attri gains unparalle becomes attract company. Truly those who com disability and pr

Besides Sadhaks with w money start to o on this very secr is equivalent to d I have myself see paupers turn into with health and s needs total faith

This Sa from 19.3.99. Af Dhotti/Saree. Sit o of the Guru befor

Light a flowers, and som Take water in you

Om Hre
Vidyaat Tarvaay S

Pray to t
Sahastr

Prabham. Vara
Pushpaambarar
Devataa Roopinn
Poorva Gurum.
Kevalam Gyasi
Sadrisham Tat
Vimalamchala
Bhavaateetam
Namami. Han

Totality Bestower

19.03.99



The Goddess Shodashi Tripur Sundari is one of the Mahavidyas who can bestow totality and absolute fulfilment in life. Her Sadhana means making life complete in all respects and it is a fact that there remains nothing lacking in the life of a Sadhak of this Goddess. Even in spiritual life a Sadhak can make astounding progress once he attains Siddhi of Tripur Sundari. Thereafter he can swiftly and easily succeed in any Sadhana of any God, Goddess, Apsara or Gandharva.

Pain, affliction, poverty and diseases cannot make way into the life of a Siddh of this Mahavidya. A very remarkable attribute of this Sadhana is that the Sadhak gains unparalleled beauty and handsomeness. His face becomes attractive and people cannot resist being in his company. Truly this Sadhana comes as a unique boon for those who complain of weakness, illnesses, physical disability and premature aging.

Besides all this the Goddess also showers her Sadhaks with wealth. Hundreds of avenues of earning money start to open up on their own. To get one's hands on this very secret practice and still abstain from trying it is equivalent to denying all pleasures that life has to offer. I have myself seen old, weak men regain youth and vigour, paupers turn into millionaires and ill ones start to radiate with health and strength all due to this Sadhana. One just needs total faith and devotion to make its magic work.

This Sadhana can be started on any Friday or from 19.3.99. After 9 p.m. take a bath and wear a white Dhoti/Saree. Sit on a white mat facing North. Place a picture of the Guru before yourself.

Light a ghee lamp and offer vermilion, rice grains, flowers, and some sweet made from milk on the picture. Take water in your right palm and chant.

Om Hreem Autma Tatvaay Swaha. Om Hreem Vidyaa Tatvaay Swaha. Om Hreem Shiv Tatvaay Swaha.

Pray to the Guru chanting thus –

Sahastra Dal Pankajam Sakal Neel Rashmi Prabhram. Yaraahhay Karaambujam Vimal Gandh Pushpaambaram. Prasann Vadnamshannam Sakal Devatas Roopinnam. Smaret Shirsi Sangam Tadbhidhaan Poerva Gurum. Brahmaanandam Param Sukhdham Kevalam Gyaan Moortim. Dwandaaateetam Gagan Sadrisham Tatvamasyaadilakshyam. Ek Nityam Vimalamchalam Sarva Dhee Saakshi Bhootam. Bhaavaateetam Trigunn Rahitam Sad Gurum Tam Namami. Hanso Hansah Guruh Shreshtthah

Sukhaanandah Sukhaatmanah. Tasya Smarano Maatrenn Muktiyatratra Na Sanshayah.

Next bathe the *Tripur Sundari Yantra* with water. Place it in a steel plate. Offer vermilion and rice grains on it. Near the Yantra place the *Tripur Sundari Mata*. Offer vermilion on it as well.

Dhyān

Join your palms and pray to the Goddess chanting thus –

Baalaarkmandalaa Bhaasaaum Chaturbaahum Trilochanauam. Paashaam Kush-sharaamashchaupam Dhaaryanteem Shivaambmaje.

Peeth Pooja

Offering rice grains on the Yantra pray to the nine forms of Mother Shakti

Om Vibhootiyel Namah, Om Unmariyei Namah, Om Kauriyel Namah, Om Shrishtiyel Namah, Om Keertiyel Namah, Om Sammatiyel Namah, Om Pushatayei Namah, Om Utkrishtiyel Namah, Om Rishatayei Namah. Asht Devi Pooja

Offering eight flowers on the Yantra one by one chant thus –

Om Baalalaukyei Namah. Baalakee Shree Paadukaam Poojayaami Tarpooyaami Namah. Om Vimalaaukyei Namah. Vimalaa Shree Paadukaam Poojayaami Tarpooyaami Namah. Om Kamalaaukyei Namah. Kamalaa Shree Paadukaam Poojayaami Tarpooyaami Namah. Om Vaumalikaukyei Namah. Venmaalikaa Shree Paadukaam Poojayaami Tarpooyaami Namah. Om Vibheeshikaaukyei Namah. Vibheeshikaa Shree Paadukaam Poojayaami Tarpooyaami Namah. Om Maalikaukyei Namah. Maalikaa Shree Paadukaam Poojayaami Tarpooyaami Namah. Om Shaankaryei Namah. Shaankari Shree Paadukaam Poojayaami Tarpooyaami Namah. Om Vasumaalikaukyei Namah. Vasumaalikaa Shree Paadukaam Poojayaami Tarpooyaami Namah.

Take some more flowers in your hands and chant. *Abheeshi-siddhim Me Dehi Sharannaagat Vatsale. Bhaktiyaa Samarpaye Tubhyam Grihaann Jagadambike.*

Offer the flowers on the Yantra. Also offer some sweet. Next chant 11 rounds of the following Mantra with *Tripur Sundari Mata*.

*Hreem Ka Ae Ee La Hreem Ha Sa Ka Ha La
Hreem Sakal Hreem*

Thereafter mentally pray to Bhagwati Laxmi for fulfilment of whatever wishes you might have and then chant the following Stotra.

Treilokyapojoite Devi! Kamale Vishnuvallabhe. Yathaa Tvaamachalau Krishnne Tathaa Bhav Mayi Sthiraa. Eeshwaree Kamalaa Laxmishchalau Bhootirharipriyaa. Padamaa Padamaalyaa Sampaduchchei Shreeh Padamdhhaarinnee. Dwaadasheetaani Naamaanti Laxmeem Sam Poojya Yah Patthet. Sthiraa Laxmeerbhavettasya Putradaraadibhii Sah.

Bow before the picture of Gurudev and distribute the sweet offered on the Yantra among your family members. Do this for five continuous days. On the sixth day throw the Yantra into a river. Place the rosary in your worship place and light incense before it daily.

Sadhana Articles : 300/-

Vital Keys to Perfect Health

1. There Go You Worries

Tensions and worries can completely imbalance one's state of mind and drive away peace from life. And when peace goes several ailments like headache, migraine, premature greying of hair, baldness and constipation start to make invasions.

Aim of this remarkable ritual is to put an end to tensions in life and seek out and destroy the root cause of such worries. If interested, try this with a concentrated mind. Take a *Siddhi Phal* in the right hand. Touch it to your Third Eye and chant this Mantra just 21 times.

Om Hreem Hreem Gururdevaay Vidmahe Om Hreem Hreem Namah.

Place the Siddhi Phal in your worship-place at home. Repeat at the same time for seven days.

Sadhana Articles : 21/-

2. Guard Against Ailments.

More often than not diseases, both dangerous and common ones, steal into one's life and one is caught unawares by their sudden attack. Many continue to play indifferent even when the first symptoms have become apparent and when the ailment assumes a dangerous form one is forced to the doorsteps of a physician. Yet there are times when even the best physician is not able to diagnose correctly leaving one to grope in the dark.

If this is the state you find yourself in or if you are always troubled on account of some ailment or the other throughout the year then this is the remedy for you.

Just use this wonderful ritual and raise a protective shield that shall ward off all diseases. In a steel plate write your name with vermilion powder. On it place *Hemaangaa*. Offer vermilion, unbroken rice grains and flowers on it. Chant the following Mantra 31 times.

Om Sham Shambhuvaay Rognashay Radraay Phat.

Do this for 5 consecutive days. On the fifth day drop the Hemaangaa in a river.

Sadhana Articles : 21/-

3. Worried By Weight Loss?

Being overweight is never healthy but weight loss too can be a cause of concern if it's sudden and severe. Do consult a physician or get a medical check up. And also try this weight gaining ritual.

In a steel plate inscribe $\#$. On it place a *Siddhak*.

Pouring water on it chant thus just eleven times.

Om Hoom Hoom Joom Joom Hoom Hoom Om Phat.

Thereafter take your clothes off and sprinkle the water offered on Siddhak onto your body. Do this regularly for 21 days. Then throw Siddhak in a river.

Sadhana Articles : 21/-

4. Is Sleep A Bane For You?

A healthy person needs just five hours of deep sleep to recharge the body, left tired and sapped of energy after a long, gruelling day. But today mental disturbances have assumed such demoniac forms that even after several hours of sleep one constantly feels dull and drowsy even at work. Deep slumber remains just a dream.

But worrying won't get you anywhere. If looking for a quick and effective cure try this. Take *Rij* in your right hand and chant thus eleven times.

Om Cham Chham Nidraam Daaray Utsaary Om Phat.

Place it in your pocket and carry it on yourself all through the day. Repeat for eleven days. On the eleventh day throw Rij in some unfrequented place. Whenever you feel sleepy just chant this Mantra eleven times.

Sadhana Articles : 21/-

5. Meditation - Key To Healthy Life

Dhyan or meditation does not mean just sitting idle with your eyes shut. It's a unique & the best process of charging up one's body. But this works best when one's mind is concentrated and free of all thoughts. Best time for meditation is early morning when the air is fresh, the ambience calm and the nature radiating its full divine glory.

A calm mind and a state of thoughtlessness can help one get rid of several diseases, even chronic ones. Chanting a few rounds of Guru Mantra or the Mantra of one's family-deity prior to entering the state of *Dhyan* can help one concentrate better & deeper. Use a *Guru Rahasya Siddhi Mala* for this purpose. This is a special Mantra-energised rosary that charges up the whole body with divine energy. Put it around your neck when you meditate.

Sadhana Articles : 300/-

6. Don't Let Frustration Get You

Yes, get it before it gets you! Failures, obstacles, falls are all a part of life. But if you take them too seriously you may be left with a life that appears gloomy and dismal.

This ritual can work wonders for a person who has been left frustrated by constant failures. Suggest it to a friend, relative or acquaintance and help him or her view life with a different, positive angle.

Start it on a Tuesday. Early in the morning get up and pray to the Guru or your family-deity. Then chant the following Mantra 11 times.

Om Ayeem Manorathaan Saadhyay Hreem Om Phat.

As suggested by the words in the Mantra if you have a special wish, e.g. to succeed in some exam or venture, you can speak it out before you undertake the ritual. Do this for 21 days and see luck changing for you.

Telepathy

- Do you wish to attain the power to talk to people sitting thousands of miles away from you, without the help of any scientific equipment?
- Do you wish you were able to read the thoughts of others?
- Do you wish you were able to know about events occurring thousands of miles away without having to switch on a T.V. or radio?

In Mahabharat era, Sanjay had accomplished *Divya Drishti Sadhana* through which he could visualise events occurring hundreds of miles away. Dhrishtrashtra, the father of Kauravas was keen to know about the goings-on in the battle and as he was blind he could only hear about the proceedings. Through the power of his Sadhana, Sanjay was able to see the battle of Mahabharat going on in Kurukshetra and narrate the events to Dhrishtrashtra, while he sat in the palace in Hastinapur (Delhi).

Door Shravan or Divya Shravan Sadhana is similar. In it no telephone or scientific equipment is needed and a person can convey his thoughts to his friend staying far from him and can also obtain messages from him.

Just imagine that you are sitting in Delhi and are talking to your wife who is in Bombay. You are not talking on phone but are receiving the sounds through the powers of the Sadhana. Isn't it amazing? You wouldn't have to resort to the help of any instrument or wait for the call to be linked and neither shall anyone be able to interrupt or overhear your conversation. Then you can contact anyone even when you are far from civilization where there are no modern facilities like phones or wireless.

Once you have accomplished the Sadhana you can hear any conversation going on anywhere in the world. But in order to converse with someone it is necessary that the other person too is perfect in this Sadhana. If this happens exchange of thoughts would be child's play.

This Sadhana is not too difficult, but to accomplish it full faith and determination are absolutely necessary. You have but to try it once and if you succeed then the whole world shall be before you to explore and nothing shall remain a secret for you. You shall then be able to hear everything going on anywhere in the world.

This Sadhana can be started from any Sunday and it lasts for eleven days. One has to remain in Sadhana for about one hour daily.

4 to 6 am is the right time for this ritual, for the atmosphere then is peaceful and there is no disturbance. It is easy to communicate telepathically during this period.

The Sadhak should get up early in the morning and take a bath with fresh water. He should wear yellow

clothes and sit on a yellow mattress facing the North. He should then light a lamp with a cotton wick immersed in clarified butter (Ghee).

In the Sadhana three articles are required – picture of the Guru, *Door Shravan Yantra* and *Door Shravan Mata*.

The Yantra and the rosary should be consecrated & enlivened through special Mantras composed by Shankaracharya. These Mantras are used to form a link of the rosary and the Yantra with the ether present everywhere.

The Sadhak must take a plate and draw a Swastik on it with red saffron. Then the Yantra should be placed over the Swastik.

After this the Sadhak should place the picture of the Guru next to the Yantra. The picture should be wiped-clean and a mark of vermillion should be made on the Guru's forehead. Flowers and prayers should be offered to the Guru.

Then the Sadhak should chant the Mantra "Om" three times. Next he should chant one round of the following Door Shravan Mantra –

Om Bram Brahmaand Vel Bram Phat.

॥ ओ ब्र ब्रह्मांड वे ब्रमः ॥

This Mantra is short but very effective and by its chanting the inner conscience of the Sadhak is awakened and thus the soul becomes free to move anywhere.

After the chanting of the Mantra is complete the Sadhak should sit peacefully for ten minutes and try to establish a contact with Gurudev. In the beginning just speak out your feelings or any message which you want to send to him.

During the time period from 4 a.m. to 6 a.m. Gurudev in an invisible form reaches all his disciples and the Sadhak's wish spoken at this time is surely conveyed to him.

Repeat this whole practice regularly for eleven days. Your inner conscience shall slowly become awakened. And the day you ask something of Gurudev and are able to receive an answer know that you have become perfect in telepathy. Then you can easily contact any person living anywhere in the world and read his or her thoughts. You can even know about remote events sitting at home.

Sadhana Articles : 240-

सम्पन्न क
2 अ-
4 अ-
5 अ-
10 अ-
13 अ-
14 अ-
17 अ-
18 अ-
21 अ-
24 अ-
25 अ-
31 अ-

त्रुटा

मनस्तुलना करने
के योग बनें
प्राप्त होंगी।

शिविलता
जीवनभाष्यी
शब्दों से म
करें। इस म

वृष्टिषय

होगा तथा
तालमेल च-
क्षों के व्यक्ति
का कार्य करें
लाभ भी प्रा-
नवास्तव के
चलयोग प्रा-
लिए आप

दृढ़ता

प्रन्मंडों को
आर्यांशु च्य-
वरते। जो
आधार पर
निलिले
अवसर प्रा-
इस समय
साधना स

ब्रह्मकी की वापी

मेष

(चू. चे. वो. ली. लू. लो. आ)

यह माह आपके लिए बहुत ही शुभ है। आपके बहुत पहले से योगे हुए कार्यों के सफल होने का समय आ गया है। परिवार में प्रसन्नता का वातावरण बना रहेगा और गृहस्थ वीक्षन पूर्णता के साथ व्यतीत होगा। मेघनात बरने पर सफलता आपके हाथ लगेगी। इस समय को व्यथा में नहीं नवापां, याम्य का नदुपयोग करेंगे तो जल्दी ही आगे बढ़ेंगे। शत्रुओं से आपको विशेष स्वयं ये वाचधान रहना रहेगा, कर्योंका वात-प्रतिष्ठाता की स्थिति बनेगी। वाद-विवाद की स्थिति आने पर संघर्ष बरतें। बेरोजगार नवमुक्तों को नौकरी प्राप्ति के योग बनेगा। धार्मिक और मांगलिक कार्यों के प्रति आप में उत्साह रहेगा। श्वेत रंग का प्रयोग करें। सम्पन्नता प्राप्ति के लिए 'शनि साधना' सम्पद करें एवं 2, 7, 11, 19, 29 तारीख का लाभ उठायें।

वृष्ट

(ई. ३. पु. वा. वी. दू. वे. वो.)

व्यास्थ कमजोर रहेगा तथा चिकित्सा-व्यय में बृद्धि होगी, खान-पान पर उचित ध्यान दें। व्यर्थ की भाग दीड़ से बचें। कारोबार में नुकसान होने की संभावना है, इसलिए किनी दूसरे व्यक्ति पर भरोसा नहीं करें। घर में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा और परिवार के लोग आपको छर प्रकार से सहायता करेंगे। विश्वार्थियों के लिए यह समय बहुत ही अच्छा रहेगा। अगर वे इस समय को अधिक से अधिक अपनी पढ़ाई में लगायें, तो उन्हें निश्चित ही सफलता मिलेगी। नौकरीपेशा वर्ग के व्यक्तियों के प्रमोशन होने की संभावना है, इसलिए परिश्रम से चीउन छठे। समाज में मान-न्यामान होगा तथा आपके छर कार्य की निरहना की जाएगी। इस समय आप 'कालार्तीत साधना' करें तो बहुत ही अच्छा होंगा।

मिथुन

(ज्ञ. की. कू. य. ल. क्र. हा.)

इस समय सभी की निःशुद्ध आप पर है, इसलिए आप उनके चुनहोरे सप्तमों को पूरा कर सकते हैं। जो-जो कार्य दृट गया है, उन्हें पूरा करें। जमीन-जायदाद के योग बनेंगे, कारोबार में मुनाफा होगा। व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें तथा जो भी कार्य करें, पूरी लग्न और मेघनात से करें। धार्मिक कार्यों के प्रति विशेष लगाव रहेगा तथा घर में मांगलिक कार्य होने की संभावना है और परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। लोग आपके कार्य की सराहना करेंगे। यदि आप किसी नये कार्य को बहुत समय ने करने की ओर गड़े हैं, तो वह समय बहुत ही अच्छा है, इस समय में आप उन कार्यों को यदि करते हैं, तो सफलता अवश्यमात्र है। किसी विशेष तीर्थ स्थान की यात्रा का योग बनेगा। आपके सहयोग से मिलें का कार्य पूर्ण होगा। आपके लिए इस माह 'अव्यवरण साधना' करना अनुकूल एवं श्रेष्ठ रहेगा।

ठठक

(है. हू. हो. डा. डी. डे.)

किसी बाहरी व्यक्ति को लेकर पर में विवाद होने की संभावना है, इसलिए किसी भी बाहरी व्यक्ति के बहकावे में न आएं। प्रत्येक प्रकार की स्थिति में संघर्ष एवं सूझबूझ से काम लें। संतान पक्ष की ओर ने किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। कारोबार सम्बन्धी यात्राएं अनुकूल एवं शुभ रहेगी। नये वाहन की प्राप्ति होनी मिलें से सहयोग प्राप्त होगा, प्रेम-प्रसंग को लेकर उत्साह रहेगा परन्तु प्रेम विवाह के गामलों को लेकर जल्दबाजी न करें। कला वगत के व्यक्तियों के लिए समय बहुत ही आनन्द युक्त रहेगा, उनके सोचे कार्य समय पर पूरे होंगे तथा मेघनात करने पर सफलता मिलेगी, समाज में मान-सम्मान होगा। इस मास की पूर्ण अनुकूलता के लिए 'तारा साधना' करें।

चिंह

(ग. गी. गू. गे. गो. टा. टी. दू. टे)

जो भी कार्य करें, विवेक से बरें। समय आपके लिए अनुकूल एवं सफलतादायक रहेगा। अदालती मामलों को लेकर उत्साह रहेगा तथा जमीन-जायदाद के विस्तार के योग बनेंगे। व्यास्थ के प्रति लापरवाही न बरतें। दाम्पत्य सुख में बृद्धि होगी तथा संतान पक्ष की ओर से चिंता रहेगी। अधिकारियों से तालमेल बनाकर चलें। शत्रु बाधा ने आप विविलित हो सकते हैं, आः उनसे आप जंगल कर रहे। रुका हुआ धन प्राप्त होने से प्रसन्नता होगी तथा धार्मिक एवं मांगलिक-प्रसंगों में व्यस्तता रहेगी। साधनात्मक दृष्टि से यह माह विशेष सफलता प्रदान करने वाला रहेगा। पूर्ण अनुकूलता प्राप्ति के लिए आप 'भूवेश्वरी साधना' सम्पन्न करें, 1, 5, 24, 28 तारीख का उपयोग इह चिन्तन में करें।

ठठन्या

(दो. घा. घी. पू. घ. य. ठ. वे. घो.)

समय आपके लिए सामान्य चल रहा है। जो भी कार्य करना चाहें, वह स्त्रय की मौलिक सूझबूझ के आधार पर ही सम्पन्न करें। किसी भी मामलों को लेकर जल्दबाजी न करें। परिवारिक मामलों में ध्यान दें। धन की किनूनरवर्ची न करें। जो भिन्न आपका साथ छोड़ देंगे हैं, वह मुना: आपसे आकर गिलेंगे तथा विशेष सहयोग करेंगे, नवीन वाहन सुख के योग बनेंगे। यात्रा अनुकूल एवं शुभ्रव जोगी। स्वास्थ्य पर ध्यान दें, चिकित्सा व्यय में बृद्धि होगी। कला वगत के विश्वार्थियों के लिए यह समय नफलतादायक होगा उनका सम्मान होगा, किसी विशेष कार्य के होने से मन प्रसन्न रहेगा तथा परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। इस मास की पूर्ण अनुकूलता के लिए आप 'गुरु आत्म स्थापन साधना' (पत्रिका के अन्तर्भर 98 अंक में प्रकाशित) सम्पन्न करें।

१० जनवरी	अधिकारी, अमृत, श्रवि पूज्य, गुरु पूज्य रिक्ष योग
११ जनवरी	इन दिवसों पर आप किसी भी साधना को सम्पन्न कर सकते हैं।
१२ जनवरी	२ जनवरी - श्रवि योग
१३ जनवरी	४ जनवरी - बन्द्र पूज्य योग
१४ जनवरी	५ जनवरी - स्वार्थ शिख योग
१५ जनवरी	१० जनवरी - श्रवि योग
१६ जनवरी	१३ जनवरी - अमृत शिख योग, स्वार्थ शिख योग
१७ जनवरी	१४ जनवरी - गुरु शिख योग
१८ जनवरी	१७ जनवरी - स्वार्थ शिख योग, श्रवि योग
१९ जनवरी	१८ जनवरी - द्विपुष्कर योग
२० जनवरी	२१ जनवरी - गुरु जन्मोत्सव दिवस
२१ जनवरी	२४ जनवरी - श्रवि योग
२२ जनवरी	२५ जनवरी - अधिकारी योग
२३ जनवरी	३१ जनवरी - रवि पूज्य योग

त्रुष्णा

(स. गी. रु. ता. ती. तू. ते)
समाज में मान-भास्मान होगा तथा लोग आपके कार्य की समराज्ञा करेंगे, नये कार्य प्रकाश होंगे, भवन निर्माण, जर्मान-जायदाद के योग बनेंगे। प्रेम-प्रसंग को लेकर उत्साह होगा तथा सफलता प्राप्त होगी। शार्मिक पूज आश्चर्यिक भावनाओं को लेकर मन में डिप्पिलता की भावना रहेगी। परिवार में शुभ कार्य होंगे तथा जीवनसाधी से विशेष सहयोग मिलेगा। नये वाद-विवाद से बचें। शहुओं से सम्बल कर रहे, अदालती मामलों को लेकर जल्दबाजी न करें। इस माह आप 'नवशुद्ध साधना' सम्पन्न करें।

त्रुष्णिचक्र

(तौ. गा. ली. गृ. ले. लो. या. गी. यु.)

आपके भवयोग से किसी भित्र का रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा तथा आर्थिक लाभ की स्थितियाँ बनेंगी। अधिकारियों से तालिमेन बनाकर चर्चें, त्रैमान-जायदाद के योग बनेंगे। बेरोजगार वर्ष के व्यक्ति नये रोजगार के बारे में विचार कर सकते हैं। कॉमेटिक का कार्य करें। कला नगरों के व्यक्ति यथा लाभ के साथ साथ आर्थिक लाभ भी प्राप्त करेंगे। अदालती मामलों को लेकर निराशा रहेगी। स्वास्थ्य के बारे में किसी प्रकार की लापरवाही न बरतें। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगी। पूर्ण भास्मोदय के लिए आप 'शार्योग साधना' सम्पन्न करें, सफलता प्राप्त होगी।

थृष्णु

(वे. वो. आ. शी. श. पा. छ. छ. अ.)

यह समय आपके लिए प्रेम-प्रनवंगों को लेकर उत्साहपूर्ण होगा तथा मांगिलिक कार्यों को लेकर व्यस्तता रहेगी। शार्मिक प्रसंगों को लेकर यात्रा के योग बनेंगे। स्वास्थ्य में शडबड़ी रहेगी। अर्थात् स्वास्थ्य के मामलों में किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। जो भी कार्य करना चाहते हैं, स्वयं की मौलिक नुडावड़ा के आधार पर हों करें। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। कारोबारी भिलखिले को लेकर यात्रा का योग बनेगा तथा नये रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। विश्वार्थियों के लिए यह माह बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस समय को व्यर्थ न गवाएं। पूर्ण अनुकूलता के लिए 'महालक्ष्मी साधना' सम्पन्न करें।

मठद

(बो. जा. जी. रु. से. लो. गा. गी)

कला-जगत के व्यक्ति के लिए यह माह बहुत ही मधुर पात्र प्रणा का ब्रातावरण लेकर आया है, उनका मान-भास्मान होगा तथा उनके निरंकित यात्रा का योग भी बन रहा है। हो ज्ञानेन के भिलखिले में बाहर यात्रा करने पड़े। परिवास में प्रसन्नता का ब्रातावरण होगा। मित्रों से भी सहयोग प्राप्त होगा। नौकरीपेश द्वारा के व्यक्तियों की प्रमोशन होने की भास्मान है, अधिकारियों ने ग्राह भास्म-वन्याय रखलाये। अपने और पर परिषद्यालय रखें। पूर्ण अनुकूलता के लिए आप 'महाकाली साधना' करें।

त्रुष्णम्

(ग्र. गै. ओ. सा. सी. रु. ले. सो. ला.)

यह माह आपके लिए उत्तम-पुरुषने नवा रहेगा, किसी भी मामले में कोई गई जल्दबाजी आपके लिए हानिकारक हो जाती है। नाज्वेदारी परं कारोबार के मामलों को लेकर पूर्ण सतर्कता ने रहे। गीवननायी में चले आ रहे वर्षभेद सम्पाद होंगे। न्यानश्य सम्बन्धित मामलों को लेकर परेशानी का भास्मान करना पड़ेगा। बाड़न का प्रयोग सावधानी पूर्वक करें। आप अपने मान की बात शोध दें वृन्दावन देतथा संयम से काम लें। इस माह आप 'स्फटिक भाला' से नियंत्रण में भी ४ माला मंत्र जप करें।

मीठा

(बी. तु. ल. झ. दे. दो. चा. ची)

विश्वार्थियों के लिए यह माह विशेष सफलतावायक भिल रहेगा। इस माह का सही उपयोग करें तथा हाथ वर्ष बेरोजगार व्यक्ति गो नये रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। नौकरी में पदवीज्ञाने की नियावना है और अधिकारियों ने मधुर भास्म-वन्याय रखेंगे। आपके कार्य की हर कोई सराज्ञा करेगा। प्रेम-प्रसंग को लेकर यात्रा के योग बनेंगे। अधिक वर्ग आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। स्कूल धन प्राप्त होगा और घर-परिवार में किसी के आने से आनन्द का बातावरण होगा। बाड़न प्रयोग के समय भावधानी रखें। इस माह आप पूर्ण अनुकूलता के लिए 'ज्ञान सरस्वती साधना' करें।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

१ जनवरी	पौष शुक्ल चतुर्वेदी	श्रावकाम्भरी नवविनि
४ जनवरी	माघ कृष्ण तृतीया	मालवंशी यित्ति विक्रम
९ जनवरी	माघ कृष्ण अष्टमी	कालहृषी
१३ जनवरी	माघ कृष्ण एकावदी	पद्मतिला एकावदी
१४ जनवरी	माघ कृष्ण द्वादशी	मकर वंशकालीन
१५ जनवरी	माघ कृष्ण ब्रह्मोदयी	बांदरी विषुपुर सुंदरी विवास
१७ जनवरी	माघ अमावस्या	मीनी अमावस्या
२१ जनवरी	माघ शुक्ल चतुर्वेदी	सदगुरु जन्मोत्सव दिवस
२२ जनवरी	माघ शुक्ल चंचली	बस्तन चंचली
२५ जनवरी	माघ शुक्ल अष्टमी	दुर्गापूज्यादी
२६ जनवरी	माघ शुक्ल नवमी	गुरु अल्लांजलि सम्पर्णा विवास
२७ जनवरी	माघ शुक्ल द्वादशी	जया एकावदी
२८ जनवरी	माघ शुक्ल द्वादशी	भीष्म द्वादशी
२९ जनवरी	माघ शुक्ल ब्रह्मोदयी	विश्वकर्मा नवविनि
३१ जनवरी	माघ पूर्णिमा	श्री ललिता नवविनि

रादि आप अपने जीवन में ठोस परिवर्तन करना चाहते हैं तो!

ये साकर सम्भानन्द

आपके ही लिए सूचिता की गई है

इसी सन के अनुसार एक नववर्ष तो सम्मुख है ही साथ ही कुछ दिनों पश्चात् अवसर उपस्थित होगा विक्रमी संवत् के अनुसार भी नववर्ष के प्रारम्भ होने का। नववर्ष का आर्थ है नव उत्साह, नव उल्लास और नव संकल्प।... संकल्प आपने जीवन से कुछ रख, दैन्य, विषाद और हताशा को भीलों द्वारा पीछे छोड़ देना का, जो सहज सम्भव है इन साबर प्रयोगों के माध्यम से क्योंकि साबर पद्धति स्वयं में विधान भर ही नहीं व्यवस्था भी तो है...

जी

वन में व्यवहृत होने पर एक शब्द जो केवल शब्द ही नहीं रह जाता वरन् जीवन की एक अत्यावश्यक स्थिति बन जाता है, वह होता है - 'सहजता'। प्रत्येक व्यक्ति वास्नव में अपने जीवन में एक सहजता की स्थिति को ही खोज रहा होता है। यह हो सकता है, कि भिज-भिज सामाजिक स्थितियों या मानसिक स्तर के साथ-साथ सहजता की स्थितियों को परिभ्रान्ति करने में भेद हो, किन्तु मूल स्थिति तो सहजता को प्राप्त करने की ही होती है। यहां तक कि मनुष्य प्रायः जो अपराध कर बैठता है, उसके मूल में जाकर यदि सूझता से विवेचन किया जाए, तो वहां भी प्रायः किसी सहजता को प्राप्त करने की ही चेष्टा होती है। जीवन में सहजता को प्राप्त करना मनुष्य का मूल स्वभाव है, क्योंकि सहजता के माध्यम से ही सरसता की स्थिति उत्पन्न होती है। सम्मान, सुरक्षा, निश्चितता,

किसी आशंका से सर्वथा मुक्त होना जैसी कुछ स्थितियां वास्तव में भहजता की स्थिति के ही कुछ उपमेद हैं। व्यक्ति जो अधक परिश्रम करके धनोपार्जन करता है, उसके मूल में केवल मरण-भोवण करना ही नहीं होता है, वरन् व्यक्ति अपने भावी जीवन को सुरक्षित करने का भी तो प्रयास कर रहा होता है। इसके लिए जो कुछ उसको प्रारब्ध-वश मिला होता है, वह उसमें परिवर्तन करने का भी प्रयास करता रहता है। प्रयासरत रहना तो सूचक होता है, कि जीव यही अर्थों में मनुष्य है। स्वन्न देखना इस बात का प्रमाण होता है, कि वह हताशा के उस गति में नहीं गिरा है, जिसमें गिरने के बाद सभी सम्भावनाएं समाप्त हो जाती हैं... किन्तु व्यक्ति के अधिकांश स्वन्न उपके लिए दिवास्वन्न बनकर ही रह जाते हैं और वह आशा-निराशा के एक विचित्र से नाल में उलझता-सुलझता, हृष्ट और विषाद में फूटता-उत्तरता अपनी



नुरु एक शब्द नहीं... कुछ अक्षर नहीं... एक सम्पूर्णता है, जीवन की भित्ति है, देह को ऊपर उठाने की क्रिया है, जहर को अमृत बना देने का जोपनीय यहस्य है...

- पूर्वयाद सद्गुरुदेव डॉ० जारायण दत्त श्रीमाली जी

ज व
को
आ
रची
को
गति पर है
रूप से ही,
आश्रय लें
महत्व नी
साधनाएं न
स्पर्श करते
नहीं होता
नहीं होता
ही साधन
बहां लक्ष
भक्ति या
गिरावची
को ध्यान
जटिलता
लिए सहन
रखते हुए
का स्पर्श
पर जीवन
की कोई
किस प्रक
साधना



ज न कोई लम्बा चौड़ा विधि-विदाज, ज
कोई दुर्घट मंत्रोच्चारण, ज द्यर्थ का
आडम्बर... वर्योंकि साबर साधनाएं
उच्छी ही नहीं हैं गुहरथ साधकों के जीवन
को उद्याज में रखकर, पूर्ण प्रामाणिकता

के साथ...

गति पर ही कुठाराधात कर लेता है।

जीवन में मनोबाहित रूप में परिवर्तन हो और निश्चयत रूप से ही, इस धारणा को लेकर नव भी साधनात्मक बल का आश्रय लेने की बात सामने आती है, तो साबर साधनाओं का महत्व निर्विवाद रूप से सर्वोपरि ही जाता है, क्योंकि साबर साधनाएं बिना किसी लोग लपेट के जीवन के छोटे से छोटे पक्ष को स्पर्श करते हुए आगे बढ़ती हैं।

जिस प्रकार साबर मंत्रों की रचना में कोई आडम्बर नहीं होता, उसी प्रकार उनकी विषय वस्तु में भी कोई आडम्बर नहीं होता है। यदि पीरुष प्रामि की साधना है, तो पीरुष प्रामि की ही साधना है; यदि लक्ष्मी को खोंच कर लाने की साधना है, तो वहाँ लक्ष्मी को खोंच लेने की ही साधना है। फिर वहाँ किसी भक्ति या किसी आध्यात्मिकता का कोई मूलम्मा नहीं है, निःगिराने या हाथ जोड़ने की कोई बाध्यता नहीं है।

साबर साधनाएं मूल रूप से गुहस्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर रखी गई साधनाएं हैं। इसी कारणवश किसी जटिलता या कर्मकांड से सर्वथा मुक्त होती हुई किसी भी साधक के लिए सहज गाहा है।

आगे की पंक्तियों में जीवन की सहनता को ध्यान में रखते हुए ऐसी साधनाएं प्रस्तुत की जा रही हैं, जो सीधे उन पक्षों का स्पर्श करती हैं, जिन पक्षों में कोई अभाव या न्यूनता रह जाने पर जीवन शुष्क और नीरस होने लग जाता है। यद्यपि इस बात की कोई सीमा रेखा नहीं बांधी जा सकती, कि किसका जीवन किस प्रकार से सहन होगा।

यूं तो कोई भी साधक या साधिका किसी भी साबर साधना को पूरे वर्ष भर में कभी भी किसी भी शुक्रवार की रात्रि

में बिना किसी मुहूर्त या विधि का विचार किए सम्पन्न कर सकता है, किन्तु शिवरात्रि से लेकर चैत्र नवरात्रि के मध्य का काल इन साधनाओं को सम्पन्न करने का विशिष्ट अवसर होता है, क्योंकि यह 'तंत्र माह' होता है, जो एक छोर पर भगवान शिव से तथा दूसरे छोर पर शक्ति से सम्पन्नित होने के कारण अद्भुत रूप से चैतन्य हो जाता है।

भगवान शिव व आद्य शक्ति मां जगदम्बा के ही सम्मिलित रूप गुरुदेव से प्राप्त कुछ विशिष्ट साधनाएं इस प्रकार से हैं—

१. जीवन में पूर्णरूप से साबल व वेगवान हुने के लिए

जीवन में सभी सुख उपलब्ध हों, किन्तु प्राण शक्ति ही निर्बल हो अथवा शरीर दुर्बल हो तो, किसी भी सुख का उपभोग नहीं किया जा सकता। अतः जीवन में इन सम्पत्ति से भी प्रद्यम जो आवश्यकता होती है, वह यहाँ होती है, कि यदि पुस्त है, तो वह पीरुष से भरा हो और स्त्री है, तो स्त्रीत्व की आभा से परिपूर्ण हो। साबर साधनाओं के लेव में इसरों सम्बन्धित एक लघु प्रयोग मिलता है, जिसे साधक उपरोक्त वर्णित तंत्र माह के किसी भी दिवस की अथवा किसी भी शुक्रवार की रात्रि में दस बजे के पश्चात सम्पन्न कर सकता है। साधक पीले रंग की धोती पहन, पीले ही रंग के आसन पर, वक्षिणा दिशा की ओर मुड़ करके बैठें, गुरु पीताम्बर ओढ़े ले तथा तेल का एक बड़ा सा बीपक जला लें। अपने सामने किसी पात्र में एक तांबोक नाश्यल स्थापित कर उस पर रिंदूर से टीका लगाएं व कुछ अशत छिड़कर आधे घंटे तक निम्न मंत्र का नप करें—

मंत्र

// काल रूप भैरव सत रूपा, कंकड़ सकर देवा, जहाँ जाऊँ
कामारूपा बौरा बावल वीर बौरासी पूरा, गुरु ज्योरस्व वह
कहत सुन बूझा, नाम रूप के काम सो बूझा //
Kaal Roop Bhairav Sat Roopa, Kunkud Sakar Devaa,
Jahau Jaanou Kaamakhyaa Chouraa Basavaan Veer
Chaurasi Pooraa, Guru Gorakh Yah Kahai Sun Boojhaa,
Naam Roop Ke Kaam Sou Soojhaa

साधना सामग्री पैकेट - 80/-

**अनर शरीर में से प्राण ही चला जाय, तो फिर पीछे रहे ना ही क्या?
और अनर हमारे श्वास में से नुरु शब्द ही मिट गया, तो फिर हमारे जीवन
में रहा ही क्या?**

— पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाती जी

२. जीवन में निरंतर धनागम की स्थिति निर्मित होने हेतु

जीवन में धन नि: संदेह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, किन्तु धन के साथ सहजना व सरसता की स्थिति तभी निर्मित होती है, जब एक ओर जहाँ खुले हाथों से व्यय करने की स्थिति हो, तो वहीं निरंतर किली न किली चोत से जितना खर्च किया है उसका दुगना धनागम भी होता रहे।

साबर साधनाओं में वर्णित एक प्रयोग ऐसा ही सुनिश्चित करने को कहता है, जिसे साधक 'तंत्र माह' के किसी भी दिवस की अवधि किसी भी शुक्रवार की रात्रि में सम्पन्न कर सकता है। यीले रुग्ण के बस्त्र पहन कर, पाले आसन पर बैठ कर किए जाने वाले इस प्रयोग के लिए साधक के पास आठ गोमती चक्र आवश्यक सामग्री के रूप में होने चाहिए। साधक उत्तर दिशा की मुख करके बैठें तथा किसी ताघ पात्र में कुंकुम व तीली की शाहायता से निम्न अंकन कर सभी गोमती चक्र उस आकृति के मध्य में रख दें—



सभी गोमती चक्रों का पूजन कुंकुम व अक्षत से कर, गुद्ध धो का एक बड़ा सा दीपक जलाकर आधे धंटे तक निम्न मंत्र का जप करें—

मंत्र

// छिन्नमस्तक ले महल बनाया, काली कारन करम
छंदाया, तास उगाया बैठ के बोती, बहां रही दुर्जा की
टोली, लिकटीजाथ कहत सुन गोरी, हम जोरस्व की
भरत्वा दोली //

Chhinnmastak Ne Mahal Banayaa, Kaali Kaaran Karum
Chhavaayaa, Taas Aayaa Beith Ke Boli, Yahan Rahee
Durga Kee Toli, Tikattinaath Kahat Sun Gori, Ham
Gorakh Kee Bhakhan Boole.

यह एक दिवसीय प्रयोग है, जो स्वयं में दारिद्रता नाशक प्रयोग भी है। प्रयोग के अगले दिन सभी गोमती चक्रों को किसी

नदी, सरोवर या कुए में विसर्जित कर दें।

साथना सामग्री पैकेट - 160/-

३. शारीरी या अशारीरी शान्त नाश हेतु

किसी भी व्यक्ति के जीवन में शत्रु की उपस्थिति एक ऐसा आमिशाप होती है, जिसके कारण जीवन की सभी सहजताएं अपना अर्थ लो देती हैं। इस युग की प्रवृत्तियां इस प्रकार से दृष्टिं हो चली हैं, कि मग्ने हाँ व्यक्ति अपने आप में शान द्वा, सौम्य हो किन्तु उससे अनायास बैर तानने वालों की कोई कमी नहीं होती।

जीवन में शत्रु की उपस्थिति न रहे चाहे वह शरीरी हो या अशरीरी अर्थात् यदि कोई भी अनायास पीड़ा या क्लेश देना है, तो वह अपने स्थान पर शांतचिन हो जाए। इसके लिए साबर मंत्रों के क्षेत्र में एक विलक्षण प्रयोग प्राप्त होता है जिसको सम्पन्न करते-करते ही शत्रु अपनी शत्रुता को भूल स्वयं ही क्षमायाचना के भाव से सम्मुख उपस्थित होता ही है।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के इच्छुक साधक या साधिक को चाहिए कि वह एक सिरकारा प्राप्त कर प्रयोग के दिवस में अपने सामने रखे तथा काली धोती पहन दक्षिण दिशा की ओर मुख कर तेल का एक बड़ा सा मिठी या आटे का दीपक जला कर निम्न मंत्र का एक धंटे तक सतत जप करे। यह रात्रिकालीन साधना है तथा इसमें किसी अन्य विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है। यह मात्र एक दिवसीय साधना है।

मंत्र

// अस्पर्ध का जोता जोत्र का तेला, गुरु जोरस्व ने वांद
है खेता, अस्तर बछतर तीर कमंदर, तीन मध्यंदर तीन
कमंदर, पांच गुरु कर पांचे चेता, एक जोरस्व कर यह
सब खेता, सब दांचा पिण्ड दांचा कुरो मंत्र इसकरो
तेरो वर्चा //

Asgandh ka Jotra, Jog Kaa Telaa, Guru Gorakh Ne Daav
Hei Khelas, Achhtar Bachtar Teer Kamandar, Teen
Machbandar Teen Kamandar, Paanch Guru Ka Paanchai
Chelas, Ek Gorakh Kaa Yah Sab Khelas, Sabad Saanchai
Find Saanchai Phuro Mantra Eesvare Tero Vaachaa

मंत्र जप के पश्चात तेल के दीपक को फूंक मारकर लुड़ा
दें तथा उसी समय या अगले दिन प्रातः ही सिरकारा को घर से दूर



गुरु तो एक ईश्वर का शाक्षात् प्रतिबिम्ब है, जिसे हृदय से
अनुग्रह विद्या जा सकता है, गुरु तो पूर्ण रूप से उन्मुक्त होने की
किया है।

— पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ० नारायण वटा श्रीमाली जी

दक्षिण दिशा
दिन उस बुजे
किसना भी उ
होता हुआ नि

४. प्रेम दे
प्रे
जीवन में का
सकता है औ
शीतल बायु
जाती है, जब
की स्थिति उ
कोई बोज प
मिल कर स

जे
उसका समर
जो प्रेम में ह
जे
प्राप्त होता है
माला' होनी
करने से सप

उ
बस्त्र पहन
कोई भी इच्छ
मलकर उस
का एक धंटे
कोई आवश्य
मंत्र

// सर्वी
दीवाली

Sakhee Se
Deevaan Ki

दिक्षण दिशा में कैके दें तथा हाथ पांच थोकर विश्राम करें। अगले दिन उस बुज्जे हुए दीपक को कहाँ एकांत में गाड़ दें। इस प्रकार चितना भी उग्र शत्रु की ओर न हो, वह शनि: शनैः स्वतः हो निस्तेज होता हुआ विनाश को प्राप्त हो जाता है।

साधना सामर्थी पैकेट - 40/-

४. प्रेम के क्षेत्र में सफलता हेतु

प्रेम रवयं में हृदयपक्ष का एक प्रस्फुटन होता है। जिसमें जीवन में कभी प्रेम ही न किया हो, उसका न तो अन्तर्भूत खुल सकता है और न उसमें कभी उल्लास व उमंग की ताजी स्वच्छ शीतल बायु का प्रवेश हो सकता है, किन्तु यह स्थिति तब दुखद हो जाती है, जब प्रेमी व प्रेमिका के मध्य किसी कारण से कोई विलगाव की स्थिति आ जाए अथवा सदैह के कारण किसी गलत कठीन का कोई बीज पड़ जाए या किसी अन्य कारण से प्रेम में सफलता न मिल कर सम्बन्ध टूटने की स्थिति आ गई हो।

जीवन में दुर्मन्दिवश ऐसी कोई स्थिति आ जाए, तो उसका समय रहते निशाकरण अवश्य ही कर लेना चाहिए; क्योंकि जो प्रेम में हार जाता है वह सारा जीवन हार जाता है।

जीवन के इस पक्ष को स्वर्ण करता जो साबर प्रयोग प्राप्त होता है उसमें साधक या साधिका के पास एक 'कलमाव माला' हीनी आवश्यक कही गई है, जिसे गले में ढालकर भंव नप करने से सफलता की संभावनाएं एकदम से कई गुना बढ़ जाती हैं।

उपरोक्त तंत्र माह के किसी भी दिवस की रात्रि में गुलाबी वस्त्र पहन कर, हरे रंग के आसन पर बैठे और दोनों हथेलियों में कोई भी इव (अधिक उचित रहेगा कि हीना का इव प्रयोग करें) मलकर उसमें माला को रगड़े और उसे गले में पहन कर निम्न मंत्र का एक घंटे तक नप करें। अन्य किसी विद्यान की इस प्रयोग में कोई आवश्यकता नहीं है।

मंत्र

// सरस्वी सरवन् सरस्वी सरलमज, सरस्वी हुस्ल मेहमान
दीवान की चिलमन, पांच परद में वार की सूख वार
सर्मदर शह की सीरत //

Sakhee Sanvan Sakhee Salman, Sakhee Husn Mehmaan,
Deevaan Kee Chilman, Paanch Parad Me Yaar Kee Soorat,
Yaar Samandar Shahn Kee Seerat

मात्र एक दिवसीय इस अत्यधिक तीव्र प्रयोग के अगले दिन माला को किसी नये हरे रंग के एक रेशमी वस्त्र में लपेट कर कुछ मिठाई व फूल के साथ चुपचाप किसी मजार पर पूरे सम्मान के साथ भेट चढ़ा दें, तो शीघ्र ही मनोनुकूल स्थितियां निर्मित होने लग जाती हैं।

साधना सामर्थी पैकेट - 120/-

५. सर्वविधि उपद्रव शांति हेतु

जीवन में जहाँ कोई व्यक्ति शत्रु हो वहाँ यह फिर भी सहज होना है, कि उससे मुक्ति प्राप्त कर ली जाए, किन्तु जहाँ स्वयं अपने ही परिवार के किसी पूर्वज की दूरात्मा के कारण विविध परिस्थितियां शत्रु बनकर खड़ी हो जाती हैं, वहाँ व्यक्ति को समझ में ही नहीं आता कि उनसे किस प्रकार ऐसे छुटकारा पा जाए? सहयोगियों के मध्य अनावास ही वैरभाव उत्पन्न हो जाना, अकारण ही बार-बार अपमानजनक परिस्थितियों का सामना करते रहना, बार-बार चित्त का विभ्रमित हो जाना, चैदेव यह मय लगना कि कोई उसके विरुद्ध वडयंत्र रच रहा है, घर में कलह की स्थिति बने रहना, जैसी अनेक परिस्थितियां होती हैं जहाँ व्यक्ति की बुद्धि ही स्तम्भित हो जाती है, कि इन बातों का विरोध करें भी तो कैसे करें?

और ऐसी स्थितियों में बुद्धि चातुर्य का कोई विशेष प्रयोग जन रह भी नहीं जाता है। ऐसी ही स्थितियों में जिस बल का सहारा लेना चाहिए, वह होता है — साधनात्मक बल और साबर साधनाओं के क्षेत्र में इन स्थितियों के सम्बन्ध में भी एक लघु प्रयोग प्राप्त होता है, जो जीवन की अनेक अड़वनों को इस प्रकार से समाप्त कर देता है, गार्नी उनका कभी अस्तित्व ही न रहा हो।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के इच्छुक साधक को बातिए कि वह मंगलवार को प्रातः ५-६ बजे के मध्य अपने समाज किसी लाल रंग के वस्त्र पर तास्मात्रामें एक बजरंग गुटिका को तुलसी दल के साथ चावलों की ढोरी पर स्थापित करे तथा स्वयं भी लाल रंग की धोती पहन कर, लाल रंग के आसन पर बैठ, तेल का एक बड़ा सा गीषक जलाकर गुड़ का भोग बजरंग गुटिका पर अर्पित करें, फिर निम्न मंत्र का एक घंटे तक नप करें —

गुरुतो सदैव ही ज्ञान रूपी सूर्य की तेजस्विता, सुख, शांतितथा
शोभाभ्य प्रदान करने के लिए तत्पर रहते हैं।

— पूज्यपाद सद्गुरुवेच डॉ० नारायण दट्टा श्रीमाली जी

मंत्र

// असरन असरन बाबा हनुमान, वीर हनुमान वीर हनुमान, उरन करो यह करज मोरो, अरन हरो सब पीरा मोरो, अरन हरो तुम इन्द्र का कोठा, अरन धरो तुम बज का सोठा, दुहाई गोरखनाथ की, दुहाई गोरखनाथ की //

Aasraan Aasraan Hanuman, Veer Hanuman Veer Hanuman, Aan Karo Yah Karraj Mora, Aan Hara Sab Peetaa Mora, Aan Hara Tum Indra Kar Kotthaa, Aan Dhara Tum Bujra Kua Settaa, Duhanee Gorakhnaath Kee, Duhanee Gorakhnaath Kee

अगले दिन बजरंग गुटिक व तुलसी दल को कुछ धन के साथ या तो किसी को चिक्का में दें या कही निजन स्थान पर रख दें। गुड़ का भोग सभी परिवार के सदस्यों के मध्य बांट दें व स्वयं भी श्रवण करे तथा चावलों को पक्कियों को चुनने के लिए किसी स्वच्छ स्थान पर बिखर दें। इस प्रकार से जीवन में सुख, शांति व निर्विघ्न का एक अच्छाय प्राप्त होता है।

साधना सामग्री पैकेट - 60/-

६. समाज में लोकप्रियता व सम्मान प्राप्ति हेतु

लोकप्रियता व सम्मान प्राप्ति की स्थिति एक ऐसी दशा होती है, जो न केवल व्यक्ति के रवानिगमन को संतुष्ट कर उसकी कियाशीलता में वृद्धि करती है, बरन् इसी माध्यम से व्यक्ति और जीवन के अनेक दंडों से मुक्ति प्राप्त करता तभी अपने जीवन को सहज, निष्कटक और तनाव रहित बनाते हुए अनेक महत्वपूर्ण लक्षणों की ओर अपनार हो सकता है। इसके लिए जो आवश्यक होता है वह यही होता है कि व्यक्ति में किसी दैवीय आभा व चेतना का भी समावेश हो और साधनाएं सही अर्थों में दैवीय चेतना का ही रूप होती है।

सावर साधनाओं के क्षेत्र में इस विषय से भी सम्बन्धित एक लघु भाधना प्राप्त होती है जो वस्तुतः तेजस्विता की ही साधना है और व्यक्तित्व में तेजस्विता ही उस सम्मोहन का आधार होती है जो सम्मोहन, सम्मान प्रदान करने एवं लोकप्रिय बनाने में सहायक होती है।

इस प्रयोग को भी साधक तंत्र माह के किसी भी दिवस की अवधा किसी भी शुक्रवार की शत्रि में सम्पन्न कर सकता है

जिसके लिए उसके पास पारद मुद्रिका आवश्यक उपकरण के रूप में होनी अनिवार्य होती है। साधक या साधिका पीले बस्त्र पहन कर, उत्तर विशा की ओर मुंह करके, पीले या सफेद आसन पर बैठे तथा सामने किसी स्वच्छ पान में पारद मुद्रिका को रख उस पर दृष्टि को केन्द्रित करते हुए आधे घंटे तक निम्न मंत्र का जप करे। इसमें जो आवश्यक तथ्य है वह मात्र इतना ही है कि सम्पूर्ण मंत्र जप के काल में मुद्रिका पर ध्यान केन्द्रित रहे -

मंत्र

// मोह कम मोह कम कहाँ से आया, पान फूल चुरैसा लाया, किसको रोतो किसको बंदन किसको फूल बतासा अंजन, काल को मैरूं जोजलि घोड़, काल को मोहूं मुख को जोड़ूं, सत्य बचन यह युल कह दोलूं //

Moh Kam Moh Kam Kahaa Se Aayaa, Pana Phool Sandesaa Laayaa, Kisko Roolee Kisko Chandan Kisko Phool Batanaa Anjan, Kaal Ko Sheirnoog Jogaai Chaddoona, Kaal Ko Moddoon Mukh Ko Joddooon, Satya Vachan Yeh Geraa Kah Boloon

यह भी मात्र एक दिवसीय प्रयोग है। प्रयोग के पश्चात मुद्रिका को दाएं या बाएं हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर लें और एक माह पश्चात उसे किसी शिव मंदिर में भेट चढ़ा दें। यूं पारद निर्भित साधना सामग्रियों में विसर्जित करने की आवश्यता नहीं होती है, अतः चाहें तो आगे भी धारण किए रह सकते हैं। यदि उपरोक्त प्रयोग किसी रुपी या पुरुष विशेष को अपने अनुकूल बनाने की भावना से कर रहे हों, तो किसी कानून पर काजल से उस स्त्री या पुरुष का नाम लिखकर उसके ऊपर पारद मुद्रिका को स्थापित कर मंत्र जप सम्पन्न करें।

साधना सामग्री पैकेट - 80/-

यूं तो जीवन की सैकड़ों-सैकड़ों स्थितियां होती हैं और प्रत्येक व्यक्ति अपने ही ढंग से अपने जीवन को सम्पूर्ण करने की भावना रखता है, किन्तु यहां मुख्य रूप से उन्हीं छ. स्थितियों का वर्णन एवं साधना प्रस्तुत की गयी है, जो किसी के भी जीवन में नितांत अनिवार्य स्थिति होती है।

बोलिका बहन की रात्रि, दीपावली की रात्रि अथवा कोई भी शहर का अवसर ऐसा सिल्ल मुहूर्त होता है, जब किसी भी सावर मंत्र के मात्र १००८ उच्चारण कर उस मंत्र में सिद्धि की अवस्था प्राप्त की जा सकती है।

और मानी होती व

दपस्ता
वेती-के
लहरी आ

गुणों से
कृष्ण व
उजकी
पाए हैं,
तो सबूत
पर केस
कहीं जा
उतरे हैं
गुरु ग्रि

गुरु तो इतने आधिक करुणावत्सल होते हैं, कि जो उन्हें विष देता है, उसे भी अमृत का पान करा देते हैं।

- पूज्यपाद सदगुरुदेव डॉ. जागरण दा श्रीमाली जी

सद्गुरुदेव : नीतिकार स्वरूप

गुरोराजां प्रकृतीत शिष्यधर्मं समावरन् ।
सर्वं धर्मं परित्यज्य गुरुं सेवां परन्तपः ॥१०॥



जर्णि - शिष्य को अवशिष्ट धर्म का पालन करते हुए केवल गुरु आज्ञा में ही चलना चाहिए, गुरु जो भी आज्ञा देनेवाले का पालन करना चाहिए। अन्य देवी-देवताओं की ज्ञाधना या उपासना को छोड़ गुरु ज्ञाधना करना ही शिष्य के लिए श्रेयहक्क है तथा गुरुसेवा ही उच्चतम तपाइचय है।

जब अद्याटम को मात्र भजन, कीर्तन और आरटी गान तक ही सीमित मान लिया गया था, तब ऐसे समय पर पूज्यपाद सद्गुरुदेव ने बासी पङ्क गई परम्पराओं पर आधार कर लुप्त हुई प्राचीन विद्याओं को पुनर्स्थापित किया, देव कालीन गुरु-शिष्य की शिक्षाली परम्परा को नवजीवन दिया, नवीन मंत्रों का सृजन किया और मानवता को, सर्व सामाज्य को एक आसान, सरल साधना का मार्ग दिया, धर्मसंस्थापन की नीति वी, नवीन पद्धति वी, जिससे कि जीवन की समस्याओं से निष्टिते हुए वे पूर्णता प्राप्त कर सकें।

उन्होंने गुरु के महत्व को ही सर्वोपरि बताते हुए कहा, कि समस्त देवी-देवताओं की आराधना और तपस्या तो प्रारम्भिक स्तर की ही बातें हैं, वर्तोंकि समस्त ज्ञान तो गुरु के माध्यम से ही सम्भव हैं। समस्त देवी-देवता चाहे वे कृष्ण हों या राम, चाहे कठी हों या लिङ्गस्ता, सद्गुरु की कृपा के बिना साधक के पास नहीं आ सकती। यह विनान जन्मानस में लुप्त हो दुकान आ, परन्तु यही विनान ही तो जीवन का प्रमुख आधार है। गुरुदेव तो नीतिकार थे ही, उन्होंने शिष्यों की उन्होंने के लिए नीतियां निर्मित की हैं, परन्तु जो प्रमुख नीति, जो प्रमुख ऋष्योचित मार्ग उन्होंने विद्यारित किया, वह यही है - अन्य किसी देवी या देवता की आराधना करना व्यर्थ है, यदि गुरु ही प्राप्त नहीं हुए हैं।

और यदि गुरु प्राप्त हो गए हैं, सद्गुरु कृपा प्राप्त हो गई है, तो जीवन पूर्ण हो गया किरण्डा, विष्णु और महेश सबकी कृपा प्राप्त हो जाती है, क्योंकि गुरु तो उन दीमों से भी ऊपर होकर साक्षात् परब्रह्म ही होते हैं। सट्टा ही है यह शास्त्रोत्तर -

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णुः गुरुर्वेदो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

भूत-भविष्य माला

अधिष्य के गर्भ में झाँक लेने की मनुष्य की प्रारम्भ से ही उत्सुकता रही है, और इसी क्रम में उभरकर आई ज्योतिष, हस्तरेखा विज्ञान, ब्रह्मविज्ञान आदि अज्ञेय विद्याएं, ज्योतिष की लगड़ी गणनाओं की अपेक्षा यह माला ज्यादा श्रेष्ठ है, जिसके प्रभाव से आपको भूत व भविष्य घटनाओं के आभास होने की स्थिति बनने लगती है।

यदि सामने वाले व्यष्टि का भूतकाल आपके सामने स्पष्ट हो जाता है, तो आप लिंगाय कर सकते हैं, कि वह व्यष्टि विश्वास योग्य होगा या नहीं, उसके साथ कार्य करना उचित होगा या नहीं। इसी प्रकार यदि आपको उपना अधिष्य जात हो जाए, या भविष्य में घटने वाली किसी दुर्घटना का पूर्वाभास हो जाए, तो उस दुर्घटना को टालने का प्रयोजन किया जा सकता है। सीमित संख्या में सिद्ध की गई यह माला साधकों के लिए एक दर्शान है।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान – “ज्ञान दान”

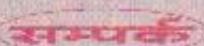
ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया जाता है। आप मी २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, ब्राह्मणों को, निर्धन परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अपने तक इसमें विचित है। इस किया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

इस माला को किसी नामपात्र में चालन का आवश्यन बहुत स्वापित कर दें। नित्य इस माला से ‘अं शु ह शु ऋ’ का प्रातः कान नप करें। नप के बाद माला को चालन पर मुना स्थापित कर दें। पेणा नित्य करें। तो माह बाद माला को किसी योद्धर में चढ़ा दें।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड) भेज दें, कि ‘मैं २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप निः शुल्क ‘भूत-भविष्य माला’ ३३०/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का युल्क ३००/- + दाक व्यय ३०/-) की बी. पी. पी. से भिजवा दें, बी. पी. पी. आपे पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लंगा। बी. पी. पी. छुटने के बावजूद २० पत्रिकाएं इनिस्टर्ट दाक बारा में दें।’

आपका पत्र आपे पर तथा ३००/- + दाक व्यय ३०/- = ३३०/- की बी. पी. पी. से ‘भूत-भविष्य माला’ भिजवा देंगे, जिसमें कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।



अपना पत्र जोयपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमली गार्ग, बाईकोर्ट कॉन्वोनो, जोधपुर – 342001, (राज.)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India.

Phone : 0291-432209 TeleFax-0291-432010

उपटोक्त

- | | |
|----|---------|
| 1. | आ |
| | 30/- |
| | 180/- |
| | ही र |
| | सिद्ध |
| | पत्रिका |
| 2. | य |
| | साप्त |
| 3. | अ |
| | जमा |

सम्पर्क : f

इस मास दिल्ली में विशेष : प्रत्येक साधना निःशुल्क

केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों के लिए निःशुल्क योजना

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्राप्ति हूँड़ है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धांशु' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 5 बजे 7 बजे के बीच सम्पन्न होती हैं और यदि श्रद्धा य विश्वास हो, तो उसी दिन से साधना सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

साधना में भाग लेने वाले साधक को यत्र, पूजन सामग्री आदि संस्था द्वारा निःशुल्क उपत्यक होगी (धोती, दुपहा और पंचपात्र अपने साथ में लावें या न हों, तो यहाँ से प्राप्त कर लें)।

दिनांक 25.1.99

ज्येष्ठा तक्षणी साधना

आपूर्ण व्यक्ति का लक्ष्यी वरण नहीं कर सकती, और इसी आपूर्णता को दूर कर साधक में एक ऐसा बल स्थापित कर देने की यह साधना है, जिसके प्रभाव से नक्षमी को साधक का वरण करने के लिए बाह्य होना पड़ता है।

दिनांक 26.1.99

गुरु आत्म स्थापन साधना

शिष्य जब समर्पण भाव में आ जाता है और वह गुरु के साथ एकाकार होने के लिए मन-मस्तिष्क और इदय से मृदु हो जाता है, तो गुरु-शिष्य के साथ आत्मलीन होकर उसे अपना सम्पूर्ण प्यार उड़ेल देते हैं। इस साधना द्वारा साधक की आनंद में 'गुरु सत्त्व' का स्थापन हो जाता है, जो कि जीवन में हर सफलता का आधार है।

दिनांक 27.1.99

कामदेव खिंडि पुष्पाचर्ता प्रयोग

समस्त कामनाओं व इच्छाओं की पूर्ति करने वाले कामदेव की इस साधना को करने से साधक का व्यक्तिगत सम्मोहन व पौरुष से खिल जाता है, तथा वह हर क्षेत्र में विजय व कीर्ति प्राप्त करता है।

उपरोक्त दिवसों पर भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे -

1. आप अपने किसी एक मित्र या स्वजन से पत्रिका की वार्षिक सदस्यता हेतु 195/- वार्षिक शुल्क तथा 30/- डाक द्वय और 12 दुर्लभ अंकों के सेट का शुल्क 180/- इस प्रकार कुल शुल्क (225/- + 180/- = 405/-) जमा कर साधना में भाग ले सकते हैं। आपको निःशुल्क साधना सामग्री के साथ ही उपहार स्वरूप निःशुल्क 'अपराजिता गुटिका' प्रदान की जायेगी, जो कि आपके जीवन में सहायक सिद्ध होगी एवं उस सदस्य को पूरे वर्ष भर आपकी तरफ से उपहार स्वरूप मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान पत्रिका प्रतिमाह मेजाते रहेंगे।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो अपने लिए 1 वर्ष की सदस्यता और 12 दुर्लभ अंक प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं, किन्तु आपको उपहार स्वरूप 'अपराजिता गुटिका' प्राप्त नहीं हो पायेगी।
3. आप यदि किन्हीं कारणों से पत्रिका सदस्य बनाने में असमर्थ हैं, तो कार्यालय में 375/- रुपये जमा करके भी साधना में भाग ले सकते हैं।

सम्पर्क : सिद्धांशु, 308, कोहाट एन्ड लेन्व, पीतमपुर, नई दिल्ली - 34, फोन : 011-7182248, टेली फैक्स : 011-7196700

ऋग्वेद 'जनवरी' 99 मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान '79'

अर्थों में गुरु का अवसर प्रतिकृति भा करने लग न छोमानी जी

सं पूज्यपाद गुरु अपने अन्त वास्तविक नि गुरुवेष श्रीम जब किसी प्रकार से पु निर्माण हो ज

पूज्यपाद गु निरंतर उपस्थिति परिवार की उपस्थिति सम्पूर्ण भाव साधक सा

शिष्य धर्म

जलमना जायते शुद्धः संस्काराद् द्विज उच्चाते ।

किसी भी व्यक्ति के लिए मनुष्य जन्म लेना महान धृतना नहीं है। जिस क्षण वह आपने सद्गुरुदेव ये मिलता है और उसके हृदय से आवान आती है, कि यही मेरे सद्गुरु हैं, मार्गदर्शक हैं, दूषा है, पिता है, मित्र है और उस क्षण वह उनसे दोका प्राप्त कर पूर्व जन्म में दूटा हुआ सम्बन्ध पुनर्स्यापित कर लेता है। उस क्षण के साथ ही जब सद्गुरु कहते हैं — ‘न्व तेह मम रेह, न्व प्राण मम प्राण, न्व नित्य मम नित्य’; उस महान क्षण में शिष्य अपने देह, मन और प्राण नीनों सद्गुरु के शीरणों में अपित कर देता है। ऐसा विचार शाल दौषित शिष्य अपने बृह, कूल, गोत्र का नाम तो उगार करता ही है, साथ ही स्वयं चेतनायुक्त होकर अपने सद्गुरु के जान का प्रकाश जगते भैं फैलाता है। वही तो सच्चा शिष्य है।

आज गुरुदेव को सिद्धाश्रम पधारे छः, माह अवोत आधा वर्ष बीत गया है। आत्मविश्लेषण का समय आ गया है, कि इन छः महिनों में निष्प्रभृत्य धर्म की बार बार बात करते हैं और जो शिष्य धर्म कर्त्त्यों से भरा है, उनमें से कितने कर्त्त्यों का निवाह किया है।

- प्रत्येक लास ‘संकल्प समर्पण लिखस’ पर जो संकल्प लिए हैं क्या, उन्हें पूरा किया है?
- क्या प्रत्येक शिष्य ने गुरुदेव की प्राणस्थैतना रघसूप ‘मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान’ पश्चिका के प्रचार-प्रसार हेतु बरा, बीस, पचास, सौ बार सदस्य जीड़ी हैं?
- संगठन में ही शक्ति हुती है, अतः क्या आपने अपने स्थान पर गुरु भाइयों के साथ एकत्र होकर एक संगठन बनाया है?
- क्या प्रत्येक सप्ताह पिंडि-विधान में गुरु-पूजन किया है?
- क्या शिष्य साहस्र जो अपने अपनी स्थान पर साधानात्मक शिविर आदीजन वर्षों का जिश्चर्य किया है?
- लिपिर के आष्टाम से शिष्य अपने गुरु को विवक्त कर देता है, कि गुरु उसके स्थान पर पधारे, इसीलिए तो सद्गुरुर्घेष को प्रिय भजन था — ‘गुरुर्पर! तुमसे मिलने का शिविर बहाना है।
- क्या शिष्य कर्त्त्यों की पूर्ति ने गुरु साहित्य मंगधाकर धर्म प्रेमी बधु-मित्रों छत्यादि को देने का प्रयास किया है?
- क्या आपने सद्गुरु के चित्र को प्राप्त कर स्थान स्थान पर लगाने का प्रयास किया है?
- क्या हुए छः महिनों में एक बार भी गुरु साक्षिध्य प्राप्त करने हेतु, पूजनीय लाता जी के दर्शन हेतु जीधपुर, दिल्ली अद्यवा किसी शिविर में गए हैं?
- ये सारे प्रश्न हैं, जिनका उत्तर यहि शिष्य अपना मस्तक झुकाकर हृदय में आकेगा, तो हृदय से ही इसका उत्तर प्राप्त होगा। शिष्य जब योग्य हो जाता है, तो बार-बार गुरु को उसका कान पकड़कर सिखान की आवश्यकता नहीं रहती है। विचार कीजिए, यन्न कीजिए, चिन्नन कीजिए, अपने आपको कभी भी अकेला अनुभव नहीं करें, क्योंकि सद्गुरुदेव तो सर्वेव आपके हृदय में विश्वासन हैं।

श्रीमत्

‘जबवरी’ 99 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान ‘80’

अविरल यात्रा जारी है

संन्यास दिवस समर्पण समारोह का सन्देश —
सम्पूर्ण विश्व से कह दो, कि अब ये कदम डगमगा नहीं सकते

जीवन्त ध्यक्तिव हर समय
आत्मस्वरूप हीत हैं, वे चराचर
जगत में हर स्वरूप में विद्यमान हैं
— यह सिद्ध किया है इस
अविरल यात्रा ने...

जी

वन का अर्थ, निरंतर एक यात्रा में ही सञ्चित होता है तथा यह यात्रा एक शिष्य नितना बाह्य रूप से सम्पन्न करता है उससे कहीं अधिक स्वर्ण के भीतर ही सम्पन्न करनी पड़ती है — इसी मर्म और इसी संदेश से प्रारम्भ हुआ मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल नगर में दो दिवसीय संन्यास दिवस समर्पण समारोह। इस समारोह की आवाना किन्हीं अर्थों में गुरु पूर्णिमा भे यदि अधिक नहीं, तो कम भी नहीं थी, क्योंकि यह परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी को हृदयगत करने का अवसर था, जिनके प्राण सदैव संन्यस्त जीवन में ही बसते रहे हैं। निखय ही शिष्य तो वही हो सकता है जो अपने गुरु की प्रतिकृति सा बना गया हो। जो न केवल ज्ञान में वरन् चेतना में, प्रेम में, तेजस्विता में और गतिशीलता में गुरु की प्रतिविम्बित सा करने लग जाए, वही तो शिष्य हो सकता है तथा इसी को तो अपने शिष्यों के जीवन में सम्पर्क कर देने के लिए, डॉ. नारायण दत्त श्रीमान्नी जी के गृहस्थ आवरण में आगमन हुआ पूज्यपाद सदगुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का।

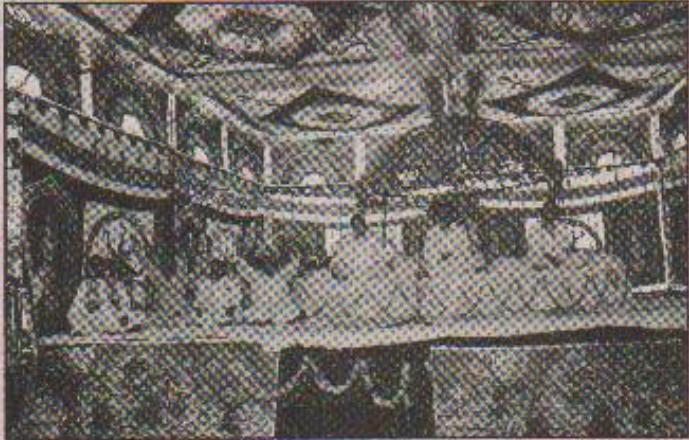
संन्यास भी स्वयं में एक सम्पूर्णता है, संन्यास किसी आवरण में बद्ध जटिलता आश्रित एकाग्री स्थिति नहीं है, इसीलिए पूज्यपाद गुरुदेव ने एक नूनन परम्परा सूनन किया संन्यास दिवस समारोह को सम्पन्न करने के साथ, निससे उनके गृहस्थ शिष्य भी अपने अन्तर्मन को सम्पूर्ण रूप से गुरु चरणों में, गुरुदेव के आत्म के प्रति न्यस्त करने हुए संन्यस्त हो सकें, जो एक संन्यासी की वास्तविक रिति होती है। इसी ज्ञान की अविरल प्रवाहित धारा के क्रम में एक नया आश्रय स्थल अस्तित्व में आया नव पूज्यपाद गुरुदेव श्रीयुत नंदकिशोर योगानी जी ने अपने प्रथम प्रयत्न में स्पष्ट किया, कि वास्तव में अन्तर्मन की यात्रा की सार्थकता तभी है जब किसी भी शिष्य द्वारा ग्रहण किया जा रहा ज्ञान का कोई भी विन्दु उसके परिशोधित मानस का स्पर्श करता हुआ बुद्धि तक इस प्रकार से पहुंचे, कि वह ज्ञान में परिवर्तित हो सके अर्थात् जो इस देहतत्व में आवश्यक है वह यही है कि एक स्वस्थचिन मानस का निर्माण हो सके अन्यथा गुरुमुख से उद्भूत ज्ञान का कोई भी विन्दु अपने लक्ष्य तक पहुंचते पहुंचते विकृत हो दी जाएगा।

जहाँ

पूज्यपाद गुरुदेव की निरंतर मृद्धम उपस्थिति हो, गुरु परिवार की साक्षात् उपस्थिति ही तथा सम्पूर्ण मारत वर्ष में स्वाशक साधिकाओं

पूज्यपाद गुरुदेव की इन्तिहीन उपस्थिति में
भेजे गए लकड़ी लकड़ी शान्ति को शान्ति को शान्ति को
दुर्जने तो शान्ति को शान्ति को शान्ति को शान्ति को
मैंने तो शान्ति को शान्ति को शान्ति को शान्ति को

“जनवरी” 99 मत्र-तत्र-यत्र विज्ञान ‘81’



के कृप में आए शिष्य परिवार की उपस्थिति हो वहाँ एक उत्सव तो स्वयमेव सृजित होने लग जाता है, किन्तु गुरुदेव की दृष्टि में उत्सव की धारणा तब तक अपूर्ण है जब तक वह एक स्थायी घटना बनकर प्रत्येक शिष्य के हृदय में न उत्तर जाए और इसी अभाव को पूर्ण करता पूज्यपाद गुरुदेव श्रीयुत अरविन्द श्रीमाली जी के श्रोमुख से निभूत एक-एक वाक्य किसी उत्सव में स्थापित एक-एक नोरण द्वारा सा बनता भ्रतीक हो रहा था जिनसे प्रविष्ट होकर कोई भी शिष्य उत्सव के मूल स्थान तक पहुंच सकता है। पूज्यपाद गुरुदेव श्रीयुत वैद्याश्रावण श्रीमाली जी के मुखमंडल

पर प्रवचन के क्षणों में आ रहे एक-एक माव स्पष्ट सुचित कर रहे थे, फिर वे एक ऐसी आनुरता में हैं कि इन्हीं दो दिनों में शिष्यों को भया कुछ प्रदान कर दें, एक प्रकार से कहे तो भया लुटा सा है क्योंकि जहाँ शिष्य का उत्सव गुरु चरणों में उपस्थित होने से सृजित हो जाता है वहाँ गुरुदेव वह उत्सव तो तब सृजित होता है जब उनका शिष्य बनावटी रूप में नहीं बरून अन्तर्भूत की उस स्थित के साथ उनके सम्मुख आता है, जो सूर्य रश्मि की भाँति सारे कोहर के बेहती हुई आ रही हो।

जीवन में विष है, विषाह है, अमाव है, पांडा है, किन्तु उससे जीवन की गति अब्दी भूमित हो? — वहाँ तो भन्यास दिवस की गूल भावना है, जिसे पृथु करने के लिए इस दो दिवसीय समारोह का आयोजन किया गया था। नैराश्य के दुःखहा आवरण और प्रत्येक प्रकार के आवरण विदीर्ण हो सके, पूज्यपाद गुरुदेव श्री युत नंदकिशोर श्रीमाली जी के प्रत्येक वाक्य से यही भौदेश प्रतिष्ठित हो रहा था। पूज्यपाद गुरुदेव के श्री मुख से निभूत एक-एक वाक्य उन आगृह बिन्दु के गमान था जो विद्युष वित्त पर टकरा कर उसकी दाढ़कता को शोत करता जा रहा था। उन वाक्यों में निहिन जान के आरोह- अवरोह, सार भूत तत्त्व चिन विद्यपि यज्ञण तो कर रहा था किन्तु उस निःस्तरध वानावरण में जो मृक मूर्तियाँ हो रही थीं वह मात्र एक वाक्य का ही था तु मेरा है, तु मेरा है और अश्रुओं की झिलमिलाती लहरों के पीछे जो दिख रहा था वह पूज्य गुरु निर्मुति के आवरण में पूज्यपाद गुरुदेव परमाहस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का हो तो स्वरूप था।

अपने प्रचंड और तेजस्वी स्वरूप में यदि गुरुदेव परमहस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी मुखरित हो रहे थे पूज्यपाद गुरुदेव श्रीयुत नंदकिशोर श्रीमाली जी के स्वरूप में तो वहाँ अपने ज्ञानमय शांत स्वरूप में विद्यमान थे पूज्यपाद गुरुदेव श्रीयुत कैलाश चंद्र श्रीमाली जी के स्वरूप में तथा ओजयुक्त मंदस्थित पूज्यपाद गुरुदेव श्रीयुत अरविन्द श्रीमाली जी पूर्ण पुरुषोचित सौन्दर्य की जीवित जाग्रत धारणा को समस्त उपस्थित शिष्यों में स्पन्दित, वितरित करने का एक हेतु बन गए थे।

पूज्य गुरु निर्मुति की ओजस्वी वाणी में उद्भूत जान के अनेक पक्ष आङ्गियों के रोटस के गाध्यम से डब एक ऐसी धोड़र के रूप में परिवर्तित हो चुके हैं जो केवल इस समारोह में उपस्थित शिष्यों को ही नहीं भविष्य में आने वाली पीड़ियों को भी दिशा निर्देश का कार्य करेंगे और जो इस तत्त्व का समावृत्त प्रमाण है कि गुरु का अर्थ जान की निरंतर प्रवाहित एक स्वच्छ अविन्द धारा से होता है... और शायद इन कैरोटस के माध्यम से उन लोगों को भी कुछ येतना मिल सके जो गुरु का अर्थ देह विशेष नक हों सींगित कर या तो अपनी ही शुद्धि के अगीर्ण में दुर्गन्धयुक्त हो चुके हैं या अवस्था ग्रस्त होकर अपनी गति को स्तम्भित कर चुके हैं।

पूज्यपाद गुरुदेव श्री अरविन्द जी एवं भी वैद्याश्रावण जी ने साधकों पर किसी कर्मकांड का भार न लोडते हुए, उस मार को स्वयं बहन करते हुए उन्हें भाज्योदय दीक्षा, कायाकल्प दीक्षा, धोड़शी त्रिपुर सुंदरी दीक्षा तथा त्रिमेत्र जागरण दीक्षा जैसी उच्चकोटि की दुर्लभ दीक्षाएं प्रदान की।

इन रिषिवर के शेष आयोजन को वेष्यकर वह प्रमाणित हो गया, कि श्री अरविन्द सिंह, डॉ. साधना सिंह, श्री धर्म खेतान, इन्दीर के श्री विजय गुप्ता इस भूस्त्रा के ऐसे नीति के पर्याप्त बन चुके हैं, जिनके संयोजन में धर्मिय में पूर्ण प्रदेश में इसने भी अधिक विस्तार में संस्कारण कार्य संपन्न होगे। श्री गुरु सेवक जी ने स्वदेव की भाँति भय संचालन का कार्य दक्षता पूर्वक संग्राल रखा था। जहाँ समस्त

तो यह नि
अश्रुपरित
का काफि
पुष्प वर्षा
12:00 ब

पर बोडर
था, तो अ
में स्थित
लेकर आ
मार्केट
में स्थापि
को चौर ते

भगवान नि
कि आज
को सद्गु
सिद्धाश्रम
जहाँ कम
समय एक

उन सभी
के साथ

अविरल
शिविर।

ज्ञानित
डोन
प्रेसव
व वह
य के
र की
विन्द
एक
एक
मनसे
मूल
रुद्धव
मंडल
व्या
नाता
मुख
प की
त्यक
उद्धा
सकी
गथा
की
द जी
रुद्धव
रुद्धव
चंद्र
वित
रुप
काय
और
पनी
र को
शोटि
न्दौर
नार
पर्सन



शास्त्रोत्त पूजन ऋम, पूज्यगाद गुरुदेव के वरिष्ठ शिष्य डॉ. सम चैतन्य शास्त्री जी के द्वारा भम्मादिन हुए वहाँ श्री शेलेश कुमार के नेतृत्व में गुरुद्याम दिल्ली से गई टीम के द्वारा पुस्तक, कैमेंटरी, नाधना सामग्री इन्वाइट के रूपाल कर कार्य सुनिश्चित से सम्पन्न हो सका। अपने नित्य के कार्य से अवकाश लेकर अम्बाला के श्री रामेश जी एवं श्री पांड जी, श्री मिश्रा जी, डॉ० यावत तथा रावत जी स्वित्र रहे। गोपाल महानगर के महापीर एवं पूज्यगाद गुरुदेव के शिष्य श्री उमांगकर गुप्ता जी की इस समारोह में उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।

मोपाल शिविर तो एक पड़ाव था, महायात्रा का जो जोधपुर से प्रारम्भ होकर ओकारेश्वर की ओर अग्रसर थी। शिष्यों का तो यह निश्चित मानना है, कि जोधपुर भी न्योतिलिंग ही है, सदगुरुदेव ने जैसी इच्छा व्यक्त की थी, उसी इच्छा के अनुरूप अशुपुरित मावांजलि देते हुए 'नय निखिलेश्वर, नय गुरुदेव' के दिव्य धोष के साथ 8.11.98 को प्रातः 4:00 बजे कारों और बसों का काफिला मोपाल से ओकारेश्वर की ओर प्रारम्भ हुआ। जिस गाड़ी में पूज्य गुरुदेव विराजमान थे, उस गाड़ी के आगे शिष्य पृथ्य वर्षा हो करते रहे। स्थान स्थान पर शिष्यों-साधकों ने गाड़ीयां रोक कर पूजन और आरती सम्पन्न की ओर उसी दिन मध्याह्न 12:00 बजे ओकारेश्वर पहुंचे।

यह वह स्थान है, जहाँ पूज्य गुरुदेव सन् 90 में गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर पधारे थे। ओकारेश्वर में नर्मदा के नागर घाट पर बोडशोपचार पूजन सम्पन्न हुआ। निधर निशाह जानी थी, उधर पीताम्बरधारी शिष्य ही नजर आ रहे थे। जब पूजन क्रम चल रहा था, तो आकाश में से जिन मौसम हल्की-हल्की रिम-झिम प्रारम्भ हुई और यह क्रम चल मिट रहा। ऐसा अनुभव हुआ, कि गगन मण्डल में स्थित सारे देवी देवता उन्हे वसुण देव के माध्यम से अपनी अश्रु अद्भुत जलि अर्पित कर रहे हैं। तदनन्तर सदगुरुदेव के दिव्य पृथ्य लेकर श्री नन्दकिशोर जी गवे श्री अरविन्द जी नाव में बैठ कर नदी की धारा के मध्य में स्थित मार्कण्डेय शिळा पर गए, जिस स्थान पर मार्कण्डेय ऋषि ने तपस्या की थी। वहाँ वे दिव्यांश भगवान शिव को, मां नर्मदा को अर्पित कर दिए। नमदिश्वर स्वरूप सदगुरुदेव नर्मदा में स्थापित हो गए और पूरा बायुमण्डल सदगुरुदेव की नय-नयकार से गुजरित था। यह अनुपम दृश्य मत्त्य एवं विराट होते हुए भी छह दिन की चौर देने वाला था।

सायंकाल की गुरुदेव श्री नन्दकिशोर जी एवं श्री अरविन्द जी ओकारेश्वर न्योतिलिंग मन्दिर में गए और वहाँ ओकारेश्वर मगवान शिव का अभिषेक किया। मन्दिर के प्रधान पुगारी ने अपनी पोशा निकाली, उस पोशा में पूज्य सदगुरुदेव के हाथ से अकित था, कि आज मैंने अपनी पत्नी और परिवार सहित शिवाभिषेक सम्पन्न किया और वह तिथि थी - 3.7.90। और ठीक आठ वर्ष बाद 3.7.98 को सदगुरुदेव ने अपनी पंचमूलात्मक देह का त्याग कर दिया। ऐसा लगता है मानो सदगुरुदेव ने 3.7.90 की ही निश्चित कर लिया था, कि सिद्धांश्म गमन करना है। उस स्थान की दीर्घन किए जाने भगवत् गोकिन्दपादाचार्य ने शंकराचार्य को दीक्षा प्रदान की थी। उस गुफा में जहाँ कमर भर पानी है, 3.7.90 को गुरुदेव ने अपने शिष्यों को शक्तिपात्र दीक्षा प्रदान की थी, स्वयं कमर तक जल में खड़े होकर और उस समय एक-दो नहीं सीकड़ों शिष्यों ने शक्तिपात्र दीक्षा प्राप्त की थी।

ओकारेश्वर में आस-पास के वे सभी शिष्य उपस्थित थे, निन्होंने सन् 90 की गुरु पूर्णिमा पर सदगुरुदेव का पूजन किया था। उन सभी शिष्य-शिष्याओं ने इस आयोजन में श्री कार्य किया। छर शिष्य प्राण प्राण से, पूर्ण समर्पण माव से आगे थे, उन सब शिष्यों के साथ संयोजन किया गया अरुण मोरानिया और वीनू यावत ने।

वास्तव में जहाँ गुरु शब्द का उच्चारण हो, वहाँ योई विसर्जन नहीं वरन् क्रेतन वृत्तन ही होता है। सृजन की यह यात्रा अविरल चलती ही रहेगी और इसी का अगला पड़ाव होगा महाशिवराच, नवरात्रि एवं गुरु नन्मोत्सव के मध्य साधनात्मक शिविर।

स्थानिक शिविर पुर्वं दीक्षा समाप्ति

एक दृष्टि में:

1 जनवरी 99

दिल्ली

बहुम वर्चस्त शिव्याभिषेक दीक्षा शिविर
शिविर स्थल - नारायण ग्रामीण पीठ, 'आदोग्य धाम', बुजुर्ग
एपार्टमेंट के पीछे, जोड एवं 4/5 पीतमपुरा
♦ आयोजक : गुरु नवा पाणी
फोन : 011-7182248, 7196700, 7029044, 7029045

10 जनवरी 99

वाराणी

महाकाल युक्त प्रचंड बगलामुखी
साधना एवं दीक्षा समाप्ति
शिविर स्थल - चंद्र पुष्पा छाल, लेलगाड होड, इमदाबाद
बगड, वारी

- श्री देवेन्द्र पचाल, उदवाळा 02638-70249, • श्री पी. जे. पटेल, सिलवासा, 02638-42403 • श्री रमेश पाटिल, नवसारी 02637-53188 • श्री शशिकांत देसाई, वारी 23444 • श्री अखिलेश जनावरन सिंह, वारी 21587.
- श्री निकिल भारद्वाज, वारी 39759, • हेमन्त देसाई, परिया 02638-77284, • श्री संजय देसाई, परिया 02638-77201, • श्री रमेश प्रजापति 02632-46738 • श्री सुन्दरेश अध्यक्ष 079-5506630, 5506476

14-15 जनवरी 99

हलाहाल

पूर्णत्व त्रिवृणमयी शिवत्व साधना शिविर
शिविर स्थल - खंडम जेला स्टल, जल्ली लड़क,
बांध के बीच, उत्तरी पट्टी

- श्री एस. के. पिंडा, इलाहाबाद 0532-501551 • डॉ. प्रमोद कुमार यादव, 0532-632229 • श्री राजकुमार वैश्य 0532-645145 • श्री शशीकांत अय्यवाल, 0532-851417
- श्री ओम प्रकाश • श्री हेमसिंह 0532-632160 • श्री बुदन सिंह • श्री ज्ञानवन्द जायसवाल • श्री ए. के. शर्मा

30-31 जनवरी 99

पटना

यिच्छन विनायक नगरपालि ननुमान साधना शिविर
शिविर स्थल - मिलट हाई ट्रूल मैदान, विद्रवन्द पटेल पथ
• श्री अनिल कुमार, पटना, 0612-367020 • श्री राजीय करु, पटना 0612-232664 • श्री इश्वर शरण सिन्हा • श्री कृष्ण मोहन सिन्हा 0612-856624 • डॉ. कृष्ण मोहन प्रसाद 0612-671494 • श्री वी. के. आर्या 0612-669352 • श्री हरीशचन्द्र वट 0612-232664 • श्री. आर. एन. सिंह 0612-674592

13-14 फरवरी 99

ब्रह्मपुरी; चन्दपुर

शिव त्रिवृणमयी शिविर

शिविर स्थल - बैवजाहाई हिंतकरिणी महाविद्यालय मैदान, ब्रह्मपुरी। (ब्रह्मपुरी से 125 किलोमीटर दूर)

- श्री सुधीर कृष्णराव सेलोकर, ब्रह्मपुरी 07177-72328
- श्री भास्कर कार, ब्रह्मपुरी 07177-72372, • श्री

किश्चा माईक, ब्रह्मपुरी 07177-72412 • श्री बंडमाल बागरे, ब्रह्मपुरी 07177-72471 • श्री राजु प्रधान, नागपुर, 0712-760657 • श्री एन आर निनावे, नागपुर, 0712-750628 • श्री राहेकर साहेब, गडधिरोली, 07132-32328 • श्री मनीष श्रीवाराय, 07177-72328, 72513 • श्री दादाजी नवलाम्बे, 07177-72243 • श्री केशव मने, गडधिरोली, 07132-22443 • श्री एड हमलता पवित्रा, नागपुर, 0712-741949 • श्री तुलसी राम जेंगरे, नाजुरा • श्री दिलीप देशमुख, कुरखडा, 07137-45453 • श्री वसंत पाटिल, पुणे, 0212-359047

20-21 फरवरी 99

बिलासपुर

सद्गुरु समर्पण एवं
जीवन शिद्धि साधना शिविर
शिविर स्थल - शृंगिदा विहार, बूतब चौक, सदकबडा
• श्री आर. सी. सिंह, जांजीर, वारा, 07818-33234, 33343 • श्री जी. मदटबहरे, ओमनगर, बिलासपुर • श्री एस. वी. नेवार, कोरवा, 07759-24430 • श्री रघु श्याम साह, जांजीर 07817-42799 • श्री एल. पी. श्रीवास्तव • श्री आर. के सोनी

28 फरवरी-1 मार्च 99

जोधपुर

होलिका शिद्धि साधना शिविर
शिविर स्थल - गुरुदाम, जोधपुर
मंत्र-तंत्र-यत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342 001, फोन 0291-432209

आठवाहाई

ज्ञापकी यह शिव विज्ञान 'मंत्र-तंत्र-यत्र विज्ञान' दो महीने आग्रेन गतिशील होती है, अर्थात् यह अब जनवरी का है, तो इसमें नार्च सामने की साधनाएँ व प्रयोग दिये जाते हैं ऐसा क्यों? इसलिए कि जायनामों के लिए यत्र उपकरण आदि की अवश्यकता होती है, जो जल सिद्ध हो, प्रारम्भन सूक्ष्म हो। ज्ञापकी खुशियों के लिए पीस्कार्ह पवित्रों ने जायनाम होता है, जिस पर कोई छाक यथा नहीं देना होता। यह सीढ़ी से रहते हैं और दिलच देता रहता है, जिस डबलटी में इन रेत टाइम पर पोस्टकार्ड भेजते हैं जो समय पर नहीं पहुँच पाता और आप उस दृश्य सामना से बचते रह जाते हैं। यहोकि आपका पोस्टर्टार्ड डम तक पहुँचने में 15-20 दिन जा सकते लगा जाता है, जिस तुरकील पैकेज या बैगने में 7-8 दिन का समय लगता है तथा आप तक की पैदी पर दृश्यों में 20-25 दिन लगा जाता है, इस सारी प्रक्रिया में 50-55 दिन अर्थात् दो महीने लगा जाता है, कलस्कलप 'यैल्स' से पोस्टकार्ड भेजने से यह जायना मुहूर्त निकल जाता है और उस जायना से आप दिलच रह जाते हैं।

दृष्टिएः यदि आपको कैंक से तीन सिद्ध जायनी मानी है तो दैना शाव-द्यूत किंवदं तुरन्त पोस्टकार्ड भर कर सेज देना चाहिए जिससे कि समय पर जायनी प्राप्त हो सके। खुशिया आप जेहुज टेलीफोन न - 0291-432209 अथवा टेलीफोन न 0291-432010 से श्री रामप्री क अद्देश दे सकते हैं।

ग्रन्ति - आप खुशियों या दीया ले जायनित जायनी ग्राहक 'मंत्र तंत्र यत्र' के नाम से ही होती है। यही आप 60 रु. से कम की जायनी नापते हैं तो आप सभी युक्त ज्ञाप 20 रु. वी. पी. रुक्त जोड़ कर बनायी आयिए गज दे।



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

By
Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server!]

